Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म् वयं जयेम (ऋक्०)

तपोभूमि

(वैदिक परिवारों का लोकप्रिय मासिक)

सत्याऽमृत

हिरण्मयेन पात्रेण,
सत्यस्याऽपिहितं मुखम् ।
तत्वं पूषका पावृणु,
सत्य धर्माय दृष्टये ।।

– ईशोपनिषद् ।१७

पद्यानुवाद

जन्म जन्मातर भटकता मैं रहा,
रूप लौ पर बन शलभ मरता रहा ।
सत्य-दर्शन मैं न प्रियतम कर सका,
भव्य स्वर्णिम पात्र से, वह है ढका ।।
सत्य ही सौन्दर्य शाश्वत धर्म है,
सत्य विभु का कर्म, जग का मर्म है ।
देव पूषन् ! आवरण अब लो हटा,
देख लें प्यासे नयन उसकी छटा ।।

व ३८
अंक ११

स्वामी सत्यानन्द संस्मरणाङ्क

दिसम्बर' ९१
मार्गशीर्ष २०४८

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पादकीय—

स्वामी सत्यानंद जन्म शताब्दी

पूज्य स्वामीजी हम सबके – हमारे आश्रम परिवार के गुरुदेव थे। सैकड़ों-सहस्रों व्यक्तियों ने उनसे प्रेरणा ली। उनके पास त्याग-तप और वेदमय जीवन था, सदाचार था ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त, माँ भारती और आर्यसमाज के आदर्श सपूत थे, वे। एक सच्चे आर्य के रूप में थे स्वतन्त्रता संग्राम में जूझे, हैदराबाद सत्याग्रह एवं हिन्दी रक्षा आन्दोलन में जेलों में रहे। महिला विद्यापीठ भुसावर, श्री विरजानन्द वैदिक साधनाश्रम मथुरा, वेद मन्दिर कैलादेवी तथा इनकी प्रवृत्तियों के संस्थापक एवं प्रेरक रहे।

आयें, **माघ शु० ३ से ५ बसन्त पञ्चमी** (७ से ९ **फरवरी**'९२) **में वेद मन्दिर, मथुरा पर आयोजित ऐसे देव पुरुष की जन्म शताब्दी** में सपरिवार सोत्साह भाग लेकर उनके चरणों में कृतज्ञता प्रकाशित करें, उनके आदर्श जीवन से प्रेरणा ले कर्त्तव्य पथ पर आगे बढ़ने रहने का वासन्ती सत्संकल्प लें। वसन्त के नवोत्साह की भांति हमारी सभी योजनाओं और कार्यक्रमों में नई प्राणवत्ता आये और हमारे वयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक राष्ट्रीय और वैश्व जीवन में नई चेतना जागे। पुराने पत्तों को झड़ने दें, नई कोपलें विकसित होने दें। परस्पर की, पुरानी भूलों को दुहरायें नहीं और अपने पारस्परिक सम्बन्धों और सामाजिक जीवन में बासन्ती माधुर्य भर दें। प्रभु देव, हमें अपेक्षित शक्ति-भक्ति दे।

इस अंक के सम्पादन में स्वामीजी की ज्येष्ठ पुत्री मान्या बहिन सत्यवतीजी स्नातिका का विशेष योगदान रहा है। 'एक अमर ज्योति' शीर्षक विस्तृत लेख तो पू० स्वामीजी की डायरियों से उन्होंने ही लिखा है। संस्मरण 'तपोभूमि' के जनवरी' ६४ के अंक से लिये गये हैं। उनमें से अधिकांश सज्जन अब नहीं रहे। पर उनकी यादें आज भी उतनी ही प्रेरणा प्रद हैं। विश्वास है, हमारा 'तपोभूमि परिवार' इनसे नवीन प्रेरणा ले आत्म निर्माण पूर्वक 'शताब्दी समारोह' को तन-मन-धन से सफल बनाने में सहभागी बनेगा।

इसी आशा के साथ, आपका अपना ही—प्रेमभिक्षुः (आचार्य)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म् । वयं जयेम त्वया युजा (ऋक्)

[वैदिक परिवारों का लोकप्रिय मासिक पत्र]

वर्ष ३८	दिसम्बर, १९९१ : मार्गशीर्ष, २०४८	वा० शु० २०)
अङ्क ११	सृष्टि संवत्सर १९७२९४९०९२	होता शु० ३०)

स्वामी सत्यानन्द सप्तक

—आचार्य प्रेमभिक्षु: (ईश्वरीप्रसाद 'प्रेम')

वेद धर्म के यश, गौरव-गाथा के गायक ।
आर्य राष्ट्र के भूषण, पूषण वीर विनायक ।।
पुरुषाओं की अमर कीर्ति के शुभ्र विधायक ।
आर्य जातिके नीति-रीति रथके प्रिय पायक ।।
प्रिय स्वराष्ट्र-भव-सिन्धु हित तुम पतवार प्रवीण थे ।
आर्य जाति इतिहास के एक पृष्ठ प्राचीन थे ।। १ ।।
राजस्थानी पुण्य क्षेत्र के तुम उजियारे ।
बल्लभगढ़ के शुभ तड़ाग में किरण प्रसारे ।।
अनय और अज्ञान-निशा के पटल-विनाशक ।
पावन पुण्य प्रकाश, सुधारक, अटल विचारक ।।
अमल-कमल से नित्य ही, भाव-सुमन खिलते रहे ।
भावुक जन अलिवृन्द से आनन्दी मिलते रहे ।। २ ।।
सत्य धर्म शुचि-स्रोत हृदय में था उमड़ाया ।
'आर्य मित्र मण्डल' का था शुभ बीज उगाया ।।

स्वामी सत्यानन्द संस्मरण अङ्क

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रात्रि पाठशाला, विद्यालय-वृक्ष लगाया ।
'भाग्य नगर' का भाग्य सुप्त था, उसे जगाया ।।
हिन्दी सत्याग्रह वीण के मंजुल मधुमय तार थे ।
'परिषद्-प्रजा, भरतपुर' की, तुम व्यापक झंकार थे ।। ३ ।।
सत्यमूर्ति, हे सत्यकाम, हे सत्य-भावमय !
सत्य तुम्हें था प्राणाधिक प्रिय, हे सत्यप्रिय !!
मित्र 'शान्तिप्रिय', 'विश्वप्रिय' थे और 'कर्मप्रिय'
अमर 'सत्य' संगीत गा रहा है तव जय-जय ।।
महिला विद्यापीठ के संस्थापक हे धीरवर ।
युग-युग गाई जायगी, तव प्रताप-गाथा अमर ।। ४ ।।
गुरुकुल शिक्षा धारा के हे सबल समर्थक ।
पुत्र-पुत्रियाँ शिक्षित कर आदर्श निदर्शक ।।
पशुबलि – पापाचार – निरोधक - दल - संचालक ।
'दयानन्द' प्रति 'श्रद्धा' के सानन्द समर्पक ।।
मूक साधनाव्रती सन्त ! गुण गा गा वाणी मौन है ।
देख 'वेद मन्दिर' न ऋणी जो, कहो आर्यजन कौन है ? ५ ।।
नहीं मिलेगा कभी तुम्हारा भौतिक दर्शन ।
नहीं मिलेगा कभी प्रत्यक्ष में मार्ग प्रदर्शन ।।
किन्तु तुम्हारी भाव पूर्ण यह धवल धरोहर—
हम सबके हित आश्वासन तव 'सत्य प्रकाशन'
वैचारिक रथ-प्रगति का प्रगतिशील सत्येन्द्र है ।
'आश्रम विरजानन्द गुरु' सब का ज्योतिष्केन्द्र है ।। ६ ।।
आदर्शों के शुभ स्रष्टा ! हे दृढ़ सेनानी !!
'चरैवैति' का पाठ दिया हे ज्ञानी, ध्यानी !!!
मथुरा से माधोपुर तक यह मंजुल माला ।
युग-युगान्त तक दे, धरणी को नव उजियाला ।।
विश्व-वाटिका में रहे प्रसरित सुरभि ललाम है ।
सद्गुरु सत्यानन्द ! को श्रद्धायुक्त प्रणाम है ।। ७ ।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

...वह ज्योतित ध्रुवतारा !

—आचार्य प्रेमभिक्षुः (ईश्वरीप्रसाद 'प्रेम')

सदा बचाता दिग्भ्रम से था, वह ज्योतित ध्रुवतारा।
उसकी जन्म-शताब्दि मनाता, यह आश्रम-कुल' सारा ॥
पाप-ताप के आगे बढ़-बढ़ जिसने छाती तानी।
त्याग और बलिदान बन गये, जिसकी अमर कहानी ॥
जालिम राजों की संगीनों को था, जिसने मोड़ा।
और निजाम के लौहदुर्ग का, दर था जिसने फोड़ा ॥
आर्य धर्म के विमल वंश का था जो सजग सहारा ॥ १ ॥

नहीं लेखनी धनी, न थी कुछ ओजस्वी ही वाणी।
जन-जन जीवन-ज्योति बन गई, तव श्रद्धा कल्याणी ॥
दयानन्द के स्वप्न अधूरे, पाकर तुम्हें निहाल हो गये।
श्रद्धानन्द की शुभ्र भावना के सपने साकार हो गये ॥
देश धर्म-रक्षा का पावन असिधारा-व्रत धारा ॥ २ ॥

पाकर तव संस्पर्श न जाने कितने जीवन स्वर्ण बन गये।
वह पारस ! जिसकी गरिमासे पातक-पुंज विवर्ण बन गये ॥
छोड़ा लघु परिवार बसाया एक वृहद् परिवार अनूठा।
मरुभूमि के अन्तराल से प्रेम-स्रोत अभिनव था फूटा !
कर्मयोग के भाष्यकार नव, बना श्रेय ही प्रेय तुम्हारा ॥ ३ ॥

तुम आदर्श गृहस्थ, वनस्थी, परिव्राट् सच्चे संन्यासी।
वर्णाश्रम सद्धर्म-सुपोषक, जीवन कला-विज्ञ, अभ्यासी ॥
उत्कट देशभक्त, प्रिय नेतः, हे यतिवर, सद्गुरु सुखराशी।
'सत्य' तुम्हारा जप तप साधन, ईश-'प्रेम' पावन प्रत्याशी ॥
अमर रहेगा युग-युग तक, जीवन-आंदर्श तुम्हारा ॥ ४ ॥

मानव की पूजा कौन करे ? मानवता पूजी जाती है।
साधक की पूजा कौन करे ? साधकता पूजी जाती है ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म्

स्वामी सत्यानन्द-एक अमर ज्योति

बाल्यावस्था - स्वनाम धन्य श्री महाराज जी का जन्म राजस्थान के पूर्वाञ्चल भरतपुर राज्यान्तर्गत बल्लभगढ़ नामक ग्राम के ज्येष्ठ शुक्ला ९ संवत् १९४८ सोमवार प्रातः १० बजे एक सम्भ्रान्त वैश्य परिवार में श्री भैरोंलालजी [स्वामीजी के शब्दों में श्री भयहरण लालजी] के यहां हुआ था। स्वामीजी के श्री गेंदालाल जी व नानिगराम जी नामक दो बड़े भाई और थे। जन्म से पूर्व ही पितृदेव की छत्रच्छायासे वञ्चित यह बालक अपनी सहृदया स्नेह शीला माता एवं अपने पूज्य काकाजी श्री मूलचन्दजी के संरक्षण में बढ़ने लगा। आपके बचपन का नाम आपकी हरिभक्ता माता ने "हरिहेत लाल" रखा। आपकी माताजी अतिदयालु भगवद् भक्त मृदुभाषिणी एवं सरल स्वभाव की थीं। उनके अन्दर दीनों के प्रति दया प्रेम और करुणा के भाव कूट-कूट कर भरे थे। अन्न और बस्त्र का कोई भी याचक उनके द्वार से विमुख नहीं लौटता था। वृद्धों व अपाहिजों को नाना प्रकार के सुस्वादु भोजन कराने में उन्हें बहुत आनन्द आता था। वे प्रायः हर समय ईश भक्ति में लीन रहतीं तथा व्रत उपवास किया करतीं थीं। स्वामीजी को दीनों से प्रेम, ईश्वर में श्रद्धा तथा सत्य पर अटल विश्वास आदि गुण मानो माँ से विरासत में मिले थे। बचपन में भी जब सर्दी के दिनों में घर में लड्डू बनते और सभी को प्रातराश में मिलते स्वामीजी उन्हें भी स्वयं न खाकर अपने गरीब साथियों को बांट दिया करते थे। पूछे जाने पर सहज भाव से उत्तर देते कि मेरे हिस्से के लड्डू मैं स्वयं खाऊँ या दूसरों को खिलाऊँ। इसी प्रकार की अनेक घटनायें उनके जीवन में आगे भी देखने को मिलेगी।

स्वामीजी के पिताजी श्री भैंरों लालजी २८ वर्ष की छोटी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आयु में ही दिवंगत होगये थे उनके स्वर्गवास के ५ मास बाद स्वामीजी का जन्म हुआ था। स्वामीजी के पिताजी भी बड़े ईश्वर भक्तएवं दयालु स्वभाव के थे। उनकी मृत्यु काल का दृश्य भी उल्लेखनीय है जैसे ही उन्हें यह ज्ञान हुआ कि मेरा अन्तिम समय आगया है उन्होंने तैयारी आरम्भ कर दी। गरीबों को लड्डूओं के अन्दर पैसे रखवा कर बँटवाये। जमीन धुलवाकर विस्तर जमीन में लगवाया। सबको बुलाया प्रेम पूर्वक बातें करते रहे फिर बोले अब मैं जाता हूँ। बागों में जाकर भजन करूँगा मेरे भजन का सामान यानी आसन माला लोटा रस्सी दो अब में जाता हूँ यह कह कर ईश स्मरण करते हुये प्राण त्याग दिये।

इसी प्रकार स्वामीजी की माताजी पढ़ी लिखी ना होते हुये भी सभी सात्विकी गुणों से ओत प्रोत थी। जिस दिन उनकी मृत्यु हुई प्रातः चचेरे भ्राता श्री दुर्गाप्रसादजी बाहर जाने लगे तो उनसे कहने लगी कि तुम आज बाहर मत जाओ, नहीं तो मुझे आकर नहीं देख सकोगे, भाई दुर्गाप्रसादजी ने उनकी बात पर ध्यान नहीं दिया और अन्तिम समय उन से ना मिलने का उन्हें बड़ा पश्चात्ताप रहा। इसके अतिरिक्त उन्होंने अपनी सम्पत्ति को कई मास पूर्व अपने पुत्रों में समान विभक्त कर दिया था। मरने से पूर्व सभी से कहा कि जल्दी भोजन करलो, भोजन के उपरान्त कमरा धुलवाया विस्तर बिछवाया। सभी परिजनों व पड़ोसियों को बुलाया सबको प्रेम पूर्वक रहने का उपदेश दिया। साथ ही उन्होंने दो महिलाओं के पास २) २) बतलाये पर लेने से इन्कार कर दिया। और कहा कि मैंने तुम्हें यह इसलिये बतलाया कि ऐसा सुनते हैं मरते समय यदि किसी में वासना जाती है तो उसकी पूर्ति के लिये जन्म लेना पड़ता है में नहीं चाहती मेरे साथ कोई वासना जावे। फिर थोड़ा दही पेड़ा खाकर गंगा जल पीया और ईश्वर स्मरण करती हुई शान्त होगईं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वामीजी के पूज्य काकाजी श्री मूलचन्दजी ने अपने ५ पुत्रों वं ३ पुत्रियाँ का तथा अपने ज्येष्ठ भ्राता श्री भैंरोंलालजी के ३ पुत्रों का लालन पालन बिना किसी भेद भाव के किया। इसी प्रकार स्वामीजी ने भी अपने भाई की एक पुत्री तथा अपने ३ पुत्र व २ पुत्रियों को भी यही उपदेश दिया कि तुम ३ भाई व ३ बहिनें भी हम तीनों भाइयों की सन्तान हो ऐसा माना करो।

स्वामीजी के काकाजी के ५ पुत्र हुये जिनके नाम क्रमशः इस प्रकार हैं स्व श्री दुर्गाप्रसादजी, स्व श्री अजीरामजी, श्री पूरनचन्दजी, श्री मदन मोहनजी व श्री रघुनन्दनजी, स्व श्री अजीरामजी वर्षो तक खेडली गंज (अलवर) की नगर पालिका के चैयर मैंन रहे व खेडली की प्रगति में उनका विशेष योग दान रहा। ज़नता उन्हें खेडली के बापू कहा करती थी। और उनके स्वर्गवास होने पर भी भी यह भाव व्यक्त किये कि आज खेडली अनाथ होगई कोई दीन दुखियों की पुकार सुनने वाला नहीं रहा। उनकी स्मृति में खेडली निवासियों ने स्मारक भी बनबाया श्री महिला विद्या पीठ भुसावर के भवन निर्माण के कार्य में उन्होंने अथक परिश्रम किया।

इस प्रकार श्री अजीरामजी का समस्त जीवन परोपकार में व्यतीत हुआ अब भी उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री ब्रह्म प्रकाशजी जनता कालौनी व सेठी कालौनी जयपुर में आर्यसमाज के प्रचार प्रसार के लिये सतत परिश्रम कर रहे हैं।

स्वामीजी के ऊपर उनके काकाजी का विशेष स्नेह था प्रति दिन रात्रिको सोने से पहले स्वामीजी उनके चरण दवाया करते थे। उस समय उन्होंने स्वामीजी को जीवनोपयोगी अनेक उपदेश दिये जिनको स्वामीजी ने जीवनभर पालन किया सभी चचेरे भाई भी स्वामीजी का विशेष सम्मान करते थे। घर में सभी कार्य परस्पर सभी के सहयोग से होते थे जिसके फलस्वरूप स्वामीजी को आर्य समाज के कार्य में व अपनी आत्मिक उन्नति में गृहस्थ सम्बन्धी किसी कार्य के कारण कभी वाधा उपस्थित नहीं हुई।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शिक्षा

स्वामी जी ने बल्लभगढ़ व भुसावर में चतुर्थ श्रेणी तक शिक्षा प्राप्त की थी वे अपनी श्रेणी में सर्वदा प्रथम रहते थे और गुरुजन उन्हें मौनिटर बनाते थे। वह साधारण सी शिक्षा उनकी अपूर्व मेधा शक्ति तप एवं स्वाध्याय प्रवृत्ति से उनके भावी जीवन में एक विलक्षण निखार लाई। वे स्वयं संस्कृत अध्ययन के लिये लाहौर पढ़ने गये। अपने जीवन में यथाशक्ति योगी साधु महात्माजनों जैसे प्रभु आश्रित जी, आनन्द स्वामी जी, ब्रह्मचारी व्यास देवजी महात्मा नारायण स्वामीजी के सान्निध्य में रहकर उन्होंने दर्शन उपनिषदों का गहन अध्ययन किया, यम नियम आसन प्राणायाम प्रत्याहार धारणा, ध्यान समाधि योग के आठों अंगों को अपने जीवन में उतारा ३।। घण्टे तक एक आसन से बैठे रहने का अभ्यास उन्होंने तपोवन देहरादून में किया था। पूर्व जन्मों के संस्कार कहो या इस जीवन की अथक साधना, उन्होंने अपने जीवन को कुन्दन बना लिया था।

आदर्श गृहस्थ जीवन

स्वामी जी के दो विवाह हुये थे। प्रथम विवाह के समय आपकी आयु १५ व पत्नी की ९ वर्ष थी। दुरागमन की प्रथा के कारण आपका पत्नी से मिलन ५ वर्ष पश्चात् हुआ। २३ वर्ष की आयु में ज्येष्ठ पुत्र श्री विद्याव्रत जी व २५ वर्ष की आयु में श्री शान्ति स्वरूप जी का जन्म हुआ देवयोग से जब आपकी आयु २८ वर्ष की थी संवत् १९१५ की महामारी में कार्तिक मास में अचानक पत्नी का स्वर्गवास हो गया। इधर बड़े भाई नानिगराम जी जो बजाजे की दुकान करते थे उनकी मृत्यु भी जल्दी हो गई अतः दुकान का कार्य भी इनको लगभग १५-१६ वर्ष की आयु में ही संभालना पड़ा। दुकानदारी के कार्य में इनकी रुचि बढ़ने लगी धीरे-धीरे पैसा भी अच्छा आने लगा प्रतिवर्ष हजारों रुपये बचते थे। इनके साझी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

श्री वुद्धिलालजी खण्डेलवाल भी धार्मिक एवं सात्विक वृत्ति के थे दोनों साझियों में कभी किसी बात पर मतभेद नहीं हुआ। स्वामी जी तो सत्य के पुजारी थे ही वे अपने संस्मरणों में लिखते हैं "कि जीवन में एक बार असत्याचरण किया वह इस प्रकार कि गाँव में नाथूराम नामक मिस्त्री ने जब जापानी मारखीन माँगी तो मैंने जापानी ना होने के कारण दूसरी मारखीन को जापानी के नाम से दे दिया। शाम को जब प्रभु चिन्तन करने बैठा तो संध्या में मन नहीं लगा अपने असत्य व्यवहार पर रह-रह कर पश्चात्ताप हो रहा था। विह्वल होकर प्रभु चरणों में रो उठा और तुरन्त उठकर मिस्त्री के घर जाकर क्षमा माँगी उसके पैसे वापिस कर मारखीन ले आया तब हृदय को शान्ति मिली। यह थी उनकी सत्य के प्रति निष्ठा। भविष्य में भी अर्थ शुचिता की यह पुण्य भावना उनके जीवन का एक प्रमुख अंग बन गई।

आर्यसमाज में प्रवेश

दो पुत्रों के लालन पालन व वृद्धा माँ के लिये सहायिका की आवश्यकता अनुभव कर स्वामीजी ने अपना द्वितीय विवाह किया। इन्ही दिनों अलवर आर्यसमाज के मन्त्री श्री दुर्गाप्रसादजी का ग्राम बल्लबगढ़ में शुभागमन हुआ। उनके द्वारा हुये आर्यसमाज के प्रचार से प्रभावित होकर स्वामीजी आर्यसमाज के सक्रिय सदस्य बने इसके दस मास पूर्व ही स्वामीजी ने जो कुवारी कन्या से विवाह किया था इसका उन्हें भारी पश्चाताप हुआ कि यदि मैं पहले आर्यसमाज के सम्पर्क में आजाता तो इतनी बड़ी भूल ना करता चूँकि पहिले से ही मेरे दो सन्तान थी। पर सौभाग्य से द्वितीय पत्नी सुशीला देवीजी भी प्रथम पत्नी की भांति शीलता, नम्रता सेवा भावना व आज्ञापालन की प्रति मूर्ति मिली। जन सेवा के कार्यों व गृहस्थ सम्बन्धी सभी कार्यों में द्वितीय पत्नी से आशातीत सहयोग मिला।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वामीजी स्वयं कहा करते थे कि मेरे ऊपर मेरी पत्नी का जो ऋण है मैं उससे उऋण नहीं हो सकता। अगर ये मेरा साथ ना देतीं तो मैं कभी समाज का इतना कार्य नहीं कर पाता।

आर्य समाज में प्रविष्ट होते ही स्वामी जी आर्यत्व के आदर्श को स्वजीवन में उतारने के लिये कटि-बद्ध हो गये। जीवन का एक-एक क्षण उन्हें अमूल्य दिखने लगा। ऋषि के बतलाये मार्ग से उन्हें गुजरना था। मानो अब तो ऋग्वेद का निम्न मन्त्र उनका आदर्श बन गया था :—

"नाहमतो निरया दुर्गहा एतत् तिरश्चिता पार्श्वान्निर्गमाणि,
बहूनि मे अकृता कर्त्त्वानि युध्यै त्वेन सं त्वेन पृच्छै।"

अर्थात्—"मैं सांसारिक भोग विलास में फँसकर जीवन को नष्ट करने वाला नहीं हूँ। मुझे तो आत्मिक साधना द्वारा उस प्यारे प्रभु का आशीर्वाद लेना है मुझे अनेक ऐसे कार्य करने हैं जिन्हें साधारण व्यक्ति नहीं करते। ऐसे कार्यों में जो बाधायें आयेंगी मैं उनसे युद्ध करूँगा, संघर्ष करूँगा। उन विघ्नों का प्रभु चरणों में बैठकर समाधान पूछूँगा।"

उपर्युक्त मन्त्रानुसार स्वामी जी ने अपने भावी जीवन निर्माण की योजना बनाई। उन्हें तो शीघ्रता से चारों आश्रमों से पार जो होना था।

वित्तैषणा का त्याग

सर्व प्रथम उन्होंने वित्तैषणा के त्याग का संकल्प किया। सच्चे दिल से प्रभु से प्रार्थना की कि हे प्रभु मेरे पास जब भी १० हजार रुपया हो जायगा। मैं दुकान छोड़कर सारा जीवन आर्यसमाज के प्रसार प्रचार में लगा दूंगा। प्रभु ने भी भक्त की पुकार को शीघ्र ही सुन लिया और ४ वर्ष में ही दोनों साझियों के हिस्से में दस-दस हजार रुपये आ गये और जो राशि अधिक थी वह आर्यसमाज हेतु

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दान में दे दी। इस प्रकार संवत् १९८० में जब उनकी आयु केवल ३२ वर्ष की थी अपनी दुकान व १० हजार की राशि अपने छोटे भाई अजीराम जी को सौप दी और उस राशि के ब्याज से ही अपने गृहस्थ के लालन-पालन करने का संकल्प कर लिया। पत्नी जिसकी शादी को ४ वर्ष ही हुये थे, सन्तानोत्पत्ति की भी आशा थी और १ पुत्र व २ पुत्रियाँ हुईं भी। दो पुत्र पहले भी थे। पाँच बच्चों का लालन पालन, शिक्षा, दीक्षा, शादी विवाह सभी कुछ तो करना था, उस पत्नी ने भी इस प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार कर लिया और आजन्म सादा जीवन व्यतीत किया। स्वामी जी ने अब अपनी पत्नी सुशीला जी का नाम सुमित्रा देवी रखा क्योंकि उन्होंने सन्मित्र की भाँति सहधर्मिणी के कर्त्तव्य को निभाने की प्रतिज्ञा की थी।

प्रथम परीक्षा

इधर स्वामी जी ने व्यावसायिक कार्य से मुक्ति ली उधर उनके हितैषियों ने उन्हें यह कहकर धन कमाने का प्रलोभन दिया कि आप अपने लिये ना कमाओ। घण्टे २ घण्टे का समय निकालकर कुछ कार्य करो और जो कुछ आय हो उसे आर्यसमाज के कार्यों में में लगा दो तो इसमें क्या हानि है। स्वामी जी ने यह परामर्श उचित समझ रुई खरीद ली पर बेचने पर उसमें ५००) रु० की हानि हुई। अब तो स्वामी जी प्रभू चरणों में बैठ प्रायश्चित करने लगे बारम्बार क्षमा याचना करते हुये प्रार्थना की कि प्रभु इस बार मेरे ऊपर कृपा करो भविष्य में कभी ऐसी त्रुटि नहीं करूँगा। प्रातः ही एक व्यक्ति ने आकर चाँदी खरीदने की सम्मति दी। स्वामी जी ने इसे प्रभु प्रेरणा समझकर चाँदी खरीदी। बेचने पर पूरे ५०० रु० का लाभ हुआ।। प्रभु को कोटिशः धन्यवाद दिया और फिर भविष्य में कभी ऐसे प्रलोभन में नहीं फँसे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

द्वितीय परीक्षा

स्वामी जी निम्न धर्म संकट को अपने जीवन का प्रथम सत्याग्रह कहते थे। घटना इस प्रकार है :—

उन दिनों बल्लभगढ़ में ना तो आर्यसमाज का प्रचार ही था ना आर्यसमाज भवन स्वामीजी ने भवन के लिये १॥ बीघा जमीन व कुछ खण्डहर खरीदे। खण्डहरों में से पत्थर निकालते समय एक मजदूर को कुछ रुपये मिले और उनरुपयों को चुपचाप अपने घर ले गया। उन दिनों बल्लभगढ़ के पास हाथौरी नामक ग्राम में भगवत सिंह फौजदार, जो राव साहब नाम से प्रसिद्ध था, रहता था, वह भरतपुर महाराज किशन सिंह जी का मुँह लगा (खुशामदी) भी था। उसको किसी प्रकार इन रुपयों का पता लग गया। आसपास की जनता उससे आतंकित थी। उसने स्वामी जी को भी कुछ रुपये ऐंठने की दृष्टि से से अपने पास बुलाया और कहा आपको जो रुपया मिला है वह चुपचाप रख दो अन्यथा यहीं नजरबन्द कर दिये जाओगे। स्वामीजी ने निर्भीकता से उत्तर दिया 'आर्यसमाजी कभी झूँठ नहीं बोलता, रुपया मुझे नहीं मजदूर को मिला है और वह उसी का है' भगवतसिंह भला कब मानने वाला था, उसे तो रिश्वत लेने की आदत थी। आखिर स्वामी जी को वहीं अपने घर रोक लिया और कहा कि तुम यहाँ से जा नहीं सकते। स्वामी जी ने भी कह दिया कि तेरे घर का अन्न नहीं खाऊँगा मेरा भोजन और हवन का सामान मेरे घर से आयेगा। स्वामी जी वहाँ रहते हुये जब यज्ञ करते तब स्वाहा स्वाहा की ध्वनि सुनकर भगवतसिंह की माता घबड़ा गई, बोली—"बेटा, इस बनिया के बेटे को छोड़ दे, यह स्वाहा स्वाहा करता रहता है, तेरे घर का स्वाहा हो जायगा।' भगवतसिंह ने स्वामी जी से कहा, कि आप बाहर मेरी बगीची में यज्ञ कर लिया करो। इस पर स्वामी जी और भी अधिक प्रसन्न हुये। तीन दिन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पश्चात् अकस्मात् भगवतसिंह ने स्वामी जी को मुक्त कर दिया। घर आकर अपने पूज्य काकाजी से पूछने पर ज्ञात हुआ कि ८००) रु० की जमानत पर छोड़ा है। स्वामीजी ने तुरन्त कहा 'काकाजी यह पैसा भगवत सिंह को नहीं मिलेगा।' आर्यसमाज में आकर मीटिंग की कि आगे क्या करना है? अलवर से मन्त्री श्री दुर्गाप्रसाद जी बुलाये। लाहौर तार देकर श्री पं० विश्वप्रियजी बुलाये। नाजिम श्री रघुनाथ सहाय जी व तहसीलदार श्री रामस्वरूप जी से परामर्श किया। लाहौर से आकर श्री विश्व प्रिय जी सलेमपुर जाकर राजा किशनसिंह जी से मिले। राजा किशनसिंह ने भगवतसिंह को बुलाकर समझाया कि तू चुपचाप मंत्रीजी (स्वामीजी) के पैसे देदे। तुझे शायद पता नहीं, भरतपुर महाराज किशनसिंह जी आर्यसमाजी हैं और सभी स्थानों से आर्यसमाजी यहां आकर सत्याग्रह कर देंगे। यह सुन भगवत सिंह भयभीत हो गया और जमानत के पैसे छोड़ दिये। इस प्रकार स्वामीजी ने निर्भीकतापूर्वक विजय प्राप्त की और अपने काकाजी से ८००) रु० तो लिये ही उनके अतिरिक्त ४००) रु० और लेकर १२००) रु० आर्यसमाज मन्दिर के निर्माण में लगा दिये। यह था उनका आत्मबल एवं सत्य के प्रति दृढ़ विश्वास।

तृतीय परीक्षा

जब धर्मपत्नी सुशीला जी शादी के पश्चात् पहली बार घर में आई तो उनके गले में पीहर वालों ने बीजासनी देवी के नाम से चाँदी के दो सिक्के पहना दिये थे। इनके पहनने वालों को देवी के स्थान जाकर जात देनी पड़ती थी और देवी की पूजा करनी पड़ती थी। चूँकि स्वामीजी तब तक आर्यसमाज के रंग में रंग चुके थे वे कैसे देवी दुर्गा की पूजा करवाते अतः उन्होंने उन चाँदी के सिक्कों को यज्ञाग्नि में डाल दिया। कुछ दिनों के पश्चात् पत्नी की आंखें दुखनी आ गईं अब तो घर व बाहर वाले सभी कहने लगे कि बीजासनी ने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

खोर कर दी है और अन्धा करके छोड़ेगी। स्वामी जी ने साहस के साथ कहा 'आप लोग चिन्ता न करें मैंने इसका हाथ पकड़ा है और मैं ही साथ निभाऊँगा।' प्रतिदिन रसोंत फिटकिरी के फाये बाँधते रहे। दो तीन दिन में ही आँखे ठीक हो गई।

इसी प्रकार छोटे पुत्र यज्ञप्रिय के बहुत भयंकर चेचक निकलीं। ५ वर्ष का बालक, हाथों की अंगुलियों में घाव हो गये, कीड़े पड़ गये, आंखें बैठ गई, खुलती नहीं थी, सारे शरीर में मोटे २ फफोले हो गये, यहां तक कि सारे कमरे में इतनी दुर्गन्धि, कि ठहरना भी कठिन। बालक के बचने की आशा नहीं रही। घर वाले घबड़ा गये। स्वीमी जी के बड़े भाई श्री गेंदालाल जी कहने लगे कि भैया, 'तुम तो देवी देवताओं को मानते नहीं, मैं कुछ मनौती मना लूं तो इसमें क्या हानि होगी ?' इस पर स्वामी जी बोले, "भाई साहब, बहुत बड़ी हानि होगी, आपको यह ज्ञात ही है कि मैं आर्यसमाज का मन्त्री हूँ, अगर आपके पूजा पाठ करने के पश्चात् भी लड़का चल बसा तो लड़का तो जायगा ही, साथ में धर्म से भी हाथ धोना पड़ेगा और बच भी गया तब भी मेरी स्थिति तो वही होगी, मेरे द्वारा ही समाज कलंकित हो मैं यह सहन नहो कर सकता। हां धर्म पर अटल रहने पर लड़का जाता है, या जीवित रहता है दोनों ही स्थिति में मेरी विजय है, भाई साहब, आप चिन्ता न करें, वह प्रभु दयालु है, अवश्य हमारी सहायता करेगा।"

इस विश्वास के साथ प्रतिदिन उस कमरे की सफाई व सन्ध्या यज्ञ जप चलता रहा। पत्नी ने भी धैर्य नहीं छोड़ा, ६ मास की लम्बी अवधि के पश्चात् बालक स्वस्थ हुआ। वाह रे प्रभु, आपने अपने भक्त को इन दोनों परीक्षाओं में भी उत्तीर्ण किया।

अद्भुत मित्र मंडली एवं कार्यक्षेत्र का विस्तार

किसी भी कार्य की सफलता के लिये दो बातें आवश्यक हैं, प्रथम—समान बिचार वाले कर्मठ व्यक्तियों का संगठन। द्वितीय—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दुर्गुणों का त्याग करते हुये व सद्गुणों को जीवन में धारण करते हुये पहले स्वयं का जीवन श्रेष्ठ बनायें, पुनः उन्हीं विचारों का समाज में प्रचार व प्रसार करें।

चूंकि स्वामी जी को तो ऋषि का स्वप्न पूरा करना था अपने जीवन को कुन्दन बनाते हुये—आदर्श समाज की स्थापना करनी थी, अतः ऋग्वेद के निम्नमन्त्र के सन्देश को जीवन में उतारा :—

'अश्मन्वती रीयते संरभध्वं उत्तिष्ठत प्रतरता सखाय।
अत्रा जहीमो अशिवा ये असन् शिवान् वयमुत्तरेमाभिवाजान्॥"

अर्थात्—इस वेगवती पथरीली संसार रूपी नदी को पार करना है तो संगठित हो जाओ और कटिबद्ध हो खड़े हो जाओ। साथ ही दुर्गुणों को त्याग, सद्गुणों की पूंजी पर सवार हो जाओ तभी पार हो सकोगे। वेदमन्त्र के इन दोनों ही सन्देशों को स्वामी जी ने जीवन में उतारा। दुर्गुणों के त्याग व सद्गुणों को धारण करवाने के लिये सत्संग मण्डल स्थापित कर शिविर लगाना प्रारम्भ किया। चार मित्रों की मण्डली बनाई। सभी के नामों में भी परिवर्तन किया। अपना नाम सत्यप्रिय रखा चूंकि स्वामी जी को सत्य से अटूटस्नेह था। चार मित्रों के परिर्वातत नाम क्रमशः विश्व प्रियजी, शान्ति प्रियजी, कर्म प्रियजी एवं प्रकाश चन्द्रजी थे रखे गये। सभी का कार्य क्षेत्र चुना गया। पं० विश्वप्रियजी लाहौर संस्कृत अध्ययन के लिये गये। वहाँ से शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण कर जब आये तो भुसावर व बल्लमगढ़ में दयानन्द ब्राह्मविद्यालय की स्थापना सवत् १९८० में की गई। पं शान्तिप्रिय जी को आयुर्वेद पढ़ने के लिये भेजा गया। आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् सं० १९८५ में ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ग्राम बल्लमगढ़ में दयानन्द औषधालय की स्थापना हुई पंडित जी ने निष्काम वृत्ति से उसका संचालन किया। पंडित जी के गृहस्थ पालन के लिये स्वामी जी ने आर्थिक सहयोग दिया। अब कन्या विद्यालय के अभाव की पूर्ति स्वामी जी ने अपनी पुत्रवधू-शीलबती,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्म पत्नी श्री शान्तिस्वरूप जी व पुत्री थून निवासी श्री गोकुलचन्द जी, द्वारा की और अपने ज्येष्ठ भ्राता श्री गेंदालाल जी के नाम से 'गेंदालाल आर्य पुत्री पाठशाला' की स्थापना की। जो ग्रामीण बालक दिन में विद्यालय में नहीं पढ़ सकते थे कृषि या पशुपालन आदि कार्य के कारण। उनके लियें स्वामी जी ने पं० कर्मप्रिय जी को रात्रि पाठशाला चलाने का कार्य दिया तथा दिन में भी पं० कर्मप्रिय जी व प्रकाशचन्द्र जी विद्यालय में अध्यापन कार्य करते थे।

अध्यापकों का वेतन, ग्रामीण बच्चों के लिये पाठ्य सामग्री व प्रकाश का प्रबन्ध, औषधियों का खर्च, सभी कुछ स्वामी जी स्वयं वहन करते थे। आसपास ग्रामों से आये हये रोगियों की सेबा सुश्रूषा स्वामीजी अपने हाथों करते उनके घावों को धोना, मरहम पट्टी करना यहां तक कि भोजन व विस्तर का प्रबन्ध भी घर से करना उनके जीवन का सामान्य कार्य था।

ये सभी संस्थायें सम्वत् २००० तक सुचारु रूपेण चलती रहीं उसके पश्चात् राज्य सरकार ने आग्रहपूर्वक इनको लेकर अपने संरक्षण व व्यय से चलाना आरम्भ किया।

सन्तानों को गुरुकुलीय शिक्षा से दीक्षित

स्वामी जी ने अपनी सभी सन्तानों को प्राचीन गुरुकुल शिक्षा दिलाई। अपने ज्येष्ठ पुत्रों विद्याव्रत जी व शान्तिस्वरूप जी को "लाहोर विश्व-विद्यालय" में शिक्षा दिलवाई। कनिष्ठ पुत्र श्री यज्ञप्रिय जी को "ब्राह्म विद्यालय ज्वालापुर" में पढ़ाया। दोनों पुत्रियां सत्यवती विद्यावती ने "कन्या महाविद्यालय हाथरस" से "स्नातिका" परीक्षा पास कर "विद्या विभूषिता" की उपाधि प्राप्त की। यहीं तक नहीं, अपनी धर्म पत्नी व अपनी ज्येष्ठ पुत्र वधू को भी हाथरस गुरुकुल में अध्ययन के लिये प्रवेश दिलाया। यह थी उनकी नारी शिक्षा के प्रति आस्था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सामाजिक कुरीतियों का बहिष्कार

धार्मिक अन्ध विश्वासों की भाँति उस समय भी और आज भी अनेक सामाजिक कुरीतियां हैं। जिनका निराकरण किये बिना आदर्श समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। शादी विवाहों के अवसर पर इन विकृतियों के कारण पैसे का बहुत दुरुपयोग होता है। स्वामीजी ने इस ओर भी ध्यान दिया। सर्व प्रथम अपने ज्येष्ठ पुत्र विद्याव्रत की शादी वैदिक रीत्यानुसार करने का संकल्प किया। शादी में अलवर के मन्त्री दुर्गाप्रसाद जी, अजमेर से पं० नेतराम जी, भजनीक लालाराम जी आदि अनेक विद्वान् व स्थानीय आर्य बन्धुओं ने भाग लिया। उस समय विवाहों में आतिशबाजी, स्वांग, तमाशे, थियेटर, फूलवाड़ी, निकासी आदि कुप्रथायें थीं। इस सभी का बहिष्कार करते हुये सुन्दर २ भजन गाते हुए बारात ने ग्राम चाँदौरा में प्रवेश किया और जब संस्कार का समय आया तब बेटी वालों के घर जाकर मण्डप के नीचे यज्ञ वेदी बनाना आरम्भ किया तो बेटी वाले बिगड़ गये और क्रोध में बोले, "हम माढ़े नीचे खड्डा नहीं खोदने देंगे, अपनी रिवाज के अनुसार फेरा पाड़ेंगे।"

इस पर स्थिति इतनी बिगड़ी कि सभी आर्य भाइयों ने यह निश्चय किया कि अगर वेदानुकूल संस्कार न हुआ तो बारात वापिस चली जायेगी। यही विचार बेटी वालों को कहलवा भेजा तो वे घबड़ा गए और कहने लगे कि "महाराज जो चाहो सो करो हम यही समझेंगे कि हमने एक बेटी स्वामिन को ही दी" और अन्त में बड़े उत्साह से वैदिक रीति से विवाह संस्कार हुआ। बेटी वालों पर भी अच्छा प्रभाव पड़ा सभी बहुत प्रसन्न हुए।

इसी प्रकार पुत्र शान्ति स्वरूप जी की शादी में जब प्रीति-भोज का आयोजन रखा तब ग्राम के वैश्य भाइयों ने निमन्त्रण स्वीकार न किया क्योंकि स्वामी जी ने इससे पूर्व कुछ विधवा बहिनों के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पुनर्विवाह करवाए थे इस कारण अग्रवाल जाति के भाइयों ने स्वामी जी को जाति से बहिष्कार कर आना-जाना बन्द कर दिया था। स्वामीजी को जब पता लगा कि अपनी जाति के भाइयों ने दावत में सम्मिलित ना होने का निश्चय किया है, तब तो वे बहुत प्रसन्न हुये, और कहने लगे, कि "मैं अभी ग्राम के गरीब परिवार वालों को भोजन का निमन्त्रण देता हूँ, मेरा भोजन भी ना बिगड़ेगा। और मेरी बरात भी अधिक ना जायेगी" और हुआ भी ऐसा ही, अन्त में अग्रवाल भाई लोग बहुत पछताये कि "हम दावत से भी वञ्चित रहे और बारात में भी ना जा सके। हम तो सोच रहे थे कि मन्त्री जी (स्वामीजी) आकर हमारी खुशामद करेंगे"। पर स्वामीजी इस प्रकार की "गीदड़ भभकियों से" डरने वाले ना थे। इस शादी में एक विशेषता यह भी रही कि बारातियों को विदा में "सत्यार्थ प्रकाश" दिये गये दहेज आदि लेने का तो कोई प्रश्न ही नहीं था।

सबसे छोटे पुत्र यज्ञप्रियजी की शादी में बेटी वालों ने लगन में सामान भेजने के लिये कहा तो स्वामीजी ने स्पष्ट कह दिया कि एक रुपया व नारियल से लगन की रस्म होगी। लड्डू भी अगर भेजें तो वापिस कर दिये जायेंगे। इस प्रकार स्वामीजी ने सामाजिक कृत्यों में अनेक सुधार किये।

असाध्य रोग में भी ईश्वर पर अटल विश्वास

संवत् १९९२ में स्वामीजी के ज्येष्ठ भ्राता श्री गेंदालालजी का स्वर्गवास होगया। तभी उनकी धर्मपत्नी भी चल बसीं। स्व स्वामी जी के जिगर में फोड़ा होगया, धीरे-धीरे वह पक गया भरतपुर में कई महीने उपचार हुआ पर लाभ ना हुआ पुनः अलव लेगये। अलवर आर्य समाज के मन्त्री श्री दुर्गाप्रसादजी ने तन धन से सेवा की। जब अलवर में विशेष लाभ प्रतीत ना हुआ आर्थिक स्थिति भी डाँवाडोल थी पर साहस एवं धैर्य से काम लिय परिजनों, इष्ट, मित्रों, सम्बन्धियों सभी का सहयोग रहा। सभी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जयपुर जाने का निश्चय किया। जयपुर जाकर भी तबियत में सुधार ना हुआ। दिन पर दिन स्थिति बिगड़ती चली गई, खाना-पीना सब छूट गया, एक दो घूंट दूध पीते वह शौच के रास्ते ज्यों की त्यों निकल जाता, पेट फूल गया, शरीर सूख कर काँटा हो गया, बचने की कोई आशा नहीं रही। ऐसी स्थिति में सभी घबड़ा गये पर स्वामी जी नहीं घबड़ाये उन्होंने स्वयं अपनी डायरी में लिखा है "कि मेरा सारा समय ईश्वर स्मरण में निकलता, जयपुर में जिस कुटिया में हम ठहरे हुये थे, सामने शहतूत का पेड़ था, उसकी हरी-हरी कोमल पत्तियां मेरे लिये ओ३म् ओ३म् लिखने के लिए कोरे कागज का काम देती थी, मुझे यह अच्छी तरह याद है कि मेरी यह दिन-चर्या बड़ी अच्छी प्रकार चलती रही, मैं चारपाई पर लेटे २ सन्ध्या करता, जप करता रहता, कुटिया में प्रतिदिन यज्ञ होता, सिरहाने गीता पड़ी रहती उसका स्वाध्याय भी करता रहता। मेरी सेवा में मेरी धर्मपत्नी, मेरे दोनों ज्येष्ठ पुत्र श्री विद्याव्रत जी, शान्तिस्वरूप जी, मित्र श्री शान्तिप्रिय जी, श्री दुर्गाप्रसाद जी, व भाई अजीराम जी, दुर्गाप्रसाद जी, अधिकतर बने रहते, इन सभी का मैं आजन्म ऋणी रहूँगा।"

स्वामी जी की शारीरिक स्थिति में जब किंचिन्मात्र भी सुधार प्रतीत न हुआ, मृत्यु सामने दिखने लगी, डाक्टरों ने भी ग्राम जाने की अनुमति देदी। तब स्वामी जी बोले, "अब घर तो चलना ही है। जितना शेष घृत है उससे अब यज्ञ करो, मैं भी बैठूँगा, मेरे लिए पीठ के पीछे कुछ सहारा लगा दो।"

यज्ञ की समाप्ति पर यज्ञ शेष घृत लेकर पेट पर लगाते हुए, स्वामी जी ने कहा कि "हे प्रभु ! अब तो मेरी यही औषधि है"। थोड़ी देर बाद ही पेट में हलका दर्द हुआ और शौच जाने की इच्छा हुई। शौचालय में जाते ही पेट का फोड़ा फूट गया और गुदा मार्ग से खून मवाद की धारा बह निकली। सारा कष्ट समाप्त हो गया पेट

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पिचक गया स्वामीजी ने अपने पुत्र से कहा, 'बेटा ! फतह हो गई।'

डाक्टरों ने भी कहा मन्त्री जी ! आप बड़े भाग्यशाली हैं जो गुदा मार्ग से फोड़े का मवाद निकला है। अन्यथा मृत्यु अवश्यम्भावी थी। स्वामीजी ने भी निश्चय किया कि "प्रभु ने नव-जीवन दिया है, तो अब शीघ्र ही वानप्रस्थ लेकर शेष जीवन आत्मिक साधना व समाज के कल्याण में हो व्यतीत करेंगे।"

थोड़ा स्वस्थ होने पर जयपुर से ग्राम आये और वानप्रस्थ की दीक्षा लेकर ग्राम से बाहर बगीची में रहने लगे। जहाँ पहिले से ही अपने लिये व अपने मित्र श्री शान्तिप्रिय जी की साधना हेतु तथा जन साधारण के लिए पीने के जल की व्यवस्था के लिए और औष-धालय के लिए दो भवन बनवाये हुये थे।

जब पूर्ण स्वस्थ हो गए तब भविष्य में कार्य करने की योजना बनाई।

जन जागरण अभियान

जन जागरण का कार्य शिविरों व सत्संगमण्डलों के माध्यम से द्रुतगति से प्रारम्भ हुआ। आस पास के अनेक गांव व शहर जैसे— निठार, झिरना, भुसावर, करौली, हिण्डोन, रामपुरा माँसलपुर, खीप का पुरा सलैमपुर, इत्यादि स्थानों के व्यक्ति स्वामीजी के सम्पर्क में आये। जिन्होंने सद्गुणों के धारण व दुर्गुणों के त्याग की प्रतिज्ञायें की। सभी के हस्ताक्षर स्वामीजी अपनी डायरी में करवाते थे। जब स्वामीजी ने गायत्री मन्त्रके परचे छपवाये, उपर्युक्त सद्गुणों व दुर्गुणों की सूची भी उस परचे में छपवाई। जिससे सभी व्यक्ति लाभान्वित हो सके। सद्गुणों में प्रमुख ये हैं—सन्ध्या, जप, धार्मिक पुस्तकों का स्वाध्याय, सत्संग, निष्कामवृत्ति सेवा, सादगी सन्तोष व संगठन। दुर्गुणों में—सभी प्रकार के मादक द्रव्यों का त्याग अश्लील दृश्यों का परित्याग, मृत्युभोज में भाग न लेना, फैशनादि से बचना इत्यादि। यह उनके जीवन का ठोस रचनात्मक कार्य था

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उन्होंने भरतपुर से लेकर सवाई माधोपुर के ग्रामों तक तथा मथुरा आगरा जिले के छोटे २ ग्रामो में जा-जाकर वैदिक सिद्धान्तों की दुन्दुभी बजाई।

हैदराबाद का धार्मिक सत्याग्रह

हिन्दू हितों की रक्षा हेतु सन् १९३९ में हैदराबाद में सत्याग्रह हुआ। हैदराबाद में निजाम का शासन था वहाँ के नबाव ने हिन्दुओं पर भीषण अत्याचार आरम्भ कर दिये। क्रांति का बिगुल बज उठा। समस्त उत्तरी भारत से आर्यसमाजी भाइयों ने सत्याग्रह में भाग लिया। स्वामीजी ने भी सिर पर कफन बाँधकर कच्ची गृहस्थी का भार अपनी पत्नी के कन्धों पर डालकर सत्याग्रह में जाने का दृढ़ संकल्प कर लिया। जब पत्नी से सत्याग्रह में जाने की आज्ञा माँगी तो पत्नी बोली-"मैं भी आपके साथ चलूँगी, हमें आजन्म आपके साथ रहने का अधिकार है, उससे आप हमें वञ्चित नहीं कर सकते" अब तो स्वामीजी के सम्मुख एक नया धर्म-संकट उपस्थित होगया, स्वामी ने प्रभु से प्रार्थना की—"हे प्रभु, मुझे इस धर्म-संकट से उबारो", सहसा ही अन्तः प्रेरणा से स्वामी जी के मुख से यह शब्द निकले कि "हम श्रावणी का पर्व यहाँ आकर मनायेंगे" भोली पत्नी इन शब्दों के भुलावे में आ गई और भारी हृदय से जाने की अनुमति दे दी। स्वामीजी स्वयं भी यह नहीं सोच पा रहे थे कि वे जीवित भी लौटंगे या नहीं। पर अपने मुख से निकले इन वाक्यों को वे "दैवी वाणी" समझ रहे थे और जेल में रहते हुये प्रतिदिन प्रभु से यही प्रार्थना करते रहे "हे प्रभु ! मुझे दो प्रकार की विजय चाहिये। हिन्दू हितों की रक्षा तो हो ही पर पत्नी को दिये हुये वचन भी सार्थक होने चाहिये।'

प्रभु अपने भक्त की पुकार भला क्यों नहीं सुनता. स्वामी जी जेल की असह्य यातनाओं को हँसते २ सहन करते हुये और विजय दुन्दुभी बजाते हुये श्रावणी से एक दिन पहले अपने ग्राम बल्लभगढ़

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में सकुशल आ पहुँचे। जनता ने अपने प्यारे नेता को जिन अश्रु पूरित नयनों से विदा दी थी आज उन नयनों में हर्ष के अश्रुकण छल-छला रहे थे। जय-जयकार की ध्वनि से ग्राम बल्लभगढ़ का वाता-वरण गूँज उठा। ऐसा स्वागत अभी तक उस ग्राम में न किसी का हुआ था न होने की आशा है। स्वामी जी ने सभी के हृदय को जीत लिया था। भरतपुर, बयाना वैर भुसावर सभी स्थानों की जनता ने उनका हार्दिक स्वागत किया।

स्वामीजी जब घर आये उनको पता लगा कि उनके घर में प्रथम बार पौत्र (पुत्र श्री शान्तिस्वरूपजी) का जन्म हुआ है। चूँकि स्वामीजी हैदराबाद सत्याग्रह में गये हुये थे अतः परिवार के व्यक्तियों ने शिशु के जन्म के उपलक्ष में अभी तक कोई भी कार्यक्रम नहीं रखा था। सभी की यह अभिलाषा थी कि इसके बाबा साहब विजयी होकर आयेंगे तब वेही इसका "नामकरण संस्कार" करेंगे। स्वामी जी आये, तब उन्होंने नव शिशु का नाम "सत्यपाल" रखा। स्वामी जी के लिये सत्य ही "सर्वस्व" था यहां तक कि "सत्य ही ईश्वर" और "ईश्वर ही सत्य है"। स्वामी जी चाहते थे बालक सत्य का पालन करने वाला हो "यथा नाम तथा गुण:'। बच्चे के जीवन पर नाम का विशेष प्रभाव पड़ता है। नामकरण संस्कार में स्वामीजी ने आज की भांति दावत का प्रोग्राम न रखकर गरीब व्यक्तियों को चाबल बूरा, दाल, फुलका की दावत दी। पचासों भूखे व्यक्तियों ने भोजन किया। साथ ही २५ रजाइयां बनवाईं, जिन्हें स्वामीजी सर्दी के दिनों में स्वयं गरीब व्यक्तियों को देकर आते, व गर्मी के दिनों में लेकर आते। पुनः उन रजाइयों की धुलाई सिलाई आदि का कार्य उनकी धर्मपत्नी करतीं और अगली सर्दी में पुनः पहले की भाँति देकर आते इस प्रकार यह कार्यक्रम दीर्घकाल तक चलता रहा। स्वामीजी की दान प्रक्रिया व सेवा-प्रणाली भी विलक्षण थी। थोड़े खर्चे से अधिक लाभ हो हर कार्य करने से पहले यह सोच लेते थे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उनकी धर्मपत्नी उनके प्रत्येक कार्य में पूर्ण सहयोग देने को तत्पर रहती थी। बगीची पर जब पहले पथिकों के लिये स्वामीजी ने जल पीने की व्यवस्था की तब कुँये से खींच २ कर मटकों में पानी भर २ कर जल की टंकी उनकी पत्नी स्वयं भरती थीं कभी स्वामीजी जल खींचने जाते और पत्नी ला-ला कर डालती जाती थीं बाद में तो टंकी तक पाइप लाईन डाल दी गई और कुँये से खींचकर पाइप में डालने लगे। इत्यादि।

घर पर प्रातः व सायं वृद्ध, युवा, बच्चे, व महिलाओं की भीड़ रहती थी। उन सभी के उनकी पत्नी काजल लगाती थीं। आज भी उस काजल को वे स्वयं बनाती हैं। तीन प्रकार का मलहम, काला मलहम, लाल मलहम व जले पर लगाने वाला राल का मलहम भी घर ही बनता था। अनेक प्रकार की औषधियाँ जैसे, खाँसी की दवा, कस्तूरी वटी सुख विलास चूर्ण आदि भी घर बनते थे। तथा घर पर रोगियों को उपर्युक्त औषधियाँ भी दी जातीं। हौम्योपैथी चिकित्सा भी स्वामी जी के पुत्र श्री शान्ति स्वरूप जी निःशुल्क करते थे। इन सभी सुविधाओं के कारण रोगियों को बहुत कम ही कभी बाहर जाना पड़ता था। अधिकांश रोगी ग्राम में ही ठीक हो जाते थे।

राजनैतिक सत्याग्रह

सन् १९३९ से ही भरतपुर राज्य में भी स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये आन्दोलन आरम्भ हो चुका था। सन् १९४१ में स्वामीजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री विद्याव्रतजी ने डी. ए. वी. कालेज देहली से अध्यापकीय सेवा से त्याग पत्र देकर स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लिया। पिता पुत्र दोनों ने प्रजा परिषद् के माध्यम से ग्राम २ में आजादी का मन्त्र फूँका। भारत माता की स्वतन्त्रता के सम्मुख स्त्री बच्चों का लालन-पालन गौण होगया। स्वामीजी को सरकार ने गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया। ७० दिन जेल में रखा। अन्त में सरकार को झुकना पड़ा। और माँगें स्वीकार कीं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सन् १९४२ में पुनः श्री विद्याव्रत जी को गिरफ्तार किया। तब अंग्रेजों ने बड़ी कड़ी यातनायें दीं। भोजन भी अपराधी कैदियोंके समान मिलता था। शास्त्री जी के पैरों में 'डण्डा बेड़ी' डाल दी गई, जिनसे उठने बैठने में बड़ी परेशानी होती थी पर आजादी के दीवाने ने इन यातनाओं को उपहार रूप समझ प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार किया।

आर्य महिला विद्यापीठ की स्थापना

सामाजिक सुधारात्मक कार्य एवं राजनैतिक स्वतन्त्रता सम्बन्धी आन्दोलनों के अतिरिक्त जीवन में और भी कोई स्थायी महत्वपूर्ण कार्य करना चाहिये। इस विषय पर दोनों पिता-पुत्र रात्रि के १२ बजे तक विचार करते रहते। अन्तमें विचार आया कि इस क्षेत्र में स्त्री शिक्षा के लिये कोई अच्छी संस्था नहीं है। 'वनस्थली जयपुर' जैसी संस्था इधर होनी चाहिये। इस संकल्प को लेकर स्वामीजी व शास्त्रीजी भुसावर, बयाना, भरतपुर गये। सभी आर्य भाइयोंसे विचार-विमर्श किया। सभी ने इस प्रस्ताव का सहर्ष अनुमोदन किया और यथाशक्ति सहयोग देने का वचन दिया। सेठ रघुनाथ प्रसाद जी भुसावर वालों ने भुसावर से बाहर ६२ बीघा भूमि, आम के पेड़, कुँआ व १० हजार रुपये स्थायी कोष के लिये देने का वचन दिया। सेठ रतनलाल जी ने भरतपुर खोलने पर १०० बीघा भूमि व २० हजार रुपया तथा यथाशक्ति समय देने का भी वचन दिया। इसी प्रकार बयाना वाले मन्त्री जी श्री गणेशीलाल जी ने भी बयाना में संस्था खुलने पर तन, मन, धन यथाशक्ति देने का वचन दिया। काफी विचार विमर्श के पश्चात् भुसावर खोलने का निश्चय हुआ, उसके दो कारण थे, एक तो गुरुकुल शहरी वातावरण से दूर ग्रामीण प्रदेश में रहे तो उत्तम है दूसरे स्वामी जी इस संस्था के लिये ५ वर्ष देना चाहते थे। ५ वर्ष के पश्चात् संस्था को संभालने का आश्वासन श्री रघुनाथ प्रसाद जी भुसावर वालों ने दिया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस संस्था की स्थापना के विषय में जिस किसी ने सुना, भूरि २ प्रशंसा की और यथाशक्ति सहयोग देने का वचन दिया। स्वामीजी का इस संस्था की स्थापना का उद्देश्य 'प्राचीन ऋषि प्रणीत गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली के अनुसार बालिकाओं को शिक्षित करने का था।'

स्वामीजी ने पं० विश्वप्रिय जी को एक पत्र इस आशय का लिखा कि हम महिलाओं की उन्नति के लिये इस क्षेत्र में एक संस्था खोलना चाहते हैं। उसके प्रत्युत्तर में उन्होने प्रशंसात्मक एक बहुत बड़ा पत्र लिखा जिसका संक्षेप में निम्न आशय है :—

सेवा में :—

श्रीमान् त्याग मूर्ति, सद्वृत्त परायण, वैदिक धर्मानुरागरंजित, सदसद्विवेकजिज्ञासु, विशुद्धब्रह्मबोधपिपासु, माननीय भन्त्रीजी !

सादर नमस्ते !

आपके पत्रानुसार आपकी भावी स्कीम के सम्बन्ध में मेरा जो विचार है वह संक्षिप्त रूपेण निम्नांकित है :—

रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातम् ।
भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पंकज-श्री ।।
इत्थं विचारयति कोषगते द्विरेफे ।
हा, हंत ! हंत ! नलिनी, गज उज्जहार ।।

इस अन्योक्ति के अनुसार संसार चक्र में पड़ा हुआ अविद्याग्रस्त—सासांरिक दृष्टि से निपुणतम व्यक्ति भी अविलम्ब रूपेण स्वकर्त्तव्य कर्म को तत्काल सम्पादित न कर आगामी कल पर ही टालता जाता है और उस भोले व्यक्ति का वह कल कभी उसके जीवन में नहीं आ पाता।

अतः शुभ कर्म में विलम्ब नहीं करना चाहिये। प्राचीन गुरुकुल शिक्षा पद्धति से कन्याओं को शिक्षित किया जाय यह आपका

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विचार एवं पुरुषार्थ सर्वथा प्रशंसनीय है। इस प्रान्त में ऐसी संस्था की परमावश्यकता है। एतदर्थ मैं आपके विचारों का स्वागत करता हुआ हृदय से उसकी सफलता की कामना करता हूँ।

एतद् प्रान्तीय बन्धुओं से भी अपील करता हूँ कि सभी आर्य उदेद्श्य की पूर्ति में तन, मन, धन, से सहयोग करें, अस्तु।

भवदीय :—
विश्वप्रिय (बल्लमगढ़)
८ १२—४५

दिनांक २८—४—४६ को महारानी साहिबा जया (भरतपुर) के कर कमलों द्वारा विद्यापीठ की आधार-शिला रखी गई। विद्या पीठ का मुख्य द्वार श्री जौहरीलाल जी मोदी द्वारा निर्मित कराया गया। सेठ रघुनाथ प्रसाद जी भुसावर वालों ने विद्या पीठ के लिये ६० बीधा जमीन कूप सहित, कुछ आम्रवृक्ष व १० हजार रुपये दिया। महँगाये वाले सेठ रतनलाल जी व श्री सन्तोषीलाल जी ने १० हजार रुपये, माता सरस्वती जी बौहरिन भरतपुर ने १० हजार व श्यामलाल जी वकील गंगापुर वालों ने ६ हजार, पंडित मोहन लाल जी ने ५ हजार, स्वयं स्वामी जी व उनके भाई दुर्गा प्रसाद जी अजीराम जी ने ५ हजार दिये। साथ ही ५ वर्ष संस्था की अवैतनिक सेवा करने का व्रत भी स्वामी जी, उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुमित्रा जी व उनके ज्येष्ठ पुत्र विद्याव्रत जी ने लिया। माता लीलावती जी ने विद्या पीठ में अध्यापन कार्य संभालने के लिये राजगढ़ राजकीय विद्यालय से त्याग पत्र दे दिया और दीर्घ काल तक संस्था की सेवा की। संस्था के संचालन कार्य में अपने पिताजी के साथ पूर्ण सहयोग करते हुये शास्त्री जी अध्यापन कार्य भी संभालते थे। स्वामी जी की दोनों पुत्रियों सत्यवती-विद्यावती ने भी अध्यापन कार्य किया।

भरतपुर, वयाना, हिण्डौन, भुसावर, गंगापुर, निठार, कठूमर, खंडली, अलवर, नगर, करौली, सवाई माधौपुर कितने ही स्थानों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कितने ही महानुभावों ने विद्यापीठ के लिये आर्थिक सहयोग दिया। सभी के नामों का उल्लेख विस्तार भय से नहीं दिया जा सकता। स्वामी जी ने जिस २ के आगे अपनी झोली फैलाई, सभी ने मुक्त-हस्त से स्वामीजी की झोली को भर दिया। स्वामीजी ने अपने सभी रिश्तेदारों यहाँ तक कि पुत्रियों की श्वसुराल के द्वार भी खटखटाये।

आरम्भ में जंगल में घास फूँस की झोंपड़ी में स्वयं अपने परिवार को लेकर रहे। और कच्चे भवन निर्मित कर दि. १०-११-४६ को १५ कन्याओं को प्रवेश दिलाकर विद्यापीठ की स्थापना की गई। धीरे २ कन्याओं की संख्या ४०-५० के लगभग होगई और १ लाख का भवन व १ लाख स्थायी कोष में जमा होगये। यह सब स्वामीजी के तप-त्याग व साधना का प्रतिफल था। दोनों पिता-पुत्र सर्दी गर्मी वर्षा आँधी तूफान की परवाह न करते हुये न दिन देखते थे न रात। प्रातः कहीं हैं, तो दोपहर कहीं तो रात्रि कहीं व्यतीत करते थे। कभी धन संग्रह के लिये जा रहे हैं, तो कभी बिल्डिग के लिये पत्थर, चूना, व मिस्त्री की खोज में हैं, इधर छात्राओं के भोजन वरम व अध्यापन की भी चिन्ता रहती थी। सन् १९४७ में हिन्दू-मुस्लिम दंगों में भी छात्राओं को यत्र तत्र सुरक्षित पहुँचा कर स्वयं वहीं निर्जन स्थान में प्रभु विश्वास पर पड़े रहते। अन्त में ५ वर्ष की निश्चित अवधि तक अनेक बाधाओं से टक्कर लेते हुये इस संस्था के रूप में जनता के समक्ष खड़ा करके दिखा दिया। ५वर्ष में जब संस्था को एक सुन्दर रूप मिल गया सर्वत्र तत्र स्वामीजी व शास्त्री जी के पुरुषार्थ की भूरि २ प्रशंसा होने लगी। छात्राओं के संरक्षकों ने अखबार में विद्यापीठ के संस्थापक के नाम से स्वामीजी की प्रशंसा में भी कुछ शब्द प्रकाशित करवा दिये। यह सब बिना किसी गंभीरता के स्वाभाविक रूप से ही प्रकाशित किया गया था। स्वयं स्वामीजी तो आत्मश्लाघा से सदैव ही बचते रहते थे और अपने को व अपने पुत्र

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

को एक तुच्छ सेवक ही लिखते थे। स्वामीजी को जब पता लगा अखबार में निकाले गये "संस्थापक" शब्द को दूसरों पर अ प्रभाव पड़ा है तो इससे बचने का सहज ही उपाय निकाल लि उन्होंने संस्था का अभूतपूर्व "उत्सव" रखा। श्रीमती सुचेता लानी, डा. सीताभिरमैया पट्टाभि, श्रद्धेय पं. धुरेन्द्र शास्त्रीजं अनेक विद्वान् निमन्त्रित किये गये। बड़े २ गुरुकुलों में जैसे उ होते हैं। दूर-दूर तक शामियाने लगते हैं, अतिथियों के निवास प्रबन्ध किया जाता है। वैसा ही सब प्रबन्ध किया गया था। प्र दिन छात्राओं द्वारा वेद मन्त्रों से जब यज्ञ किया जाता था स वातावरण गूँज उठता था। सायं काल व्यायाम लाठी तलवार मु आसनों का प्रदर्शन होता था। इस प्रकार का उत्सव विद्यापी आज तक नहीं हुआ।

लोकैषणा से मुक्ति

उत्सव का अन्तिम दिन था। प्रातः ही मन्त्री सत्यप्रिय (स्वामीजी) ने लाउडस्पीकर से घोषणा करवाई कि आज सत्यं जो संन्यास की दीक्षा लेंगे। सभी ने उन शब्दों को बड़े आश्चर्य सुना। मन के भावों को अभी तक उन्होंने किसी पर प्रकट किया था कि कहीं कोई व्यवधान खड़ा न हो जावे। सभी क लगे कि "मन्त्रीजी ने यह क्या सोचा, संस्था का आगे क्या हो पर स्वामीजी जो कहते थे, वह करते थे। उनको भला कौन सकता था। जिस व्यक्ति को पत्नी का "मोह-पाश" व "पुत्रैष न बाँध सकी और भरी जवानी में हैदराबाद सत्याग्रह में कूद प जिसको "वित्तैषणा" न बांध सकी, आर्यसमाज का रंग चढ़ते ३२ वर्ष की आयु में अर्थ संग्रह से मुक्ति ले ली, उसे भला 'लोकैष कैसे बांधती ! संन्यासकी दीक्षा लेकर एक झटके में ही विद्यापी नाता तोड़कर अपना जीवन सर्वजनहिताय समर्पण कर दिया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भ्रमण द्वारा वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार

सन् १९५० में विद्यापीठ के उत्सव पर संन्यास की दीक्षा लेकर स्वामीजी ने हरिद्वार की ओर प्रस्थान किया। वहां से ऋषिकेश, देहरादून पुनः मेरठ आदि अनेक स्थानों का भ्रमण करते हुये गोरखपुर पहुँचे। भ्रमण के विशद विवेचन से पुस्तक का कलेवर बहुत बढ़ जायगा, अतः अति सूक्ष्मतया मात्र दो चार घटनाओं का वर्णन करते हुये ही लिखना उचित होगा। जब स्वामीजी गोरखपुर से लौट रहे थे तो प्लेटफार्म पर एक वृद्ध दम्पती सर्दी से ठिठुरते हुये दिखाई दिये। स्वामीजी का अन्तर्मन स्वयं को धिक्कारने लगा, क्योंकि उनके पास उस समय एक ऊनी कम्बल व एक कश्मीरी लोई थी, सूती वस्त्र भी थे। इन्होंने तुरन्त एक सूती चादर, एक कम्बल व कुछ आसनादि उस दम्पती को बिछाने व ओढ़ने के लिये दे दिये। तब इनके मन को कितनी शान्ति व आत्म सन्तोष मिला कि वे स्वयं अपने कपड़ों की कमी को भी भूल गये।

सन् १९५२ में स्वामीजी ने निश्चय किया कि अपने पास एक पैसा भी नहीं रखेंगे। और बिना पैसा के ६॥ माह की बारह सौ मील की लगभग २०० कस्बा व ग्रामों की पैदल यात्रा की। यह यात्रा (गोवर्धन से अयोध्या तक) श्री जयन्ती प्रसादजी के अनुशासन में रहते हुये की थी। जिसमें प्रचार कार्य की निम्न प्रणाली थीः—

प्रातः ३ बजे से उठकर ४ बजे तक नित्य कर्म सन्ध्यावन्दनादि से निश्चिन्त होकर पूर्व निश्चित ग्राम में पदार्पण। झाड़ू, डलिया, फावड़े आदि लेकर ७ बजे वहाँ पहुँच जाते। ग्राम की सफाई १० बजे तक करते। १२ बजे तक स्नान, वस्त्रों की सफाई व भोजनादि। दोपहर २ बजे तक विश्राम करते। ३ बजे से ४ बजे तक ग्राम की जनता से सम्पर्क करके पूर्व निश्चित ३५ बातों की जानकारी करके रजिस्टर में समस्त परिचय सम्बन्धी बातों को अंकित करते थे। रात्रि को पुनः ग्राम के व्यक्तियों से सम्पर्क करके उस ग्राम की उन्नति

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के विषय में विचार करते व व्यक्तियों को व्यक्तिगत दुर्गुणों के त्याग व सद्गुणों के ग्रहण करने की प्रेरणा देते, उनसे अपने रजिस्टर में हस्ताक्षर करवाते। इस प्रकार जहाँ भी जाते यही कार्यक्रम चलता और यों वहां आर्य समाज का रचनात्मक कार्य आरम्भ हो जाता।

अयोध्या यात्रा समाप्त कर बिहार क्षेत्र में भी पैदल श्रम किया। वहां से बल्लभगढ़ आगये। पुनः ४० दिन की पैदल यात्रा २३ गांवों की आरम्भ कर दी। साथ में पं. भजनानन्दजी निठार वाले, व ब्रह्मचारी ओमानन्दजी रहे। ये ग्राम बल्लभगढ़, निठार, हिण्डोन, करौली आदि स्थानों के निवासी थे। कार्यक्रम वही उपरिलिखित अर्थात् यम-नियमों का पालन, कुरीतियों का बहिष्कार, मृतक-भोज-धूम्रपान, जुआ आदि का निषेध रहता था।

इसके पश्चात् ५ माह की नैपाल यात्रा आरम्भ की। इस यात्रा में स्वामीजी के साथ बिहार क्षेत्र के गुरुकुल मेंहिया (जि० छपरा) के मुख्याधिष्ठाता श्री रामानन्दजी, जि० आरा के कहथू निवासी श्री सदानन्दजी, जि० बलिया के रेवतीनगर निवासी श्री इन्द्रदेवजी साथ रहे। इस यात्रा के आनन्द का भी विशद वर्णन उनकी डायरी में अंकित है।

तत्पश्चात् उन्होंने अन्य १० साथियों के साथ बद्रीनाथ की यात्रा की। इसका एक संस्मरण उल्लेखनीय है: —

ये सभी साथी अपना भोजन स्वयं बनाते थे। एक दिन जब भोजन करने बैठ गये तब एक भूखा व्यक्ति आया और भोजन पाने की इच्छा प्रकट की। उससे पूर्व ही स्वामीजी भोजन आरम्भ कर चुके थे अतः उच्छिष्ट हो जाने के कारण अपने हिस्से का दे नहीं सकते थे। अन्य सभी साथियों ने उसे बुरी तरह दुत्कार दिया। स्वामीजी मन मसोस कर रह गये। दूसरे दिन उन्होंने एक कागज पर अपना 'मौनव्रत' का संकल्प व निराहार रहनेका निश्चय लिख सबके सम्मुख

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रख दिया। मौन की समाप्ति पर उन्होंने बतलाया कि कल मैं अपना भोजन उस भूखे को नहीं दे सका, अतः मैंने आज प्रायश्चित किया है। स्वामीजी अपनी व दूसरों की त्रुटि पर भी अनशन करके प्रायश्चित द्वारा मानसिक शान्ति प्राप्त करते थे। इससे इनका आत्मबल बढ़ता था और दूसरे व्यक्तियों पर भी सात्विक प्रभाव पड़ता था।

दयामूर्ति स्वामीजी के कुछ प्रेरक संस्मरण

(१) एक बार की घटना है। श्री विद्याव्रतजी सुनाया करते थे कि मथुरा में बवासीर की बीमारी से जब विद्याव्रतजी मुक्त हो गये। तो स्वामीजी बोले—'बेटा, कल घर जाना है अतः जितना घी, आटा हो, उसका चूरमा बनालो।' चूरमा बनने के पश्चात् बोले 'तुम भोजन करो नीचे जाकर नल पर हाथ मुँह धो मैं अभी आता हूँ, और बाजार की ओर निकल गये। शास्त्रीजी ने भोजन आरम्भ कर दिया, जब थोड़ी देर में न आये तो सोचने लगे इतनी देर कैसे होगई, देखते क्या हैं कि एक वृद्ध अन्धे व्यक्ति को साथ लेकर स्वामीजी आरहे हैं। शास्त्रीजी ने कहा -"पिताजी ! आप पहले कहते तो हम ज्यादा बना लेते अथवा बाँट कर खा लेते।" पर स्वामीजी कुछ न बोले, बड़े प्रेम से आसन बिछाया, बोले--"बाबा, बैठो, भोजन करो।" अपने हिस्से का आधा भोजन परोस दिया, फिर पूछा 'बाबा और लोगे" तो वृद्ध ने कहा--"हाँ, अभी पेट नहीं भरा"। स्वामीजी ने शेष भी परोस दिया। वृद्ध तृप्त होगया, बोला मैं कई दिन से भूखा था। स्वामीजी उसे देख-देख प्रसन्न होरहे थे। इतना आनन्द उन्हें स्वयं खाने में नहीं आता, जैसा आनन्द वे अन्न उसको खिलाकर अनुभव कर रहे थे। जब भी कोई स्वादिष्ट भोजन घर में भी बन जाते अवश्य किसी गरीब को खिलाकर खाते थे।

(२) गृहस्थ में रहते हुये भी स्वामीजी प्रतिदिन दोपहर को घर से भोजन बगीची पर ही मँगाया करते थे। जैसी घी मे चुपड़ी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रोटी उनके लिये आती थीं वैसी ही कौए, कुत्तों के लिये आती निश्चित समय पर पक्षी व कुत्ते आ जाया करते थे। थोड़ी होजाती और पक्षी लौट जाते, तो वे कहते, आज तो भोजन ला में देरी कर दी, हमारे मेहमान लौट गये। उन्हें देखते ही मो कौये, गिलहरी, आदि पक्षी आ जाते और उनकी हथेली रोटी टुकड़े उठा-उठा कर खाते थे।

(३) वे दीन-दुखियों की सेवा के लिये हर क्षण तत्पर रहते थे एक ब्राह्मण, जिसके हाथ काँपते थे, उसे भोजन बनाना तो दू भोजन खाने में भी परेशानी होती थी। वे प्रतिदिन उसके लि घर से भोजन बनवाकर ले जाते और स्वयं अपने हाथों से खिला आते, उनकी अनुपस्थिति में बच्चे जाकर भोजन खिलाते थे।

(४) आर्यसमाजी होने से पहले भी श्राद्ध के दिनों में डलि भरकर पूये व एक बाल्टी में खीर ले जाकर गरीब परिवारों बाँटकर आते थे। ऐसे एक नहीं अनेक उदाहरण उनके जीवन मिलते हैं। हैदराबाद सत्याग्रह में दो-दो रोटी मिलती थीं, उनमें भी स्वामीजी एक या आधी दूसरों को दे दिया करते थे।

(५) एक बार जब वे बिहार से लौट रहे थे, किसी भक्त उनके थैले में १ पाव के लगभग किसमिस रख दीं। स्वामी जी ज ट्रेन में बैठे, एक भूखे बच्चे को उन्होंने किसमिस दे दीं। दूसरे दि प्रातः नित्य कर्म से निवृत्त हो जब उनकी कुछ खाने की इच्छा हु तभी स्टेशन मास्टर ने उससे भी अच्छी ताजा किसमिस खाने लिये लाकर दीं। स्वामी जी कहते थे—"मैं अपनी चिन्ता क्यों क जब स्वयं प्रभु मेरा पहले से पहले ध्यान रखते हैं ?" वे कहते थे— जितना लक्ष्मी से दूर भागता हूँ,, लक्ष्मी उतना ही मेरे पीछे-पी आती है।"

(६) एक दिन वे गुरुकुल कांगड़ी में एक बड़े हॉल में बैठे अपनी पुत्री से कहने लगे, "बेटी ! यह हॉल मेरा है, न ? बेटी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समझ न सकी कि ऐसा क्यों कह रहे, है ? इस पर स्वामी जी नें पुनः कहा 'देखो बल्लमगढ़ की बड़ी-बड़ी हवेली छोड़ीं तो विद्यापीठ में भवन बन गये, विद्यापीठ छोड़ी तो जहाँ भी जाते हैं रहने-सहने की सारी सुख-सुविधा मिलती रही। अर्थात् वे कहते थे 'त्याग में ही सुख है। प्रभु देता है, पर उनको देता है जो दूसरों को देते हैं।'' वेद—कहता है : —

"देहि मे ददामि ते" "तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः" स्वामी जी ने अपने जीवन में वेद के उपर्युक्त सन्देश को अपनाया था।

विरजानन्द वैदिक साधनाश्रम की स्थापना

दिसम्बर सन् १९५९ में मथुरा में जब महर्षि दयानन्द दीक्षा शताब्दी मनाई गई तो श्रीईश्वरीप्रसाद जी 'प्रेम' (सम्पादक तपोभूमि एवं मन्त्री श्रीविरजानन्द ट्रस्ट मथुरा)की पुण्य प्रेरणासे वहीं पण्डाल में किसी ठोस और रचनात्मक कार्य के विचार से आश्रम योजना की रूपरेखा बनी। २६ फरवरी को डी० ए० वी० स्कूल में पुनः बैठक हुई और दिनांक २३ जून से दिनांक ३० जून १९६० में श्री विरजानन्द ट्रस्ट के अन्तर्गत विरजानन्द वैदिक साधनाश्रम के उद्घाटन के उपलक्ष में वृहत् यज्ञ व शिविर का आयोजन रखा गया। इसमें पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी, पूज्य महात्मा आनन्दभिक्षु जी, पूज्य स्वामी मुनीश्वरानन्द जी, पं० सत्यप्रिय जी, श्री बाबूलाल जी दीक्षित आदि अनेक संन्यासी, वानप्रस्थी, विद्वान् व गृहस्थी महानुभाव भी आगरा, भरतपुर, बयाना, हिण्डौन, झाँसी, मथुरा भगवतगढ़, सवाई-माधोपुर व मथुरा जिले से पधारे। सभी ने तन, मन, धन, से सहयोग देकर स्थान-स्थान पर वैदिक जीवन साधना शिविर चलाने का संकल्प किया। जनतामें प्रेम भावना बढ़ी। इस प्रकार अपने सम्पूर्ण साधना-काल में निर्मित जीवन पुष्पों को 'आश्रम परिवार' के रूप में उन्होंने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मालाकार बना दिया। जिला भरतपुर से लेकर सवाई माधोपुर, मथुरा, आगरा के आर्य महानुभावों का वे एक ऐसा संगठन बना गये मानों सभी एक ही परिवार के सदस्य हैं। उनके जीवन काल में मथुरा आश्रम पर व अन्य स्थानों पर अनेक शिविरों का आयोजन हुआ, उनमें पुरुषों, महिलाओं व बच्चों की अच्छी उपस्थिति होती थी। सभी में उत्साह रहता था। पारस्परिक प्रेम व्यवहार दर्शनीय होता था। स्वामी जी ने सभी को अपनी प्रेमरज्जु से बांध लिया था। शिविर के अतिरिक्त मथुरा आश्रम में प्रतिदिन होने वाले प्रातः कालीन यज्ञ में भी उपस्थिति इतनी होती थी कि यज्ञ-वेदी छोटी दिखलाई देती थी। सभी को रजिस्टर में अपनी उपस्थिति लिखनी होती थी। अगर कोई बहिन, मां, भाई, किसी कारण वश यज्ञ में न आ पाता तो दोपहर को स्वामी जी उसके घर जाते और न आने का कारण पूछते। सभी का दुःख-दर्द स्वामी जी का अपना दुःख-दर्द बन जाता था। वे एक आत्मीय जन की भाँति प्रत्येक के कष्ट निवारण का यथाशक्ति प्रयत्न करते थे।

दि० १७ दिस० से २२ दि० सन् १९६० में पहला शिविर मथुरा आश्रम पर हुआ। श्री वेदमुनि का प्रतिदिन प्रवचन होता था। शिविर के मुख्य संयोजक श्री बंशीधर जी बनाये गये। निम्न व्यक्तियों ने साधक के रूप में भाग लिया तथा अपने भविष्य जीवन को सुधारने का संकल्प लिया। साधक थे—श्री पुरुषोत्तमदास जी (पिताजी) श्री विद्याराम जी श्री वृजवासीलाल जी, श्री केशवदेव जी वानप्रस्थी, श्री केदारनाथ जी श्री पन्नालाल जी हकीमपुर वाले एवं श्रीयुत् प्रेम जी इत्यादि।

द्वितीय शिविर दि० २१ जनवरी से २५ जनवरी' ६१ को आश्रम में पुनः लगा। इस शिविर में बहिन लीलावली जी ने वानप्रस्थ की दीक्षा ली, श्रीमती बहिन कस्तूरी देवी जी ने कुटिया बनवाकर आश्रम में रहने के विचार व्यक्त किये। श्रीयुत् प्रेमजी ने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भी ५० वर्ष की आयु के पश्चात् वानप्रस्थकी दीक्षा का वचन दिया। श्री लाला रतनलाल जी भरतपुर वालों ने जीवन को उज्ज्वल बनाने की भावना प्रकट की।

इस अवसर पर सर्व सम्मति से कैलादेवी पर होने वाली पशु-बलि को रोकने के लिये पैदल यात्रा द्वारा प्रचार की योजना बनाई गई।

पशु-बलि निरोधक प्रचार तथा वेद मन्दिर का निर्माण

स्वामीजी के प्रिय शिष्य ब्रह्मचारी ओमदत्त जी ने करौली में कैलादेवी के मन्दिर पर धर्म के नाम पर होने वाली मूक प्राणी-भैंसे बकरों की बलि के विषय में जब स्वामी को बतलाया तो उनका अन्तर्मन दुःख से कराह उठा ! परमात्मा की मूक प्रजा की यह नृशंस हत्या !! धर्म के नाम पर यह पापाचार !!!

स्वामी जी ने इस नारकीय काण्ड की समाप्ति का दृढ़ संकल्प कर लिया। फरवरी सन् १९६० में हिण्डौन आर्य समाज में इस विषय पर मीटिंग हुई। सभी ने सहर्ष अनुमोदन किया और यथाशक्ति तन, मन, धन, से सहयोग देने का वचन दिया। फिर स्वामीजी श्री प्रह्लादकुमार जी के साथ सवाई माधौपुर गये। वहाँ भी श्री सरस्वती प्रसाद जी व श्री चरणदास जी वेदी ने अच्छा सहयोग दिया। फिर गंगापुर, हिण्डौन, मथुरा, हरिद्वार, भरतपुर; बल्लभ-गढ़, भुसावर, झिरना, आदि अनेक स्थानों पर जाकर इस विषय पर विचार किया और मेले के समय पर जाकर पशुबलि रोकने का प्रयत्न किया। पर न तो उस समय अपना कोई ठहरने का निजी स्थान था न भोजनादि की व्यवस्था, फिर भी श्री सुरेशचन्द्रजी आर्य (स्वामीजी के छोटे दामाद) ने सभी प्रकार की व्यवस्था में पूरा सहयोग दिया और आगे भवन निर्माण के लिये धन संग्रह करने में भी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यथाशक्ति सहयोग किया। उपर्युक्त सभी स्थानों के आर्य महानुभावों के द्वारा दिये गये पैसे से शीघ्र ही ८ हजार रुपये लगाकर वेद मन्दिर का निर्माण कराया गया। मथुरा आश्रम पर २६ जनवरी सन् १९६१ को श्री पूज्य स्वामी आनन्दभिक्षुजी ने सम्मति दी कि हमको पशु बलि रोकने के लिये तीन प्रकार से कार्य करना चाहिये— प्रचार द्वारा, अनशन द्वारा, सत्याग्रह द्वारा। ८ फरवरी सन् ६१ को आर्यसमाज भरतपुर में मीटिंग हुई और पैदल यात्रा की योजना बनी। दि० २३ फरवरी से मथुरा से पैदल यात्रा आरम्भ होकर भरतपुर, बयाना, हिण्डौन करौली व कैलादेवी के आस-पास गांवों का भ्रमण करते हुये १३ मार्च को कैलादेवी पहुँचे और दि० १६-१७ मार्च को यजुर्वेद यज्ञ का आरम्भ व वेद मन्दिर का उद्घाटन किया गया।

उपरिलिखित योजना के अनुसार कार्य आरम्भ हुआ। सभी स्थानों के आर्य भाइयों ने प्रचार यात्रा में सहयोग दिया। दि० १५ मार्च से २५ मार्च सन् ६१ तक श्री पूज्य महात्मा आनन्दभिक्षुजी महाराज की अध्यक्षता में पशुबलि विरोध का डट कर प्रचार हुआ। भोजन व्यवस्था में स्वामीजी की धर्मपत्नी सुमित्राजी, बहिन लीलावती जी व पुत्री विद्यावती जी का विशेष सहयोग रहा। इस बार लगभग १०० भाई बहिनों ने प्रचार में भाग लिया। ज्वालापुर वानप्रस्थाश्रम से श्री रेवतीप्रसाद जी पुरुषार्थी, वानप्रस्थी श्री मुन्नालालजी व श्री नत्थासिंह जी 'आजाद', श्री किशोरीलालजी श्रीचन्द जी भजनोपदेशक आदि अनेक महानुभावों ने भाग लिया। प्रातः व सायं दोनों समय पुरुष व महिलायें बाजार में होते हुये देवी के मन्दिर तक भजन गाते व नारे लगाते हुये जाते। ढकेल पर लाउडस्पीकर व बाजे की व्यवस्था भी रहती थी। प्रतिदिन २-३ घण्टे प्रातः सायं जुलूस निकालते। पुनः दोनों समय वेद मन्दिर पर यजुर्वेद के मन्त्रों से यज्ञ होता। दोपहर व रात्रि को भी पाण्डाल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में भजन व प्रवचन होते। वैदिक साहित्य वितरित किया जाता। कैलादेवी के मन्दिर के सामने ही श्री स्वामी शिवानन्दजी और श्री मुंशी पन्नालालजी ने अनशन किया। ग्रामों के पंचों के प्रतिनिधियों द्वारा यह कुकृत्य मिटाने का विश्वास दिलाने पर अनशन तोड़ा गया। एक शिष्ट मण्डल पशुबलि विरोध का प्रस्ताव लेकर करौली के राजा के पास गया। राजा ने भी इस बार भैंसा नहीं काटा और आया हुआ भैंसा वापिस भेजा गया। वर्षों तक कैलादेवी के मेले के अवसर पर यह प्रचार कार्य चलता रहा। धीरे २ इसका जनता पर भी अच्छा प्रभाव पड़ा। दिनों दिन पशु बलि कम होती गई। लोग समझाने पर बकरों को बिना कटवाये या तो छोड़ देते या वापिस ले जाते। अन्ततोगत्वा राज्य सरकार की ओर से ही मूक प्राणियों का धार्मिक स्थान पर वध न किये जाने का कानून बन गया। इस प्रकार स्वामीजी द्वारा चलाया गया यह अभियान पूर्णरूपेण सफल हुआ।

सत्य प्रकाशन की योजना

मानव जीवन निर्माण के लिये साधना शिविरों की उपयोगिता के साथ साथ सत् साहित्य की उपलब्धि भी परमावश्यक है। इस बात को ध्यान में रखते हुये स्वामीजी ने विचार किया कि "गीता प्रेस गोरखपुर" की भाँति सस्ता और सुन्दर साहित्य भी मथुरा आश्रम से प्रकाशित किया जावे। ग्राम बल्लभगढ़ में जब स्वामीजी रहते थे, तब 'सत्य प्रकाशन' के नाम से "नित्य कर्म विधि', जिसका मूल्य "नित्यकर्म प्रतिज्ञा" होता था, छपवाया करते थे। श्रद्धालु व्यक्ति सौ-सौ प्रतियों का लागत मूल्य दान में दिया करते थे। उससे ही "नित्यकर्म विधि" अपने छोटे आकार में छपा करती थी। उसी सत्यप्रकाशनको वृहदाकार देने की योजना बनाई गई। दि० ५ फर० से १० फर० सन् १९६२ में श्रीस्वामीजी ने बयाना, हिण्डौन, सूरौठ, बल्लभगढ़ आदि स्थानों पर सत्यप्रकाशन योजना का प्रचार व आर्थिक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सहायता के लिये प्रयत्न किया। साथमें श्री ईश्वरी प्रसादजी "प्रेम" मास्टर नन्द लालजी श्री यशपालजी शास्त्रीजी थे। उन्होंने स्थानीय धार्मिक प्रेमियों द्वारा हिण्डौन से ५०००) रुपये के वायदे (तपोभूमि के आजीवन सदस्यों सहित) तथा बयाने से १०००) के वायदे (आजीवन सदस्यों सहित) करवाये। ३०००) मथुरा से तथा १०००) झाँसी से प्राप्ति के वचन मिले फिर हिण्डौन में मीटिंग रखी गई जिसमें मथुरा में "सत्यप्रकाशन" के उद्‌घाटन की तिथि ४ मार्च सन् ६२ निश्चित की गई। ईश्वर की असीम कृपा से 'सत्यप्रकाशन' के उद्‌घाटन का कार्य पूज्य श्री आचार्य कृष्ण जी द्वारा मथुरा में सानन्द सम्पन्न हुआ, जिसमें हिण्डौन, बयाना, भरतपुर, बल्लभगढ़, खेडली, मथुरा, आगरा आदि के महानुभावों ने सोत्साह भाग लिया लगभग १० हजार रुपया एकत्रित हुआ। पुस्तकालय के लिये एक कमरा की नींव लाला नानिगराम जी रामपुरा वालों द्वारा लगाई गई। पटाव के लिये इन्होंने पत्थर दिये।

स्व० बद्रीप्रसाद जी आर्य (बयाना) सत्य प्रकाशन समिति के प्रधान तथा श्री ईश्वरीप्रसाद 'प्रेम' मथुरा मन्त्री बने। श्रीयुत् 'प्रेम' जी ने सत्य प्रकाशन के संचालक का समस्त दायित्व सँभाला और तदर्थ श्री स्वामीजी की प्रेरणा से स्वयं का जीवन भी लगाया।

इसके बाद श्री स्वामी जी मार्च, अप्रैल, मई मथुरा आश्रम रहे। जून सन् ६२ से दिसम्बर सन् ६२ तक ज्वालापुर वानप्रस्थाश्रम में रहे। प्रतिदिन प्रातः व सायं जिन महात्मा, विद्वानों के प्रवचन वहाँ होते थे स्वामीजी उन्हें बड़े ध्यान से श्रवण करते, पुनः सविस्तार अपनी कापी में लिखते, उन पर 'मनन' करते, व 'निदिध्यासन' करते हुये अपने जीवन में उनका 'साक्षात्कार' करते। यह उनका प्रतिदिन का नियम था।

उन दिनों श्रद्धेय प्रभुआश्रित जी, पूज्य देवमुनिजी व श्री पूज्य ब्रह्ममुनि जी के प्रवचन अधिकतर हुये। उनके उपदेशों से आज भी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पाठक उनकी दैनिन्दिनी पढ़कर लाभान्वित हो सकते हैं। प्रत्येक उपदेश उल्लेखनीय है। अतः क्या छोड़े, क्या लिखें ? फिर भी कहीं-कहीं से संक्षेप में लिखने का प्रयत्न किया है।

उपदेशामृत–सार

[स्वामी ब्रह्ममुनिजी : जीव के वायु नाम की व्याख्या]

वायु हवा को भी कहते हैं। जिस प्रकार गन्ध का ग्रहण करना वायु का मुख्य कर्त्तव्य है। वह जहाँ बहेगी वहाँ की गन्ध को ग्रहण करती हुई बहेगी—चाहे सुगन्ध हो, चाहे दुर्गन्ध। इसी प्रकार यह मनुष्य भी संग द्वारा दूषित व भूषित होता रहता है। अगर यह सत्संग, स्वाध्याय और ईश्वर-ध्यान में लग जावे तो इसका आत्मा उच्च और पवित्र हो जावे। अगर कुसंग—विषयभोग, स्वार्थपरता में फंस जावे तो आत्मा भी अपवित्र और पतित हो जावे। जीव के दो स्वाभाविक गुण हैं ज्ञान और प्रयत्न। जैसा ज्ञान मिलेगा वैसा ही प्रयत्न करने लगेगा। और फिर सुख दुःख भी उसी प्रकार प्राप्त करेगा। अतः मानव का कर्त्तव्य है कि अगर वह सुखाभिलाषी है तो कुसंग से बचे और सत्संग स्वाध्याय व ईश्वर-आराधना अपना समय व्यतीत करे।

भक्ति का स्वरूप

भज्—सेवायाम् धातु से भक्ति शब्द बना है।

सच्ची श्रद्धा से की हुई भक्ति वह है, जिसमें करने वाले और कराने वाले दोनोंको आनन्द आवे। भक्ति का आनन्द वर्णनातीत है। आत्मा पर उसका स्थायी प्रभाव पड़ता है और उसका दोनों ही अनुभव करते हैं। वह भक्ति चाहे गुरु-शिष्य की हो, चाहे पिता-पुत्र की, चाहे पति-पत्नी की, चाहे मित्र-मित्र की, चाहे किसी दुःखी आत्मा और सहायक श्रद्धालु की हो। उस भक्ति रस को सोम रस माना गया है। उसके अमृतमय आनन्द को वही जानता है जो अन्तरात्मा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

से प्रेम करता है। प्रभु की जब हम इस प्रकार सच्ची श्रद्धा एवं लगन से भक्ति करते हैं तभी उस परमानन्द की प्राप्ति होती है, अन्यथा तो हमारी भक्ति अहंकार से दूषित हो जाती है।

आत्मा का परम मित्र परमात्मा को बनाओ। परमात्मा को ही माता, पिता, गुरु, स्वामी, सखा, बन्धु सब कुछ समझो। तुमको जो कुछ प्राप्त हुआ है उस सबको परमात्मा की देन समझ कर उसी को समर्पित कर दो अर्थात् परमात्मा की प्रजा के हितार्थ न्यौछावर कर दो। यही भक्ति का रहस्य है। तभी तो वेद कहता है— 'मुझको प्राप्त करना चाहते हो तो सब कुछ मुझे देकर ब्रह्मलोक की प्राप्ति करो—मह्यं दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्।'' [स्वामीजी ने उपर्युक्त सन्देश का अपने जीवन में अक्षरश: पालन किया था।]

महात्मा प्रभु आश्रित जी के प्रवचन का सारांश

ईश्वरीय नियमानुसार जन्म लेते समय मनुष्य का सिर पहले आता है अर्थात् नम्रता और झुकना उसका पहला कर्त्तव्य है। दूसरे वह आ उ, आ उ करके रोता है मानो परमात्मा को पुकार रहा हो। अत: प्राणीका दूसरा कर्त्तव्य है—प्रभुका स्मरण करना। अहंकार और ईर्ष्या जब तक जीवन में हैं, संसार से छुटकारा नहीं मिल सकता। जन्म-मृत्यु, सुख-दु:ख रूपी बन्धनों में तब तक प्राणी बँधा रहेगा। अहंकार की उत्पत्ति अविद्या से होती है। अविद्या-ग्रस्त प्राणी अपने को बड़ा, अन्यों को तुच्छ समझ कर घृणा करता है। पाप से बचने के लिये जब वह एकान्त में अपने से बड़ों की ओर दृष्टि डालता है तो उसे संसार में एक से एक बड़ा दिखाई देता है। उनको देख उसका अभिमान नष्ट हो जाता है। दूसरों के प्रति घृणा के भाव भी तिरोहित हो जाते हैं। अन्त में उसे ज्ञान होता है कि सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम तो परमात्मा ही है और हम सब उसके अमृत पुत्र हैं।

ईर्ष्या का प्रादुर्भाव स्वार्थ के कारण होता है। अगर प्राणी अपनी मृत्यु को अपने सम्मुख रखे और सांसारिक पदार्थों को नाश-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वान् समझे तो स्वार्थ वृत्ति के साथ-साथ ईर्ष्या भी समाप्त हो जाती है, क्योंकि संसार से विदा लेते समय सांसारिक वस्तुयें साथ नहीं जातीं। अतः अहंकार और ईर्ष्या से बचने के लिये सदैव प्रभु को और मौत को याद रखना चाहिये। कवि के शब्दों में—

दो बातों को याद रख, जो चाहे कल्याण।
'नारायण' एक मौत को, दूजे श्री भगवान्॥

प्रभु का प्यार पाने की कुञ्जी

जो व्यक्ति प्रभु का प्यार पाना चाहता है, उसे चाहिये वह सर्व प्रथम ईश्वर के अमृत पुत्रों (मानव मात्र) के साथ प्रेम करना सीखे। प्रभु की सृष्टि के सारे पदार्थ सबके साथ मधुरता का व्यवहार कर रहे हैं। **यथा:—**

मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्नः सन्त्वोषधी।

प्राणी मात्र के लिये वायु मीठी २ बह रही है। नदियाँ अमृत-पान करा रही हैं। औषधियाँ नव जीवन दे, शान्ति दे रही हैं।

मधुनक्तमुतोषमो मधुमत्पार्थिवं रजः, मधु द्यौरस्तु नः पिता॥

"रात मीठी है, उषा मधुर है, पृथ्वी की धूलि में अमृतमय खाद्यान्न भरे पड़े हैं। आकाश रूपी पिता भी सबके लिये सुखदायक है। जब प्रभु ने प्रकृति के कण-कण में सबके लिये मिठास भरी है तब हे प्राणी तेरी बोली में, तेरे कार्यों में मिठास का अभाव क्यों? प्रभु की वाणी वेद मधुर है। तू वेद का मधुर पान कर। एक बार स्वयं पीकर देख, फिर तू बार २ पियेगा और दूसरों को भी पिला-येगा। और तभी प्रभु के प्यार का अधिकारी बनेगा।"

स्वामीजी ने "सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् मा ब्रूयात् सत्यमप्रियम्" को जीवन में अपनाया था।

कुछ व्यावहारिक अशोभनीय बातें

१. पुस्तकों के पृष्ठों को अंगुली से थूक लगाकर पलटना।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२. दूध, दाल, सब्जी, पानी में गिरी अखाद्य वस्तु को अंगुली से निकालना।

३. बालों को हाथ से साफ करने के पश्चात् बिना हाथ धोये कोई वस्तु खाना।

४. मुँह पर मुँह रखकर बातें करना।

५. खाँसी उठने पर या कफ आने पर उसे बिना थूके अन्दर ही निगल जाना।

६. नाखून बड़े रखना। ७. दाँतों से नाखून काटना।

८. अपना झूँठा खिलाना व अन्य का खाना।

९. भोजन करते समय बातें करना।

१०. चलते-फिरते जहां मिला वहीं खाने लग जाना।

देवदत्तजी शास्त्री : "मृत्यु भय सब भयों से भयंकर है"

संसार में विद्वान्-मूर्ख, गरीब-अमीर, राजा-रंक, अकेला व परिवार वाला, दुखी-सुखी, चोर-साहूकार, रोगी-निरोगी सभी मृत्यु भय से भयभीत दिखाई देते हैं। अतः विचार करें कि आखिर इसका मुख्य कारण क्या है ?

संसार में देखा जाता है कि किसी प्राणी की इच्छा के विरुद्ध जब उसकी कोई प्रिय वस्तु छीनी जाती है तो उसे दुःख होता है और वह वस्तु जितनी अधिक प्रिय होती है उतना ही घोर कष्ट होता है। इसीलिये कहा है—"अपने व अपनों के तन, धन, यश पर जब आंच आती है तो कष्ट होता है।" जिनका हमसे कोई व्यक्तिगत सम्पर्क नहीं होता, हम आये दिन उनको मृत्यु के समाचार व सम्पत्ति के विनाशके समाचार अखबारोंमें पढ़ते व सुनते हैं पर उससे हमें क्षणिक वेदना होती है। और उसके पश्चात् उसे शीघ्र ही भूल जाते हैं।

इस प्रकार कष्ट के कारण ममता और मान नामक दो 'मल' प्रतीत हुये। इनकी मलिनता में मनुष्य लोभ, मोह और क्रोध के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वशीभूत होकर दुखी-सुखी हुआ करता है, और पाप की गठरी सिर पर लादे जाता है। येन केन प्रकारेण धन एकत्रित कर यशस्वी बनना ही उसके जीवन का ध्येय बन जाता है। पर जब मृत्यु के दर्शन होते हैं तो उसका धैर्य लुप्त होजाता है। बेचैन होकर हाहाकार करने लगता है। जो व्यक्ति हर क्षण मृत्यु को सामने देखता है और सांसारिक पदार्थों में आसक्ति नहीं रखता, प्रभु की धरोहर समझ उनका उपभोग करता है, उसको सांसारिक वस्तुयें या अपना शरीर त्यागते हुये वेदना नहीं होती। वह प्रभु इच्छा समझ प्रसन्नता से सर्वस्व त्यागने को हर क्षण तत्पर रहता है।

स्वामी जी कहा करते थे कि मैं प्रतिदिन प्रातः ध्यानावस्था में अपनी व अपने प्रिय व्यक्ति की मृत्यु की कल्पना किया करता हूँ। उससे मुझे प्रभु चिन्तन में बड़ा सहयोग मिलता है क्योंकि प्रभु दुःख में ही याद आता है। वे यह भी कहते थे, कि "मेरे सारे कार्य पूर्ण हो गये हैं, जब प्रभु की इच्छा हो मुझे इस जीवन से मुक्त कर दे।" वे बड़ी मस्ती से गाया करते थे, कि "प्रभु के बुलाने पर मैं खुशी-खुशी जाऊँगा।" मृत्यु से उन्हें किंचिन्मात्र भय नहीं था।

स्वामी जी की भाँति जो अपने जीवनको ही नहीं अपितु प्रतिदिन को भी चार भागों (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास) में विभक्त कर एक-एक क्षण का सदुपयोग करते हैं और अंकगणित के योग, शेष, गुणा, भाग के समान दिनचर्या चलाते हैं, वे प्रातः-सायं भक्ति द्वारा प्रभु को अपना बना कर शक्ति-संचय करते हैं। सांसारिक कार्यों में दिन में शक्ति का ह्रास हो जाता है तो पुनः सायंकालीन सन्ध्या द्वारा उस क्षीण शक्ति को दुगुना कर लेते हैं और रात्रि को अथवा जब भी समय मिलता है उस शक्ति (ज्ञान) को संन्यासी की भाँति वितरित कर देते हैं। वे मृत्यु से पार हो जाते हैं।

जिस प्रकार एक कुशल व्यापारी प्रतिदिन रात्रि को अपनी आय का चिट्ठा बनाता है, उसी प्रकार हमें भी अपने जीवन का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रतिदिन चिट्ठा बनाना चाहिये कि कहीं हम घाटे में तो नहीं हमारा मानव जीवन व्यर्थ तो नहीं जा रहा। अगर जा रहा है सोचो, सँभलो कि क्या करना है, स्वामीजी हर क्षण कहते थे कि "न जाने कब घण्टी बज जावे।"

उपर्युक्त कथनानुसार अगर जीवन बन जाये तो मृत्यु से ह भयभीत न हों, अपितु मृत्यु हमारी सहचरी बन जावे।

जीवन के लिये अनुकरणीय सन्देश

१. उधार से ऐसे डरो, जैसे मौत से।

२. परमात्मा पुरुषार्थी की मदद करता है, प्रमादी की नहीं।

३. चरित्र का बीज बोकर उद्देश्य की फसल काट लो।

४. प्रत्येक कार्य आरम्भ करने से पूर्व उसका परिणाम अच्छी प्रकार सोच लो।

५. अपनी शक्ति से बाहर कार्य लाभ विदित होने पर भी न करो।

७. सत्य और श्रमसे थोड़ा भी कमाया धन सुखदायक होता है, जबकि असत्य और अन्याय से उपार्जित असंख्य धन भी दुखदायी होता है।

८. अपना स्वभाव हँसमुख बनाने का यत्न करो।

९. प्राणिमात्र का दुःख अपने दुःख के समान समझो।

१०. जीव कुछ खाता-पीता नहीं, कर्मानुसार शरीर के बन्धन में और इन्द्रियों के विषयों में फँसकर दुःख उठाता है।

११. डर का कोई स्थान नहीं, क्योंकि ईश्वर सर्वत्र व्यापक है।

१२. आमदनी से कम खर्च करना, कर्ज से डरना, सादगी से रहना, विशेष धन वालों की नकल नहीं करना, ऐसे आचरण वाला भाग्यशाली होता है।

१३. मित्र गणों से लेन-देन दुःखप्रद होता है।

१४. भोजन और भाषण मृदु और सात्विक होना चाहिये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१५. दूसरों में उनके गुणों का अवलोकन करने से प्रेम की वर्षा होती है और द्वेष नष्ट होता है।

१६. अस्पतालों में रहने से मनुष्य को अपने कर्मफल का बोध होता है।

१७. धार्मिक जेल यात्रा करने से आत्मबल बढ़ता है।

१८. धार्मिक पुरुष विपत्ति को ईश्वर की चेतावनी मानकर घबराते नहीं।

१९. धार्मिक व्यक्ति निर्बलों को साहस बँधाता है।

२०. कमाया हुआ धन अपना नहीं होता, बल्कि परोपकार में लगाया हुआ अपना होता है।

"बेकार है वह दौलत, जो पर काज में न व्यय हो।
दुखिया अनाथ-पालन, करने को नाथ ज़र दो॥"

२१ खाया हुआ अपना नहीं बल्कि पचाया हुआ अपना होता है।

२२. नादान की दोस्ती (अज्ञान की मित्रता) जान का खतरा।

२३. दाना दुश्मन भी अच्छा।

२४. कम खाना, गम खाना, कसर खाना ये गुण तन, मन और आत्मा के लिये हितकारी हैं।

२५. अभिमान आने पर अपने से बड़ों को देखना और निराशा में छोटों को देखना, मनुष्य को सन्तुलन में रखता है।

२६. प्रेम से दुश्मन नहीं होते, प्रेम से मित्र बनते हैं, प्रेम से विपत्ति में मदद मिलती है।

वानप्रस्थाश्रम का रहस्य

वानप्रस्थ की दीक्षा लेने के पश्चात् मनुष्य यह सोचने लगता है कि अब हमारे सब झंझट मिट गये। अब हम आर्थिक चिन्ता से मुक्त हुये, काम, क्रोध, लोभ, मोहकी बेड़ी कट गई; अब तो हमें पूर्ण विश्राम कर आनन्द से रहना है। पर यह विचार हमको गर्त में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

डाल देगा। अर्थात् यह आश्रम गृहस्थ से जितना उच्च है उतनी ही इसमें जिम्मेदारियाँ अधिक बढ़ जाती हैं। गृहस्थ में हमें केवल अपने परिवार की चिन्ता थी, उनके पालन-पोषण के लिये अर्थ संग्रह करना पड़ता था पर वानप्रस्थ लेने के पश्चात् सम्पूर्ण गृहस्थों को ऊँचा उठाने व उत्तम बनाने की जिम्मेदारी अनुभव करनी चाहिये। अपनी ईश्वर भक्ति, अपने शुद्ध आचरण और व्यवहार द्वारा दूसरों की आत्मिक उन्नति करनी चाहिये। अपने तप-त्याग और पुरुषार्थ द्वारा सब गृहस्थियों व ब्रह्मचारियों का कल्याण करना वानप्रस्थी का कर्त्तव्य है। स्वामीजी ने स्वयं ३६ वर्ष की आयु में ब्रह्मचर्य पालन की प्रतिज्ञा की थी। ५० वर्ष की आयु में वानप्रस्थ की दीक्षा व ६० वर्ष की आयु में संन्यास की दीक्षा ले ली थी। उन्होंने आरम्भ से ही अपने जीवन में यम-नियमों के पालन का पूर्ण ध्यान रखा था अतः उन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन से ही दूसरों के जीवन का निर्माण किया था। जिस २ व्यक्ति के सम्पर्क में स्वामीजी आते थे, उस-उस व्यक्ति पर इनके जीवन का प्रभाव पड़ता था और स्वभावतः ही उनके बतलाये मार्ग पर चलने के लिये व्यक्ति कटिबद्ध होकर प्रतिज्ञा कर लेता था।

स्वामीजी की कथनी-करनी में विरोध न था, वे कहते पीछे थे अपने जीवन में उन गुणों को धारण पहले करते थे। स्वामीजी ने कभी स्टेज पर बैठकर भाषण नहीं दिया, अपितु वे संगोष्ठी द्वारा परस्पर वार्तालाप से सबके सुख में सुखी, सब के दुःख में दुखी होते हुये, उनके जीवन की समस्याओं को सुलझाते हुये, बिना दोषारोपण किये, सहज भाव से व्यक्ति की त्रुटियाँ दिखलाते हुये व उनसे होने वाली हानियाँ बतलाते हुये, दोषों को त्यागने व अच्छाइयों को जीवन में अपनाने के लिये प्रेरणा करते थे। उनकी दैनिन्दिनियों में सैकड़ों व्यक्तियों ने अपने दुर्गुणों को त्यागने के लिये व सद्गुणों को धारण करने के लिये अपने हाथों से स्वयं हस्ताक्षर किये थे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जब भी पुनः स्वामीजी उन व्यक्तियों से मिलते थे तब उन प्रतिज्ञाओं के पालन करने व न करने के विषय में पूछते थे। अगर कोई व्यक्ति पालन नहीं कर पाता था तो उसे जुर्माना देना पड़ता था। एक बार मोदीजी अपनी की हुई प्रतिज्ञा पूरी नहीं कर पाये तो स्वामी जी ने एक रजाई बनवाकर किसी गरीब को देने का जुर्माना उनके ऊपर कर दिया और वह उन्हें पूरा करना पड़ा। साथ में स्वामीजी ने यह भी कहा कि अगर तुमने पुनः प्रतिज्ञा भंग की तो प्रतिदिन २ आने के हिसाब से जुर्माना देना पड़ेगा, अस्तु।

इसके अतिरिक्त स्वामीजी वानप्रस्थी व संन्यासी होने के पश्चात् जिस किसी के यहाँ भोजन करते थे उनके यहां सत्संग अवश्य करते थे। उनका कहना था कि अगर मैं इनको विना ज्ञान दिये भोजन करूँगा तो इनका ऋणी हो जाऊँगा। प्रत्येक व्यक्ति को अपने श्रम की कमाई खानी चाहिये। अतः मुझे भी यत्र-तत्र भ्रमण करते हुये गृहस्थियों का उद्धार करना चाहिये। रात्रि को स्वामीजी जहाँ भी शयन करते, वहाँ जितने भी व्यक्ति होते, उन्हीं को लेकर बैठ जाते थे। उनके जीवन का एक-एक क्षण प्रभु-स्मरण या परोपकार में व्यतीत होता था।

जीवन-सूर्य अस्त की ओर–

ज्वालापुर वानप्रस्थाश्रम में रहते हुये सन् १९६२ में स्वामीजी के पेट में पथरी का दर्द रहने लगा। आश्रम में कुछ दिनों उपचार कराया जब लाभ न हुआ तो वे बयाना पहुँचे। वहाँ से अपने पुत्र यज्ञप्रियजी के साथ जयपुर चिकित्सा के लिये अस्पताल में प्रविष्ट हुये। वहां डा. तलवार के संरक्षण में रहे। अस्पताल में रहते हुये भी वे प्रतिदिन अपनी दिनचर्या लिखते थे। उन दिनों उनके मन में जो विशेष भाव जागृत हुये, उन्हें उनके ही द्वारा लिखित शब्दों में यहां उद्धृत करने से पाठकों को विशेष लाभ होगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दिनांक ३०-१२-६२ को जयपुर अस्पताल में प्रातः लगभग ३ बजे पथरी के दर्द का तेज दौरा पड़ा। इन्जैक्शन से शान्त हुआ। इस पर स्वामी जी लिखते हैं : "विपत्ति में धैर्य रखने से दुःख कम होता है और आत्मा में प्रकाश होता है। प्रभु-स्मरण और मृत्यु-स्मरण पाप से बचा कर मोक्ष तक पहुँचाता है। सदा आत्म-निरीक्षण कर आत्मा पर छाई हुई कुकृत्य की कालिमा को हटाते रहो, यथाशक्ति परोपकार करते रहो, यह प्रवृत्ति आपका कल्याण करेगी, विपत्ति में मित्रवत् साथ देगी, चित्त में प्रसन्नता प्रकाशित कर तुम्हें निहाल कर देगी। दूसरों के द्वारा किये उपकार को न भूल कर कृतज्ञता प्रकट करो, और अपने द्वारा किये उपकार का कभी अभिमान मत करो। उसको ईश्वर की दया व प्रेरणा समझो। कवि के शब्दों में: —

जो तू चाहे अधिक सुख सीख ईख ते लेय ।
जो तोसों अनरस करे ताहि अधिक रस देय ।

क्योंकि दुःख-सुख अपने किये कर्मों का ही फल होता है :—

"का काको दुःख देत है, कर्म देत झकझोल ।
सुरझत-उरझत आपही, ध्वजा पवनके जोर ।।"

आगे वे लिखते हैं कि मुझे अब क्या करना चाहिये :—

१ "मैं अपने को सब तरह से ईश्वर के समर्पित कर दूँ।

२—मैं ईश्वर को अपने में ओत-प्रोत समझूँ।

३—मैं शरीर से पृथक हूँ, ऐसे शरीर अनेक बार मिले हैं और नष्ट हुये हैं।

४—मेरी आत्मा में परमात्मा व्याप्त है, और सदा रहेगा।

५ - मैं अपने अशुभ कर्मों के कारण अनेक योनियों में जन्म लेता हुआ मृत्यु कष्टों को भोगता रहा हूँ और विषयोंके क्षणिक सुखों में फूल रहा हूँ।

६ -- मुझे नित्य अपना आत्म-निरीक्षण ध्यान से करना चाहिये

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जो २ दोष व त्रुटियाँ दिखाई दें, उन्हें पूर्ण प्रयत्न द्वारा निकालना चाहिये, प्रभु-प्रेरणा प्राप्त कर प्रायश्चित करना चाहिये, जिससे अन्तःकरण पवित्र हो जावे।

७—आत्म निरीक्षण के लिये प्रातःकाल का समय अधिक अच्छा होता है।

८—मेरा आहार नपा-तुला, सात्विकी, श्रद्धा और सत्य, श्रम की कमाई का हो।

९—मेरा किसी से राग-द्वेष न हो, मैं सबको सदा प्रेम दृष्टि से देखूँ।

१०—मेरी वाणी मधुमय हो, किसी को चुभने वाली न हो।

११—मेरा लक्ष्य सदैव ईश्वर प्राप्ति हो।"

जयपुर अस्पतालमें स्वामी जी पूर्ण स्वस्थ न हो सके, बार-बार दर्द का दौरा पड़ता ही रहता था। इधर आश्रम से भी श्रद्धेय प्रेमजी व मास्टर श्री नन्दलाल जी के कई पत्र श्री स्वामी जी के पास पहुँचे कि आप आश्रम ही आ जाइये, यहीं आपकी प्राकृतिक चिकित्सा करवायेंगे। अतः स्वामीजी जनवरी सन् ६३ में आश्रम आ गये। आश्रम में रहते हुये उनके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव आते रहे पर पूर्ण रूप से दर्द कम नहीं हुआ।

अपनी ७२ वीं जन्मतिथि दि० ३१-५-६३ ज्येष्ठ शुक्ला ९ संवत् २०२० को स्वामीजी ने प्रभु से प्रार्थना की—" प्रभु, हो सकता है, मैंने अनेक बार आपकी आज्ञा का उल्लंघन किया हो परन्तु फिर भी सदैव आपका वरद हस्त मेरे ऊपर रहा। इसी प्रकार पिताजी, आगे भी मुझे अपनी चरण-शरण में स्थान देना। मैं बार-बार आपसे यही प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे मेरे सत्य संकल्प को पूरा करने की शक्ति प्रदान करते रहे।"

आपका "तुच्छ अमृत पुत्र"
सत्यानन्द "अभिलाषी"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जब कभी दर्द का दौरा पड़ता, स्वामीजी स्वयं "ओ३म्" का स्मरण करने लगते व समीपस्थ व्यक्तियों से ईश भक्ति के भजन सुनते। ३ जून को शाम ७ बजे से रात्रि १२ बजे तक दर्द रहा, उनकी धर्मपत्नी ने श्रद्धा से "ईश्वर तुम्हीं दया करो" भजन गाया, जिससे उन्हें शान्ति मिली।

दि० ४-६-६३ को अपनी डायरी में लिखते हैं कि "अब दौरा पड़ने पर हृदय घबड़ाने लगता है, ईश्वर स्मरण में किंचिन्मात्र भी इधर-उधर ध्यान जाता है तो ईश्वर भक्ति में रोड़ा मालूम होता है। यह सोचकर मैंने आश्रम की जिम्मेदारियों से अपने को पृथक् करना चाहा और सभी सदस्यों के सम्मुख श्री 'प्रेमजी' को अपना त्याग पत्र दे दिया और कहा—"मैं काम से नहीं घबड़ाता, बल्कि लोकैषणा व पद-विडम्बना से मुक्त हो, मैं निष्काम भाव से यथाशक्ति जीवन के अन्तिम क्षण तक आश्रम की सेवा करता रहूँगा, इसमें ही मेरी आत्मा प्रसन्न होगी, आप सभी मेरी इच्छा पूर्ण करने में सहयोग दें। अन्त में प्रेमजी ने उनकी प्रार्थना स्वीकार की और विश्वास दिलाया कि आप निश्चिन्त रहें "सत्य प्रकाशन" एवं आश्रम का कार्य सुचारु रूपेण चलता रहेगा। यह सुनकर मुझे परम-प्रसन्नता हुई।"

इसके बाद स्वामीजी दूध व फलों पर रहने लगे, अन्न त्याग दिया। डीग वाले वैद्य श्री रामजीलालजी का भी इलाज चलता रहा। आश्रम की सभी गतिविधियों में भी पूर्ण सहयोग देते रहे।

दि० ७-१२-६३ तक वे अपनी दिनचर्या नियमित रूपेण लिखते रहे। जीवन की उन्नति के लिये क्या करना है यही उनकी दिनचर्या का प्रमुख विषय रहता था।

जीवन की अन्तिम वेला में वे पूर्णतः प्रभु आश्रित हो गये, हर क्षण वे चाहते थे कि मुझे कोई ईशभक्ति के भजन सुनाता रहे। माता लीलावती जी से अनेक भक्ति भरे भजन उन्होंने अपनी कापी में भी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लिखवाये। प्रदिदिन रात्रि को "प्रभु को विसार किस की आराधना करूँ मैं" इत्यादि भजन तल्लीन होकर गाया करते थे।

दिनाँक १३-१२-६३ को दोपहर पुनः दर्द का दौरा पड़ा। पहले की भाँति इन्जैक्शन लगवाया पर इस बार नींद नहीं आई। रात्रि में भी नींद नहीं आई और बेचैनी अधिक बढ़ती गई। फिर भी स्वामी जी अधीर नहीं हुये। बराबर प्रभु भक्ति के भजन सुनते रहे "ओ३म्-ओ३म्" का जप करते रहे। उनके पुत्रों को फोन करके बुलाने के लिये कहा गया तो उन्होंने स्पष्ट मना कर दिया। उस समय उनके पास उनकी धर्म पत्नी व उनकी ज्येष्ठ पुत्री सत्यवती, ज्येष्ठ दामाद श्री ओम्प्रकाश जी व श्री पुरुषोत्तमदास जी (पिताजी) एवं श्री प्रेमजी थे।

प्रातः ब्राह्ममुहूर्त में लगभग ३ बजे वे चरपाई से उठे, हाथ पैर धोये, पुनः तख्त पर बैठ कर प्रकाश की ओर देखते हुये सस्वर उच्च ध्वनि से :—

ओ३म् वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तं शरीरम् ।
ओ३म् क्रतो स्मर! क्लिबे स्मर! कृतं स्मर।

—इस मन्त्र का पाठ किया। इस मन्त्र को उन्होंने अपनी कुटिया में कुछ दिन पूर्व ही लिखवाया था। थोड़ी देर वे ध्यानावस्थित रहे। पुनः लेटते हुये पुत्री से कहा "बेटी! "ओ३म्" का ध्यान करो, पत्नी से भी यही कहा कि "आप ओ३म् का ध्यान करें", पत्नी ने जब कुछ घबराहट अनुभव की तो उन्होंने कहा कि "मैं भी ओ३म् का ध्यान कर रहा हूँ।"

ये स्वामी जी के अन्तिम शब्द थे। इसके पश्चात् उन्होंने किसी भी अंग से कोई भी चेष्टा नहीं की और वे सदैव के लिये समाधिस्थ हो गये।

समीपस्थ व्यक्ति सोच रहे थे कि स्वामी जी प्रभु-चिन्तन में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लीन हैं, पर स्वामी जी तो अब "सच्चिदानन्दघन" प्रभु से मिल चुके थे, उनकी चिर अभिलषित कामना पूर्ण हो चुकी थी।

विद्युत् की भाँति यह शोक समाचार सर्वत्र फैल गया, जहां जिसने भी सुना, सभी का अन्तर्मन कराह उठा, सभी को मर्मान्तिक आघात पहुँचा, सभी अन्तिम दर्शनार्थ उत्सुक थे। प्रातः ६ बजे से सायं ४ बजे तक उनकी पार्थिव देह के पास वेद मन्त्रों का पाठ होता रहा। तथा प्रातः से ही आने वाले सभी श्रद्धालु इष्ट मित्र, परिवारी-जन, अश्रुपूरित नयनों से उन्हें भाव-भीनी श्रद्धाञ्जलि देते हुये उनकी चरण-वन्दना करते रहे।

सैकड़ों व्यक्ति उनकी शव यात्रा में सम्मिलित हुये। शव यात्रा में लगातार वेद मन्त्रोंका पाठ चलता रहा। बीच २ में पुष्पवृष्टि होती जा रही थी। आज उनका प्रिय पथ-प्रदर्शक उनसे विदा ले चुका था।

"मधुमन्मे निष्क्रमणं मधुमन्मे परायणम्"

श्रद्धेय स्वामीजी का सहवास व्यक्तियों के लिये मधुमय होता था। श्रद्धाञ्जलि दिवस पर सभी के मुख से यही शब्द उच्चरित थे कि स्वामीजी मुझे सबसे अधिक प्यार करते थे, कोई कहता था कि वे मुझसे सन्तानवत् गृहस्थ सम्बन्धी सारी दुःख-सुख की बातें पूछा करते थे। स्वामीजी ने अपनी विद्वत्ता के आधार पर नहीं, अपितु अपनी त्याग, तपस्या, सत्याचरण, एवं उदार भावना से सबके हृदयों को जीत रखा था। बड़े-बड़े धनिक भी उनके चरणों में झुकते थे।

"जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः" के अनुसार 'परमेश प्रभु की इस सुपावन विश्व-वाटिका' में जो फूल खिलता है एक दिन मुरझा कर वह मृत्यु की गोद में विलीन हो जाता है।' यह ध्रुव सत्य है, पर इस सत्य को चुनौती देते हुये मानो वेद कहता है "देवाऽमर्त्यान्" देव अमर हैं। "देव", गर्विणी मौत की छाती पर अपना आसन जमाकर अपने यशः शरीरसे "मृत्युञ्जय" बनकर अमर हो जाते हैं। स्वामीजी उन्हीं दिव्यात्माओं में से थे। **वह एक 'अमर ज्योति' थे।** ●

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ज्योति पुञ्ज की ज्योति किरणें

★

श्री विद्याव्रतजी शास्त्री

श्री विद्याव्रत जी का जन्म ग्राम बल्लभगढ़ (भरतपुर) में ज्येष्ठ शुक्ला ९ संवत् १९२६ में हुआ। ये श्रद्धेय स्वामी सत्यानन्दजी के ज्येष्ठ पुत्र थे। लाहौर विश्व विद्यालय से इन्होंने "शास्त्री" परीक्षा उत्तीर्ण की। पश्चात् डी० ए० वी० कॉलेज, देहली में संस्कृत व्याख्याता के पद पर नियुक्ति हुई।

"अनुव्रतः पितुः पुत्रः" इस वेदोक्ति के अनुसार श्रद्धेय शास्त्रीजी सदैव अपने पितृदेव के अनुव्रती रहे। फिर भी जहां श्रीस्वामीजी ईश भक्ति को प्रथम व शुभ कर्म को द्वितीय स्थान पर रखते थे, वहां शास्त्री जी शुभ कर्म करने पर अधिक जोर देते थे। उनका कहना था कि शुभ कर्म करेंगे तो प्रभु प्रसन्न रहेगा ही। और स्वामीजी का कहना था कि शुभ कर्म करने की प्रेरणा प्रभु से प्राप्त होती है। अतः प्रभु भक्ति परमावश्यक है।

सन् १९४२ में स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेने के लिये अपनी सर्विस से त्याग पत्र दे दिया। उनके सम्मुख 'मातृभूमि की स्वतन्त्रता' प्रमुख थी, गृहस्थ का उत्तरदायित्व गौण।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् शास्त्रीजी को विधान सभा का टिकिट मिला। चहुँ ओर स्वामीजी व शास्त्रीजी के तप-त्याग की लहर थी, विजय अवश्यम्भावी थी। पर जैसे ही स्वामीजी को ज्ञात हुआ कि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पुत्र राजनीति के दल-दल में फँसना चाहता है। ग्राम आकर अनशन कर दिया और कहा या तो टिकिट वापिस कर दो, अन्यथा मेरा अनशन जारी रहेगा। देश सेवा जैसे अब तक करते रहे वैसे ही करते रहो, "राजनीति काजल की कोठरी है" इससे बचकर ही रहो। पुत्र ने पिता की अनुमति को सहर्ष स्वीकार किया और अपना टिकिट वापिस कर दिया।

भरी जवानी में शास्त्रीजी ने ५ वर्ष अपने पिताजी के साथ विद्यापीठ के संचालन व अध्यापन में लगाये। समय-समय पर अनेक विघ्न-बाधायें आईं। पर ये—

"निन्दन्तु नीति निपुणाः यदि वा स्तुवन्तु" के आदर्श को समक्ष रख के कर्त्तव्य-रत रहे।

शास्त्री जी के एक पुत्र व तीन पुत्रियाँ हैं। सम्पूर्ण जीवन देश भक्ति व परोपकार में व्यतीत हो गया कभी गृहस्थ की ओर ध्यान ही नहीं दिया। अब जब पुत्रियाँ सयानी हुईं उनके विवाह की समस्या थी। अन्त में शास्त्री जी ने खादी समिति में मन्त्री पद पर कार्य किया। उनको अर्थ शुचिता से लोग भयभीत रहते थे और सभी कार्य ईमानदारी से करते थे।

प्रभु कृपा से शास्त्री जी को तीनों ही दामाद इन्जीनियर व डाक्टर मिले। पुत्रियों ने भी एम० ए०, डाक्टर आदि की योग्यता प्राप्त की। पुत्र भी भरतपुर कॉलेज में गणित के व्याख्याता हैं।

सच है "प्रभु आश्रित जनों का प्रभु ही सम्बल होता है।" श्री शास्त्रीजी स्वामीजी के पश्चात् कई वर्षों तक श्रीविरजानन्द ट्रस्ट के अध्यक्ष भी रहे। श्री शास्त्री जी जब भी स्वामी जी से मिलते थे, रात्रि को कई-कई घण्टों तक वार्तालाप होता रहता था। शास्त्रीजी अन्तिम समय में कहा करते थे–'प्रभु मुझे १० वर्ष का समय दे दे तो मैं वानप्रस्थ की दीक्षा लूँ और वैदिक धर्म की दुन्दुभी बजाऊँ। पर वे ६० वर्ष की आयु से पूर्व ही प्रभु की गोद में चले गये। यशस्वी पिता के यशस्वी पुत्र के रूप में उनकी स्मृति सदा बनी रहेगी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पूज्या माता सुमित्रा देवी जी

(धर्मपत्नी स्व० स्वामी सत्यानन्द जी महाराज)

पूज्या माता सुमित्रादेवी जी का जन्म ग्राम जगर हिण्डौन) में हुआ। स्वामीजी जैसे तपस्वी, ईश्वर भक्त पतिको पाकर आप धन्य हो गई। स्वामीजी ने आपको अक्षर ज्ञान से आरम्भ कर राम चरित मानस व गीता पढ़ना सिखाया। सन्ध्या, यज्ञादि के सम्पूर्ण मन्त्र कंठस्थ कराये व यज्ञादि करना सिखलाया। तभी से प्रतिदिन जप, सन्ध्या, यज्ञ आपके जीवन का आधार बन गये।

बड़ी से बड़ी विपत्ति में भी आप अपने पथ से विचलित नहीं हुईं। एक आदर्श आर्य महिला की भांति आपने गृहस्थ में रहते हुये श्री स्वामी जी का हर क्षेत्र सर्वात्मना सहयोग किया। महिला विद्यापीठ भुसावर की स्थापना के आरम्भ काल में ५ वर्ष आपने छात्राओं का नहलाना, जूँए साफ करना, वस्त्र धोना, भोजन बनाना आदि प्रत्येक कार्य मातृवत् प्रसन्नतापूर्वक किया।

राजनैतिक सत्याग्रह में आपने स्वामीजी के साथ-साथ भरतपुर व भरतपुर जिले के ग्रामों में भ्रमण किया। हिन्दी रक्षा आन्दोलन में भी अम्बाला जेल में रहीं। गौ रक्षा आन्दोलन में तिहाड़ जेल में रहीं।

सन् १६५१ में आपको स्वामी जी ने वानप्रस्थ की दीक्षा दिलाई थी और आज भी आप इस वृद्धावस्था में एकाकी आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर में तपोमय जीवन व्यतीत करती हुई ईश्वर आराधना एवं साधना में रत हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

श्री ब्रह्ममुनिजी (श्री सुरेशचन्द्रजी आर्य)

आपका जन्म दि० २२ जून सन् १९२५ में ग्राम उच्चैन (भरतपुर) में श्री सांवलसिंहजी गुप्त के यहाँ हुआ। मात्र २ वर्ष की अल्पायु में ही आपको मातृ-स्नेह से वञ्चित होना पड़ा। अतः आपका बाल्यकाल अति कष्ट में व्यतीत हुआ।

श्री ब्रह्म मुनि जी

श्रीमती विद्यावती जी

"कष्ट में ही व्यक्ति का जीवन निखरता है" इस उक्ति के अनुसार प्रारम्भ से ही ये तपस्वी, ईश्वरभक्त व देश-भक्त थे। विवाह से पूर्व रा० स्व० संघ के अच्छे कार्यकर्त्ता रहे, अनेक शाखाओं का संचालन कार्य संभाला, यहाँ तक कि कई बार जेल भी गये। प्रथम परिचय में ही स्वामीजी इनके गुणों पर मुग्ध हो गये। वस्तुतः "जौहरी ही हीरे की परख कर सकता है" और स्वामीजी ने अपनी कनिष्ठ पुत्री विद्यावती का विवाह सन् ४६ में इनके साथ कर दिया।

उसके ६ मास पश्चात् विद्यापीठ भुसावर की स्थापना हुई। श्रद्धेय स्वामीजी ने विद्यापीठ की सहायतार्थ अपनी पुत्री के द्वार पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भी जाकर झोली पसार दी, साथ ही अध्यापन कार्य के लिये पुत्री विद्यावती का सहयोग भी चाहा। श्रद्धेय श्री सांवलसिंहजी ने २ हजार रुपये का दान दिया, २ वर्ष के लिये निष्काम भाव से अध्यापन हेतु अपनी पुत्र वधू विद्यावती की स्वीकृति दी तथा अपनी पुत्री कमला को भी विद्यापीठ में प्रविष्ट कराया।

विवाह से पूर्व श्री सुरेशजी केवल मैट्रिक पास थे। सर्विस थी नहीं। २ वर्ष पश्चात् बयाने में मात्र ५०) की राजकीय विद्यालय में अध्यापक पद पर नियुक्ति हुई। उस ५०) में ही तपस्वी जीवन व्यतीत करते हुये दोनों (पति पत्नी) ने अध्ययन आरम्भ किया।

इन्टर, बी० ए, बी० एड, एम०ए०, आदि परीक्षाओं के पश्चात् नीलोखेडी जाकर S. E. O. की ट्रेनिंग की। इनके आधार पर इन दोनों की 'समाज-कल्याण विभाग' में S. E. O. के पद पर नियुक्ति हुई।

ग्रामीण क्षेत्रों में जा-जाकर ग्रामों की सर्वाङ्गीण उन्नति ही इनका उद्देश्य था। प्रति मास २० रात्रियां ग्रामों में बिताना आवश्यक होता था। अपने कार्य का सारा विवरण अपनी सर्विस बुक में लिखना होता था। विवाह के पश्चात् स्वामीजी के व्यक्तित्व से प्रभावित हो ये कर्मठ आर्य-समाजी व सत्य के पुजारी बन चुके थे। गृहस्थ में रहते हुये यह सर्विस इन दोनों के ही अनुकूल नहीं थी। असत्याचरण इनके स्वभाव के प्रतिकूल था। अतः विद्यावतीजी ने तो त्यागपत्र ही दे दिया। पर प्रभु कृपा से १ वर्ष बाद पुनः विद्यावतीजी की अध्यापन कार्य में नियुक्ति होगई। और सुरेशजी को भी **B. D. O.** का पद मिल गया।

"सत्य का पथ जहां सुखद है वहां आरम्भ में कण्टकाकीर्ण भी होता है" श्री सुरेशजी कभी कानून के विरुद्ध कोई कार्य नहीं करते थे। ग्रामों के सरपंच चाहते थे कि "बी० डी० ओ०" स्वयं भी रिश्वत ले और हमें भी हर प्रकार के मनमानी अवैधानिक कार्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करने की छुट्टी दे दे, तब तो ठीक है, अन्यथा हम इसको इस पद पर ही नहीं रहने देंगे। यही सोचकर ग्राम के सरपंच जब जिला-प्रमुख श्री श्यामलालजी वकील के पास इनकी शिकायतों की लम्बी-चौड़ी फाइलें लेकर गंगापुर पहुँचे तो श्री श्यामलालजी बोले –"देखो, ध्यान पूर्वक सुनलो, मैं इनको अच्छी प्रकार जानता हूँ। यह व्यक्ति न कभी कोई असत्य कार्य करेगा और न करने ही देगा, भले सर्विस रहे या, न रहे। सो अब इनकी आगे से कोई भी शिकायत नहीं आनी चाहिये, नहीं तो अच्छा नहीं होगा"

उसके पश्चात् शीघ्र ही इनकी राजकीय विद्यालय में ही नियुक्ति होगई, और दीर्घकाल तक अध्यापक व मुख्याध्यापक पद पर कार्य किया।

शैक्षणिक काल में शिक्षा के माध्यम से व "आर्य वीर दल" की शाखाओं के द्वारा इन्होंने सैंकड़ों बालक व नवयुवकों के जीवन का नव निर्माण किया। हिण्डौन, करौली, कटगर, पीठ, सेवर, बयाना वैर सभी स्थानों के विद्यार्थी अपने सद्गुरु का आज भी शत-शत अभिनन्दन करते हैं।

भरी जवानी में श्रद्धेय स्वामीजीने इनसे ब्रह्मचर्य व्रत की प्रतिज्ञा करवाई थी। उसे निष्ठा से निभाते हुये आपने तीन उत्तम सन्तानोंको जन्म दिया जिनमें एक पुत्री प्रभावती है, ज्येष्ठ पुत्र "अशोक आर्य" आजकल बम्बई में "कस्टम कलक्टर" है द्वितीय पुत्र 'वेदमित्र आर्य" उच्च शिक्षा प्राप्ति के पश्चात् भी आदिवासी क्षेत्रों की गरीब जनता की प्रगति के लिये कार्यरत हैं। और आज विभाग द्वारा अमेरिका में ट्रेनिंग के लिये भेजे गये हैं। आर्य समाज की प्रगति हेतु श्री सुरेशजी ने स्वेच्छा से ३ वर्ष पूर्व अध्यापन कार्य से त्याग पत्र दे दिया। सन् ६० से ही वे आश्रम परिवार से जुड़ गये स्थान २ परशिविरों द्वारा, योग प्रशिक्षणों द्वारा वे युवा पीढ़ी के जीवन में क्रांति लाना चाहते हैं। उनकी इन विशेषताओं के कारण ही उन्हें श्रीयुत् "प्रेम" जी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तथा ट्रस्ट के अन्य सदस्यों ने सानुरोध सन् ७७ में ":श्री विरजानन्द ट्रस्ट" का मन्त्री बनाया। उनके मन्त्रित्व काल में आश्रम ने "वेद-मन्दिर" की विशद योजना का स्वरूप लिया। वैदिक परिवार निर्माण, मिशनरी निर्माण केन्द्र, आर्ष गुरुकुल, पद यात्राओं और सत्य प्रकाशन आदि सभी में वे मान्य 'श्री प्रेम जी' के अनन्य सहयोगी रहे हैं।

सन् ८९ में उन्होंने "वानप्रस्थ" की दीक्षा ली। यों तो वे सर्वात्मना आर्य समाज के कार्य के लिये पहले से ही समर्पित थे फिर भी चूँकि आश्रम व्यवस्था लुप्त न हो, अतः आश्रम परिवर्तन आवश्यक समझा। आजकल उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। अतः मन्त्री पद से भी त्याग पत्र दे दिया है। पर उनसे अच्छा इस पद के लिये और कौन व्यक्तित्व मिलेगा, इस विचार से उनका त्याग पत्र अभी तक स्वीकृत नहीं हुआ है। प्रभु से यही विनय है कि वे शीघ्र ही पूर्ण स्वस्थ हो अपने सुपावन व्यक्तित्व और स्पृहणीय कृतित्व का लाभ आर्य जगत्, मां भारती और विश्व मानवता को दें। श्रद्धेय स्वामीजी उनके धर्म पिता के साथ ही सत् पथ-प्रदर्शक सद्गुरु भी थे।

स्वर्गीय श्री अजीराम जी आर्य

आपका जन्म फाल्गुन शुक्ला ६ संवत् १९६५ में श्री सेठ मूलचन्द जी के यहां हुआ। अपने ज्येष्ठ भ्राता श्री स्वामी सत्यानन्द जी की भांति आप भी सेवा, सादगी, मृदुता, निश्छलता एवं सदाचार की प्रति मूर्ति थे। आजादी से पूर्व भी रियासत के अन्याय व दमन के विरोध में संघर्ष-रत रहे। आप वर्षों तक नगरपालिका खेडलीगंज (अलवर) के निर्विरोध अध्यक्ष चुने गये। आपके सद्गुणों के कारण मण्डी में आपकी 'धाक' थी। काई भी गलत कदम उठाने की किसी की हिम्मत नहीं होती थी। आप खेडली के 'गांधी' 'दीनों के मसीहा' कहलाते थे। —

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

खेडली में अग्रवाल धर्मशाला भवन, राजकीय विद्यालय, नगर-पालिका भवन व कन्या विद्यालय आपके द्वारा निर्मित कराए गए। आपके त्याग व सत्याचरण से प्रभावित हो कन्या विद्यालय बनवाने हेतु "सेठ सरदारमल जी" ने आपके आगे "खाली चैंक-बुक" रख दी और कहा चाहे जितना रुपया ले लो। यह था उनके व्यक्तित्व का प्रभाव।

वर्षों तक महिला विद्यापीठ भुसावर के सक्रिय सदस्य रहे। भवन निर्माण समिति के संयोजक पद पर रहते हुये एक-एक पैसे का सदुपयोग व सही हिसाब रखा।

दि० २७ मई १९८३ को प्रातः अस्वस्थ होते हुए भी विद्यापीठ के लिए तख्ते लेने आगरा गए और वहीं प्राण त्याग दिए।

कुछ दिन पूर्व उन्हें शायद कुछ आभास हो गया था। वे कहते थे—'भाई हमसे जो कुछ कार्य करवाना चाहो करवा लो, हमारा कुछ पता नहीं कब चल बसें।'

आपके कार्य ही आज आपके "कीर्ति-स्तम्भ" हैं।

श्री यज्ञमुनि जी वानप्रस्थ [यज्ञप्रिय जी आर्य]

इनका जन्म वैशाख शुक्ला १० संवत् १९८१ में ग्राम बल्लभ-गढ़ में हुआ। ये स्वामीजी के कनिष्ठ पुत्र हैं। आपने महाविद्यालय ज्वालापुर में शिक्षा प्राप्त की। एक दिन आपने श्रद्धेय स्वामीजी से कहा—"पिताजी, आपने हमें अँग्रेजी नहीं पढ़ाई, हमारे साथियों को अंग्रेजी पढ़ने के कारण सर्विस मिल गई।" इस पर स्वामीजी ने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सहज भाव से उत्तर दिया—"बेटा, मैं तुम्हें मानव बनाना चाहता हूँ।"

यज्ञप्रियजी ने भी अपने पुत्र डा० सतीशजी को आरम्भिक शिक्षा गुरुकुल कुरुक्षेत्र में दिलाई। दोनों पुत्रियाँ—वेदवती, सन्तोष आर्य विचारों से ओत-प्रोत हैं। तीनों ही पुत्र व पुत्रियां दैनिक यज्ञ करते हैं।

श्री यज्ञप्रियजी "अनुव्रतः पितुः पुत्रः मात्रा भवतु संमनाः" इस वेदोक्ति के अनुसार अपने पूज्य पिताजी के अनुव्रती तो हैं ही, पर सेवा भाव में "श्रवण कुमार" से कम नहीं। सदैव अपने माता-पिता व पूज्य चाचाजी (श्रीदुर्गा प्रसादजी व श्री अजीराम जी) की तन, मन, धन से सेवा करते रहे हैं। आज भी अपनी पूज्या माताजी (श्रीमती सुमित्रा देवीजी) की सेवार्थ ज्वालापुर आश्रम में जाकर उनकी पूर्ण सुख-सुविधा का प्रबन्ध करते हैं।

अभी दो वर्ष पूर्व आपने 'वानप्रस्थ' की दीक्षा ली है। दीक्षा से पूर्व भी और अब भी आप 'आर्य वीर दल की शाखा योग प्रशिक्षण शिविर लगाकर व वैदिक साहित्य वितरित कर आर्य समाज के सिद्धान्तों का प्रचार करते हैं। श्री स्वामी ओमानन्दजी द्वारा रखे गये ४० दिवसीय यज्ञों में भी भाग लेकर दोनों समय आसन व्यायाम द्वारा युवकों व बालकों की शारीरिक व आत्मिक उन्नति हेतु विशेष प्रयास करते हैं।

●

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्व० श्री डा० कुञ्जबिहारीलाल जी

चिन्तक, विचारक, लेखक व आदर्श शिक्षक स्व० डा० कुञ्ज-विहारी लालजी का जन्म भरतपुर में हुआ था। इनका विवाह श्रद्धेय स्वामीजी की बहिन श्रीमती कमलाजो के साथ सन् १९३१ में हुआ।

डा० साहब अपने संस्मरण में लिखते हैं कि—"मेरे विवाह में मेरे बाबा साहब के संकेत पर बैण्ड बाजा वालों ने भद्दी गालियां गाना आरम्भ कर दिया। प्रत्युत्तर में वहां की महिलाओं ने भी गाली गाना प्रारम्भ किया। स्वामीजी ने जैसे ही सुना, अपने छोटे भाई श्री दुर्गाप्रसादजी को बुलाकर बहुत डांटा और कहा "गाली गाना आर्य समाज के गौरव के विरुद्ध है" भाई ने तुरन्त क्षमा मांगी, फिर भी स्वामीजी ने १००) जुर्माना कर आर्यसमाज में जमा करवाये। सच में स्वामीजी एक महान् आत्मा थे, उनके विचार बड़े ही परिष्कृत थे।"

बहुमुखी प्रतिभा के धनी डा० साहब अध्यापक से आचार्य व फिर राजनीति शास्त्र के पोस्ट ग्रेजुएट, विभागाध्यक्ष पद पर आसीन हुये। आपने अपने सरक्षण में अपनी प्रतिभा से कितने ही युवकों को सुनागरिक बनाया। आप सदैव प्रसन्नचित्त रहते व सभी को अपने हँसमुख स्वभाव से आह्लादित करते रहते थे।

आपने "भरतपुर का इतिहास" लिखकर "डाक्टरेट" की उपाधि प्राप्त की। राजस्थान के राज्यपाल द्वारा आपको "शिक्षक सम्मान" से सम्मानित किया गया। हिन्दी साहित्य समिति के भवन निर्माण में आपकी प्रथम भूमिका रही।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आपकी धर्मपत्नी में अपने ज्येष्ठ भ्राता श्रद्धेय स्वामी जी के गुण स्वभावत: ही हैं। प्रत्येक सामाजिक गतिविधि में जब स्वामीजी भरतपुर आते थे, प्रायः आपके यहाँ ही आतिथ्य ग्रहण करते थे। इस प्रकार आप दोनों ही स्वामी जी के कार्यों में सहयोगी रहे।

स्वामी सुधानन्द जी महाराज

आपका जन्म वैशाख शुक्ला १० संवत् १९७३ में ग्राम मासलपुर (करौली) में हुआ। श्रद्धेय स्वामीजी के सम्पर्क में आकर उन्होंने अनेक दुर्गुणों का परित्याग किया, जैसे धूम्रपान, मृतक भोज, मूर्ति पूजा इत्यादि। स्वामीजी के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर इन्होंने अपने धनोपार्जन में भी अर्थ-शुचिता का ध्यान रखा। विद्यार्थी जीवन इनके पुत्रों ने श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य के संरक्षण में व्यतीत किया तथा स्वामीजी ने इनके पुत्र-पुत्रियों के विवाह भी आर्य परिवारों में बिना दहेज लिये-दिये करवाये। इनका पूर्व नाम श्री किन्दूरीलाल जी आर्य था।

गृहस्थ दायित्वों से मुक्त होकर आपने वानप्रस्थ व संन्यास की दीक्षा ली। मोहन नगर (हिण्डौन) आर्यसमाज के आप स्तम्भ हैं प्रतिदिन यज्ञ, पारिवारिक सत्संग व वैदिक साहित्य वितरण द्वारा आप समाजोपकार में लगे हुये हैं। परिश्रमी एवं सेवाभावी मनोवृत्ति के धनी, श्री स्वामी सुधानन्द जी ७३ वर्ष की आयु में भी नवयुवकों के प्रेरणा-स्रोत बने हुये हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

श्रीमती सत्यवती जी आर्या

इन्हें श्रद्धेय स्वामी सत्यानन्दजी की ज्येष्ठ पुत्री होने का सौभाग्य प्राप्त है। स्वामीजी ने अपनी दोनों पुत्रियों (सत्यवती, विद्यावती) को कन्या गुरुकुल सासनी (हाथरस) में शिक्षा दिलाई, और दोनों ने ही "प्रथम" श्रेणी में 'स्नातिका" परीक्षा पास कर "विद्याविभूषिता" की उपाधि प्राप्त की। सन् १९४५ में सत्यवतीजी का विवाह श्री ओम्प्रकाशजी आर्य (सुपुत्र श्री गणेशी लालजी आर्य "मन्त्री आर्य समाज बयाना" के साथ हुआ। श्री गणेशीलालजी आर्य भी अपने समय के एक निष्ठावान् कर्मठ कार्यकर्त्ता रहे। बयाना आर्यसमाज मन्दिर का निर्माण आपने ही कराया तथा अपने पुत्र श्री ओम्प्रकाशजी को गुरुकुल वृन्दावन में शिक्षा दिलवाई।

गृहस्थमें रहते हुये भी सत्यवतीजी ने मैट्रिक, प्रभाकर, साहित्य-शिरोमणि व एम० ए० की परीक्षायें दीं। ये बयाना नगरपालिका की ६ वर्ष सदस्या रहीं। आर्यसमाज की गतिविधियों में भी सदैव भाग लेती रही हैं। अब भी बाड़ी, धौलपुर, जगनेर, शमसाबाद, गंगापुर, हिण्डौन, सवाई माधोपुर, खेडली, नदवई आदि स्थानों पर जानेका अवसर मिलता रहता है। इनके भाषणों की सरल, सुबोध शैली के कारण वैदिक सिद्धान्तों को बहिन-भाई जल्दी ही समझ लेते हैं। गंगापुर व जगनेर आर्यसमाज की बहिनें प्रतिदिन समाज में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जाकर यज्ञ करती हैं। यह ४० दिवसीय यज्ञ द्वारा सत्यवती जी के श्रम की एक अच्छी उपलब्धि है। अपने जीवन को सुन्दर बनाने का प्रयास करते हुये समाज की भी अधिकाधिक सेवा का इनका लक्ष्य रहता है। आश्रम-परिवार को ऐसी विदुषी बहिन पर सात्विक गर्व है।

श्री स्वामी ओमानन्द जी [ब्र० ओमदत्त जी]

आपका जन्म आश्विन शुक्ला ९ संवत् १९७५ में मांसलपुर (करौली) में हुआ। ये आरम्भ से ही सुधारवादी दृष्टिकोण के व महात्मा गांधी के अनुयायी थे। युवावस्था में ही इन्होंने सत्य-पथ के अन्वेषणार्थ गृह-त्याग दिया और यत्र तत्र सद्गुरु की खोज में भ्रमण करते रहे। अन्त में बसन्ताराम जी रामपुरा वालों की प्रेरणा से ये श्रद्धेय स्वामी की शरण में ग्राम बल्लभगढ़ पहुँचे।

वहाँ जाकर ज्यों ही स्वामीजीके चरण स्पर्श किये, स्वामीजीने छाती से लगा लिया। सिर व दाढ़ी के बढ़े हुये बाल, गन्दे फटे वस्त्र, भूख से व्याकुल, मार्ग की थकान से थकित "दुर्गालाल" को आज जैसे अपनी चिर अभिलाषा पूर्ण होती दिखाई दी। श्रद्धेय स्वामीजी ने तुरन्त नापित को बुलाया, हजामत बनवाई, स्नानादि करवा के स्वच्छ वस्त्र पहनाये, स्वादिष्ट भोजन करवाया और ज्ञानामृत-पिपासु को 'सत्य सनातन वैदिक पथ' का अनुयायी बना दिया। युवा "दुर्गालाल" आज "ब्रह्मचारी ओमदत्त" बनकर अपने को धन्य अनुभव कर रहा था।

स्वामीजी ने ब्रह्मचारी जी को संस्कृत अध्ययनार्थ लाहौर भेजा। वर्षों अपने सान्निध्य में रखकर यम-नियमों पर चलने का प्रशिक्षण दिया। स्वामीजी (ओमानन्द जी) आज भी सहज भाव से कहते हैं कि—

"मेरे ऊपर स्वामीजी (सत्यानन्द जी) का महान् ऋण है, वे इतने विनम्र थे कि मुझ जैसे उग्र स्वभावी को भी निभा लिया।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सभी पैदल यात्राओं में स्वामीजी ने इनको साथ-साथ रखा। हिन्दी रक्षा आन्दोलन में भी साथ गये। कैलादेवी के मन्दिर पर होने वाली पशु-बलि के विरोध में होने वाले आन्दोलन में ब्रह्मचारी जी का सबसे अधिक सहयोग रहा। अभी २ वर्ष पूर्व तक वे निरन्तर कैलादेवी के मेले के अवसर पर जाकर "वेद मन्दिर" पर यज्ञ व साहित्य प्रचार द्वारा आर्यसमाज का प्रचार करते रहे हैं। अब तो संन्यास की दीक्षा लेकर वे "ओमानन्द" बनकर यत्र-तत्र प्रतिदिन पारिवारिक यज्ञ व सत्संग करते हैं और वर्ष भर की दक्षिणा जन-हितार्थ "चतुर्वेद पारायण" यज्ञ में लगा देते हैं। ४० दिन के दीर्घकाल में जनता को आर्य सिद्धान्तों को समझने का अच्छा अवसर मिलता है व प्रातःकालीन योग प्रशिक्षण द्वारा भाई-बहिनों को आत्मिक व शारीरिक उन्नति का सुयोग मिलता है।

यही उनकी अपने सद्गुरु के प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि है।

स्व० महात्मा नन्दलाल जी वानप्रस्थ

आप शब्द के सही अर्थों में महात्मा थे। आप स्वामीजी के अनन्य मित्रों में से थे। इसी अनन्यता के कारण श्री स्वामी जी के साथ ही आप भी मथुरा आश्रम आ गये थे। पूर्व जीवन में आदर्श अध्यापक रहे। अन्तिम समय तक आश्रम के उपाध्यक्ष रहे। बड़े ही साधनाशील और तपस्वी थे, आप। आपके सुपुत्र—श्री नरेन्द्रदेव, अर्जुनदेव एवं पुत्र-बधुएँ मान्या लक्ष्मीदेवीजी शास्त्री, शान्तिदेवीजी, प्रेमरानीजी और पुत्री मान्या दयावती जी सभी आर्यत्व की ज्योति से ज्योतिष्मान् हैं। आश्रम परिवार के सदस्य-सदस्या हैं। पू० महात्मा जी मुक्तकण्ठ से श्री स्वामीजी का यशोगान किया करते थे।

श्री मुन्नालाल जी वानप्रस्थ, ज्वालापुर

आप भी श्रद्धेय स्वामीजी के मित्रों में से थे। 'समान शील व्यसनेषु सख्यम्' के अनुसार स्वभावतः आपने भी वैसी ही सद्गुणों की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पदा प्राप्त की थी। आप बड़ौदा (गुजरात) निवासी थे। बड़ौदा में आपके सुपुत्र श्री धर्मेन्द्र जी धींग्रा वैदिक विज्ञप्तियों के प्रकाशन, वैदिक सत्साहित्य के प्रचार-प्रसार के रूप में अपने पिताश्री की गरिमा को और भी प्रकाशित कर 'पुत्र' संज्ञा को सार्थक कर रहे हैं।

श्री रेवतीप्रसादजी वानप्रस्थ 'पुरुषार्थी'

आप भी श्री स्वामीजी के एक अन्य आदर्श मित्र थे। मथुरा आश्रम पर भी कुछ समय रहे। सेवा और पुरुषार्थ आपके जीवन-मन्त्र रहे। इसीसे ही स्वामीजी इन्हें 'पुरुषार्थी' संज्ञा से सम्बोधित करते थे। आपके सुपुत्रोंमें से डा० ज्ञानेन्द्रजी आर्य एवं पुत्रवधू सुश्री दयावती जी पितृ-परम्परा को बड़े ही आदर्श रूप में निर्वहन करते हुए माँ मानवता और आर्य-समाज की सेवा-साधना में सर्वात्मना जुटे हैं। सद्य: दिल्ली (बसन्त विहार) में विराजते हैं।

श्री प्रह्लाद कुमारजी आर्य, हिंडौन

अपने यौवन काल से ही ऋषि मिशन के प्रति सर्मपित, माँ आर्यसमाज के एक सच्चे सपूत के रूप में आर्यवीर दल, वैदिक साहित्य के प्रकाशन और वितरण तथा अपने पूज्य पितृदेव के नाम से 'श्री घूड़मल आर्य ट्रस्ट' के संचालन, उसके द्वारा अनेकों आर्य विद्वानों के सम्मान आदि विविध रूपों में जो इतनी सनिष्ठ सेवा-साधना कर सके हैं, उसमें वे श्रद्धेय स्वामीजी के जीवन के सत्प्रभाव और उनकी प्रेरणाओं को मुख्य आधार मानते हैं।

स्व० बद्रीप्रसाद जी आर्य (ठेकेदार) बयाना स्व० स्वामी केशवानन्दजी (आगरा) स्व० भजनानन्दजी निठार आदि के जीवन स्वामीजी की अन्य ज्योतिष्मान् किरणों के रूप में थे। श्रीस्वामीजी की जीवन ज्योति के सत्प्रभाव से ही आपके अन्य परिजन श्री ब्रह्म-प्रकाश जी जयपुर, श्री ओम्प्रकाशजी आर्य हिण्डौन, श्री सत्यपालजी आर्य जयपुर श्रीयशपाल आर्य (अमेरिका) आदि अपने-अपने क्षेत्रों में अपने-अपने ढंग से आर्यसमाज और माँ भारती की सेवामें संलग्न हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्व० पुरुषोत्तमदासजी आर्य (पिताजी)

आप मान्य श्री प्रेमजी (श्री ईश्वरीप्रसादजी 'प्रेम') के पूज्यपाद पिताजी थे इसीलिये सारा आश्रम-परिवार ही, स्वयं श्री स्वामीजी भी उन्हें 'पिताजी' कहकर सम्बोधित करते थे। और सच में ही वे थे भी—'आश्रम पिता'। आश्रम की स्थापना-काल से ही आश्रम के व्यवस्थापक बने और अन्त तक बने रहे। श्री स्वामीजी के वे अनन्य स्नेही थे। आपकी ही अन्तःप्रेरणा और सत्संकल्प की देन हैं—श्रीप्रेम जी, जो आर्यसमाज के क्षेत्र में एक वरदान बन कर चमक रहे हैं।

श्री बंशीधर जी अग्रवाल

सतत साधना, श्रम और पुरुषार्थ से किस प्रकार जीवन के हर क्षेत्र में एक व्यक्ति का व्यक्तित्व और कृतित्व विकसित होकर जीवन की ऊँचाइयों को छू सकता है, इसके आदर्श हैं, आप। आप वर्षों से श्री विरजानन्द ट्रस्ट के प्रधान हैं। तपोवन आश्रम, देहरादून के भी प्रधान हैं। ईश कृपा से मथुरा दिल्ली, भोपाल, अहमदाबाद आदि में बड़ा समुन्नत व्यापार है, भाइयों और परिवार को भी वैदिक जीवन धारा में लाने का प्रयास करते रहे हैं। श्री स्वामीजी इनके उत्साह और कर्मठता के कारण इन्हें 'सुभाष' कहकर पुकारते थे। इसी प्रकार स्व० केदारनाथजी आर्य, बौ० रघुवरदयालजी, स्व० वृजवासी-लाल जी आर्य आदि श्री स्वामीजी के अनन्य भक्तों में से रहे।

आचार्य प्रेमभिक्षुः (श्री ईश्वरीप्रसाद 'प्रेम')

कभी दो दिव्यात्माओं का सुदिव्य मिलन—गुरु विरजानन्द और स्वामी दयानन्द के रूप में मथुरा नगरी का गौरव बना था। उसी नगरी में ठीक १०० वर्ष बाद दो पिपासु आत्माओं का गुरु-शिष्य के रूप में मंगल-मिलन हुआ, कुछ वैसी ही भावनाओं और अरमानों को लेकर। श्री स्वामीजी जहाँ स्नेह के अतुल प्रवाह में श्री प्रेमजी को कहते थे—"तुम मेरे चौथे पुत्र—धर्म-पुत्र हो" वहाँ श्री प्रेमजी भी अपने जीवन-दाता पूज्य पितृदेव (श्रीपुरुषोत्तमदासजी) के पश्चात् श्री स्वामीजी को अपना जीवन निर्माता और प्रेरणा स्रोत मानते हैं। वे ईश कृपा से उसी पथ पर बढ़े जा रहे हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

श्री शान्तिस्वरूप जी आर्य

श्रद्धेय स्वामीजी के आप द्वितीय पुत्र हैं। आपको भी स्वामीजी ने लाहौर में शिक्षा दिलाई। आपका विवाह मास्टर श्रीआदित्येन्द्र जी की चचेरी बहिन सुश्री शीलवतीजी (सुपुत्री श्रीगोकुलचन्द्रजी, नगर) के साथ हुआ। श्री गोकुलचन्द जी व तुलसीराम जी दोनों ही भाई आर्य विचारों के थे। इन्होंने महिला विद्यापीठ के लिये आर्थिक सहयोग दिया व अपनी पुत्रियों को विद्यापीठ में प्रविष्ट भी कराया। मास्टर आदित्येन्द्र जी की भी दो पुत्रियाँ महिला विद्यापीठ में पढ़ीं।

श्रीमती शीलवती जी ने श्री 'गेंदालाल आर्य पुत्री पाठशाला' में वर्षों तक अध्यापन द्वारा ग्रामीण बालिकाओं की तन-मन से सेवा की। इनके ४ पुत्र व ३ पुत्रियाँ हैं। आर्थिक कठिनाइयों व सीमित साधनों के होते हुये भी दो पुत्र श्री सत्यपाल जी व धर्मपाल जी इन्जीनियर बने, व श्री यशपाल जी, विजयपाल जी डाक्टर बने, तीनों पुत्रियों ने भी एम० ए० पास किया। प्रिय सत्यपाल ने भी "राम" की भाँति अपने भाइयों के लिये बहुत त्याग किया। आजकल श्री सत्यपालजी को छोड़कर सभी परिवार अमेरिका रहने लगा है। वहाँ रहते हुये भी इन्हें अपनी संस्कृति-सभ्यता से प्रेम है। प्रतिदिन नहीं तो साप्ताहिक, पाक्षिक व पर्वों पर सभी घरों में यज्ञादि कार्य-क्रम होते हैं। आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में भी सहयोग देते हैं। पुत्री इन्द्रा ने तो २५० प्रतियाँ नित्यकर्म विधि की अभी २ मँगवाई हैं—प्रचारार्थ।

श्री शान्तिस्वरूप जी भी जब तक बल्लभगढ़ रहे, होम्योपैथी की चिकित्सा द्वारा ग्रामवासियों को लाभान्वित करते रहे। वे बल्लभगढ़ आर्यसमाज का कार्य सँभालते रहे। वहाँ भी रहते हुए आश्रम के लिये १५ सहस्र के लगभग राशि एकत्र करके भेजी है। अब भी वे निरन्तर प्रयत्नशील हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वामीजी के पुण्य संस्मरण

★

महती देवता ह्येष नर रूपेण तिष्ठति—

मनुष्य के रूप में महान् देवता

पूज्यपाद स्वामी सत्यानन्द जी महाराज के दर्शनों का प्रथम सौभाग्य मुझे जैत ग्राम में आयोजित साधना शिविर के अवसर पर प्राप्त हुआ था। इस प्रथम परिचय में ही वे मुझे अत्यन्त स्नेह करने लगे थे और मैं उनके प्रति अटूट श्रद्धा। उस दिन से उनके समीप रहने का जब कभी अवसर मिला, मैंने उसे अपूर्व लाभ समझकर यथासंभव खोया नहीं। मुझे उनके समीप पितृ-वात्सल्य की सुखमय प्रसादी मिलती थी। शायद ऐसा सभी को अनुभव होता हो, क्योंकि उनका तो वत्सलता का स्वभाव ही था। किन्तु मुझे तो सदा यही अनुभव होता रहा कि वे मुझे अन्यों से अधिक स्नेह करते हैं। स्वर्गवास से कुछ ही दिन पूर्व होने वाले साधना शिविर में तो उनकी आत्मीयता पराकाष्ठा को पहुँच गई थी। वे मेरी चर्चाओं में आत्म-विभोर हो जाते थे और उन्हीं प्रवचनों को दोहराने लगते थे। शिविर के अन्तिम दिन प्रातः कालीन कार्यक्रम के पश्चात् मुझे अपनी कुटिया में बुलाया और सहज स्वभाव से कहने लगे कि 'प्रेम' जी की तरह ही सब लोग आपसे प्रेम करते हैं, इसी लिये आप इस साधक परिवार' को सम्भालिये—भुसावर, हिण्डौन बयाना भरतपुर, माधौपुर आदि को। मैंने कहा मैं आपकी आज्ञा से बाहर नहीं हूँ। मुझे क्या ज्ञान था कि वे महा प्रयाण से पूर्व इन सरल शब्दों द्वारा मुझे एक बड़ा उत्तर-दायित्व सौंपना चाह रहे हैं। स्वामीजी के तपोमय जीवन के साथ ही उच्च कोटि की ईश्वर-निष्ठा ने उनकी संगति में आने वाले सहस्रों व्यक्तियों को प्रभावित किया है और उनको अपनी वत्सलता के माध्यम से एक सूत्र में बाँध दिया है।

— वाचस्पति शास्त्री

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वर्गीय स्वामी सत्यानन्द जी

[एक संस्मरणात्मक परिचय]

स्वर्गीय स्वामीजी से मेरा प्रगाढ़ परिचय अब से लगभग २५ वर्ष पूर्व उस समय हुआ था, जब आप अपने सुयोग्य ज्येष्ठ पुत्र श्री विद्याव्रतजी शास्त्री के साथ भरतपुर राज्य में तत्कालीन राष्ट्रीय संस्था—प्रजा परिषद् द्वारा चलाये गये आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लेने लगे थे। आपके देशानुराग का इससे अधिक और प्रमाण क्या हो सकता है कि आप अपने अच्छे-भले व्यापार व्यवसाय को छोड़कर तथा अपने उपर्युक्त पुत्र से अध्यापकी का कार्य छुड़वाकर उक्त राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय रूप से सम्मिलत हो गये थे। जब सन् १९४२ के संघर्ष काल में यहाँ के कितने ही कार्यकर्ता जेल जा चुके थे, तो आपने ही शेष कार्य-कर्त्ताओं को संगठित करके आन्दोलन को तीव्र गति दी तथा स्वयं भी गिरफ्तार होकर जेल चले गये।

तदनन्तर भरतपुर में जब-जब और जैसे-जैसे आन्दोलन होते रहे, आप उन सभी में प्रमुख रूप से सम्मिलित रहे थे। इसी प्रकार शान्तिकाल में आप रचनात्मक तथा जनशिक्षण का कार्य भी दत्तचित्त होकर करते रहे थे।

पूर्वोक्त कार्यों में भाग लेने के साथ-साथ आप अपने धार्मिक तथा सामाजिक सिद्धान्तों का भी सदैव पालन करते रहे थे। आरम्भ से ही आपका पूरे का पूरा परिवार वैदिक धर्मावलम्बी अर्थात् आर्य-समाजी विचारों का ही रहा है, अतः उस क्षेत्र में भी आपका भरपूर योग रहा है। आपने इसी प्रकार के विचारों से प्रेरित अपने पैतृक निवास स्थान बल्लभगढ़ (जि० भरतपुर) गाँव में अपने स्वाध्याय तथा साधना के लिये "सत्याश्रम" नामक उपासना-गृह की स्थापना की थी, जो अब भी आपकी धार्मिकवृत्ति तथा निष्ठा का परिचय प्रदान कर रहा है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वैदिक धर्मोद्धारक ऋषि दयानन्द द्वारा पुनर्जीवित की गई आश्रम-प्रणाली का अक्षरशः पालन करने के उद्देश्य से प्रेरित होकर आप गृहस्थ आश्रम के अनन्तर 'सपत्नीक' वानप्रस्थ तथा तदुपरान्त संन्यास आश्रम में भी विधिपूर्वक प्रविष्ट हुए थे एवं अन्त तक उसको निभाते रहे थे।

आर्य सामाजिक क्षेत्र में भी आपका त्याग और तप सराहनीय ही माना जायगा। विगत सन् १९३९ में जब देश भर की आर्य-समाजों की ओर से हैदराबाद राज्य में अपने धार्मिक तथा नागरिक अधिकारों के लिये प्रचण्ड सत्याग्रह आन्दोलन चलाया गया था, तो भरतपुर राज्य की ओर से गये हुए एक जत्थे के डिक्टेटर आप ही बनाये गये थे। इस हैसियत्त से वहाँ की जेल में रहते हुए आपने अनेक असह्य यातनायें सही थीं, परन्तु फिर भी आप किञ्चित्मात्र विचलित नहीं हुए थे। इसी प्रकार जब पंजाब में हिन्दी आन्दोलन आरम्भ हुआ तो उसमें भी आप भरतपुर की ओर से एक जत्था लेकर पहुँचे थे तथा वहाँ गिरफ्तार होकर जेल भी गये थे।

आप सदैव शान्त और प्रसन्न चित्त रहा करते थे, जब कभी कहीं का कोई भी व्यक्ति आपके सम्पर्क में आता था, तो आप मुस्कराते हुए बड़े प्रेम से उससे कुशलक्षेम पूछते और यदि कोई किसी आपत्ति-विपत्ति में होता तो उसकी यथाशक्ति सहायता भी करते थे। अपनी सामर्थ्यानुसार दूसरों की सेवा करना तथा अपने लिये किसी अन्य व्यक्ति को किंचित्मात्र भी कष्ट न देना, यह आपके जीवन का आदर्श था।

आप अत्यन्त संयमी, स्वाध्यायशील तथा नियमित जीवन व्यतीत करने वाले थे। अपने देहावसान से कुछ ही मास पूर्व जब आप यहां जयपुर के बड़े अस्पताल में चिकित्सा के निमित्त आये हुए थे, तो स्वयं डाक्टर लोग भी यह देखकर हैरान हो जाते थे कि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उदर तथा गुर्दों में असह्य पीड़ा के होते हुए भी आप अपने नित्य कर्म तथा स्वाध्याय करने में कभी भी नहीं चूकते थे।

—युगलकिशोर चतुर्वेदी (जयपुर)

वे एक महान मानव थे !

(लेखक—रामभरोसी गुप्त)

दुनियाँ में अनेक प्रकार के लोग अनेकों प्रकार से अपना जीवन व्यतीत करते हैं—कोई पैसे की कमाई को ही अपना प्रमुख लक्ष्य बनाता है, कोई अपनी जाति के उत्थान के लिए जीता है, कोई अपने गाँव के लिये, कोई अपने जिले या प्रान्त और कोई देश के लिए अपने प्राण त्याग देता है, किन्तु ऐसे महान् व्यक्ति बहुत ही कम होते हैं जो समस्त संसार और समस्त मानव जाति के नैतिक, आत्मिक, सामाजिक और सर्वांग उत्थान एवं निर्माण के लिए अथक प्रयत्न करते २ वीरों की भांति अपने जीवन की आहुति दे देते हैं। इन्हीं महापुरुषों में श्री स्वामी सत्यानन्दजी थे जिन्होंने अपने जीवन के ४० चालीस वर्ष निरन्तर समाज की सेवा, महिला शिक्षा के उत्थान और स्वतन्त्रता संग्राम के सैनिक के रूप में लगाये तथा जीवन भर अपने उपदेशों से वैदिक धर्म और ऋषि दयानन्द के विचारों और आदर्शों का गुंजन करके मानव जाति का अनन्त उपकार करते रहे।

अपने जीवन के अन्तिम दौर में महर्षि दयानन्द की दीक्षाभूमि मथुरा में वैदिक साधना आश्रम एवं सत्य प्रकाशन रूप वट वृक्ष लगाकर तो मानो वे भावी पीढ़ियों के लिये भी ज्योति और जीवन का प्रथ प्रशस्त कर गये हैं।

स्वामीजी की वाणी संतों, महात्माओं और ऋषियों की वाणी थी, जिसमें सत्यता, निर्भयता और सिद्धान्तों के लिए आत्म-बलिदान की भावना भरी रहती थी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

निरभिमानता और स्नेह की मूर्ति !

—भजनानन्द वानप्रस्थी

सद्गुरु श्री स्वामी जी महाराज यों तो सद्गुणों के भंडार थे, पर किसी व्यक्ति को उत्साहित करना, उसे आगे बढ़ाना और अपने उपकारों तथा आत्मीयता से अपना लेना और अपना बना कर उसे वैदिक धर्म की सेवा में लगा देना उनके स्वभाव का विशेष अङ्ग था।

कोई १८ वर्ष पुरानी बात है। एकान्त सेवन के विचार से मैं अपने गाँव निठार के निकट के जंगल में स्थित मन्दिर पर चला गया। श्री स्वामी जी को ज्यों ही इस बात का ज्ञान हुआ, वे स्वयं ही सीधे मेरे पास पहुँचे। मेरे एकान्त सेवन के विचार के लिये मुझे धन्यवाद दिया और अपने अमृतमय सदुपदेशों से मुझे कृतार्थ कर दिया। इतने निकट से उनके दर्शन का यह पहला अवसर था। पर इस प्रथम दर्शन में ही उनके विचारों की जो गहरी छाप पड़ी उसने मेरे मन और मस्तिष्क को पकड़ लिया।

दूसरी बार लगभग १२ वर्ष बाद ४० दिन की उनकी पैदल यात्रा में उनके चरणों में रहने का सौभाग्य मिला। भ्रमण करते हुए कमला गिरि बाबा की कुटी पर हम लोग पहुँचे। नित्य कर्म की निवृत्ति पर वे बोले—"पंडित जी, आज कुछ संकल्प ले लो।" उनके कहने के ढंग में कुछ ऐसा निरालापन था जिसने मेरे अन्तर को छू लिया। मैंने तुरन्त वानप्रस्थ दीक्षा का निश्चय कर लिया। यद्यपि उन्हीं की प्रेरणा से मेरे भाव जगे थे और मैं उन्हीं को अपना गुरु मानता था पर वानप्रस्थ-दीक्षा उन्होंने मुझे श्रद्धेय स्वामी व्रतानन्द जी से दिला कर इसका श्रेय भी स्वयम् नहीं लिया। वे कहा करते कि गुरु तो हम सबके ऋषि दयानन्द और परम गुरु परमात्मा हैं। सच में उनकी जैसी निरभिमानता दुर्लभ है।

इसके पश्चात् गुफा पर उनके चरणों में लगभग १॥ महीने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एकान्त सेवन किया। प्रातः से लेकर रात्रि तक की कैसी बँधी हुई दिनचर्या चलती थी! उनके साथ अध्यात्म-चर्चा का इस बार खूब लाहा लूटा। और इसके बाद तो निठार में उन्होंने 'सेवा साधना आश्रम' की स्थापना करके मुझे अपना ही लिया। हिन्दी सत्याग्रह में भी कुछ समय उनके साथ रहा। ज्वालापुर वानप्रस्थाश्रम भी प्रति वर्ष जाता रहा और अब ३-४ वर्ष से मथुरा आश्रम में उनकी सेवा में रहने का सौभाग्य मिलता रहा।

जैसा उनका सहज स्वभाव था वे अपने भक्तों को कभी भूलते नहीं थे, जब भी कुछ समय अधिक हो जाता उनका निरभिमानता, स्नेह और आत्मीयता से भरा पत्र पहुँच जाता। जब भी मिलते तो परिवार के एक-एक सदस्य की कुशलता पूछते। उनकी कृपा और करुणा का कहाँ तक वर्णन किया जाय वे निरभिमानता और स्नेह की साक्षात् प्रतिमूर्ति थे। □

एक कल्पना चित्र—

पिता-पुत्र का मधुर मिलन

[दि० १४ दिसम्बर सन् १९६३ को प्रातः ब्राह्म मुहूर्त में]

विश्व पिता—पुत्र, तुम आ गये।

पुत्र—जी पिताजी! आपकी आज्ञा शिरोधार्य है।

पिता—कहिये! यह दुनियाँ तुम्हें कैसी लगी?

पुत्र—अति रमणीय, पिताजी! आपकी रची यह समस्त सृष्टि कितनी आनन्दमयी है, यह वाणी उसका वर्णन नहीं कर सकती।

पिता—पुत्र! जरा अपने कटु एवं मधुर अनुभव भी तो सुनाओ।

पुत्र—पिताजी! आपकी असीम कृपा से मुझे तो कभी दुःख का अनुभव ही नहीं हुआ।

पिता—नहीं, ऐसी बात नहीं। सत्य की परीक्षा के लिये मैंने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तुम्हें अत्यन्त तपाया। उस समय क्या तुमने दुःख का अनुभव नहीं किया ?

पुत्र—नहीं, दया के सिन्धु ! मुझे तो उसमें भी आपकी दया का वरद् हस्त ही दिखाई पड़ता था।

पिता—क्या तुम्हें जीवन में कभी निराशा के दर्शन नहीं हुये ?

पुत्र—जब आप जैसे सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी का अखण्ड विश्वास मेरे हृदय में था और—

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविशेच्छत् समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ॥

—का अनुपम पाठ वेद माता के माध्यम से आपने ही मुझे पढ़ा दिया था तो फिर निराशा कैसी ?

पिता—अच्छा, पुत्र ! यह तो बताओ क्या तुम्हें फिर दुनियाँ में जन्म लेने की अच्छा है ?

पुत्र—नहीं, पिताजी ! आपकी सहस्र धाराओं से बरसती हुई दया-वर्षा से मैंने अपने सभी कर्तव्यों को सुचारु रूपेण करने का प्रयत्न किया। मातृ ऋण और पितृ ऋण से तो मैं अनृण ही हूँ और महर्षि दयानन्द के गुरु ऋण से भी उऋण होने के लिये मैंने जो किया वह तो अन्तर्यामी प्रभु आप जानते हैं। अब तो मुझे आपकी अमृत-मयी गोद का अमृतपान करने दो जिसके लिये आपको मैं प्रतिदिन अमृत वेला में अर्न्तहृदय से पुकारता था।

पिता—मेरे लाढ़ले ! मुझे यह तो बताओ, धर्म के जिस क्षेत्र में तुमने पदार्पण किया, उसका उत्तरदायित्व तुम किसको सौंप आये हो ?

पुत्र—भक्त-वत्सल पितृदेव ! आपके भक्त स्वयं उसका उत्तरदायित्व सम्भालने में तत्पर हैं। आप उन्हें ही वह शक्ति, भक्ति, बुद्धि प्रदान करें जिससे वे उन कार्यों को पूर्ण कर सकें। मेरा विश्वास है, आपकी कृपा से वे अवश्य सफल होंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पिता—धन्य, मेरे प्रिय पुत्र तपोमूर्ति सत्यानन्द ! तुम खरे कंचन ही सिद्ध हुये । जीवन के इस संग्राम-क्षेत्र में जो भी विपदायें तुम्हारे सम्मुख आईं, उनको तुमने हँसते हुये पार किया ।

हैदराबाद के विजयी सेनानी ! तुमने सत्य धर्म की रक्षा के लिये अपने को होम दिया ! सन्तान-स्त्री का मोह तुम्हें बाँध न सका ।

राजस्थान के अविद्या ग्रस्त सूखे मरुस्थल को तुमने ज्ञान-गंगा से हरा-भरा कर दिया ! उस पर भी वही विनीत मधुर स्वभाव । धन्य ! तुम मेरी परम प्रिय सन्तान हो ।

तुमने राजाओं के नृशंस राज्य में प्रजा के दुखों को हल्का किया । अज्ञानान्धकार में पड़ी मातृशक्ति (नारी जाति) को ज्ञान-पीयूष पिलाकर सत्य मार्ग प्रदर्शित किया ।

"**मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्**" का पाठ हर गृहस्थी जन को पढ़ाकर पंच यज्ञों की प्रतिष्ठापना की । शारीरिक यातनाओं में पड़े कितने-ही मानव तन धारियों को अपने कोमल करों से मलहम लगाया । '**वसुधैव कुटुम्बकम्**' को मन वचन कर्म से अपनाकर सबको गले लगाया ।

अपनी संस्कृति को उन्नत बनाने के लिये सत्याग्रह-यज्ञ में भाग लेकर हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने का मार्ग प्रशस्त किया । सद्ज्ञान प्रसार के लिये 'सत्य प्रकाशन' की स्थापना की ।

मेरे अमृत पुत्र ! मार्ग भटके मानवों को जीवन का लक्ष्य समझाकर उसको पूरा करने का साधन चार आश्रमों को बतला कर उस पर चलने की ओर भी सबको प्रेरित किया ।

आज तुम्हारे वियोग में वे सभी मानव छटपटा रहे हैं, क्या तुम उन्हें शान्ति-सुधा न पिलाओगे ?

पुत्र—नहीं पिताजी, मैंने उन्हें आजीवन हँसने का पाठ पढ़ाया है, न कि रोने का । यही तो मानव की अज्ञानता है, प्रभो !

पिता—धन्य हो, मेरे लाल !

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पिता—तुम परोक्ष रूप से उनकी आत्मा को शान्ति बँधाओ और उसी प्रकार जीवन-लक्ष्य की ओर चलने की ओर प्रेरित करो, अभी तुम्हारे भक्त तुम्हें तृषित नेत्रों से निहार रहे हैं।

पुत्र—अच्छा पिता जी—

वायुरनिलममृत मथेदं भस्मान्तँ शरीरम् ।
ओ३म् क्रतोऽस्मर क्लिबे स्मर कृतँ स्मर ॥

[स्व० पितृदेव के चरणों में सादर समर्पित—विद्यावती]

दिनचर्या के धनी !

जातो जायते सुदिनत्वे अह्नाम् ॥ (ऋ० ३।८।५)

(जातः) शरीरधारी (अह्नाम्) दिनों को (सुदिनत्वे) सुदिन करने के लिये (जायते) उत्पन्न होता है।

वेद के इस मन्त्रांश का आशय है—हमारा प्रत्येक दिन सुदिन हो अर्थात् हमारी दिनचर्या पवित्र हो। हमारे सम्पूर्ण जीवन की पवित्रता और सफलता, सफल दिनचर्या पर ही निर्भर करती है। परम श्रद्धेय श्री स्वामी सत्यानन्दजी महाराज ने इस वेदोक्ति की सचाई को अन्तरतम से स्वीकार किया हुआ था। वे दिनचर्या के धनी थे। दिनचर्या की सफलता, अपने समय के एक-एक क्षण के सदुपयोग को ही वह अपनी सबसे बड़ी कमाई, सबसे बड़ा धन मानते थे।

३-४ वर्ष उनके साहचर्य में रहने का सौभाग्य मुझे मिला था। इस सारे समय में मुझे ऐसा एक दिन भी याद नहीं आता जब उन्होंने अपनी निश्चित दिनचर्या का व्यतिक्रम किया हो। नित्य अर्द्ध रात्रि के पश्चात् २ बजे शैया त्याग कर, शौचादि से निवृत्त हो ध्यान में बैठ जाना, ध्यान से उठकर ३ मील टहलने जाना और घण्टी बजते ही सत्सङ्ग में उपस्थित हो जाना यह सब सहज स्वभाव से वे करते थे। घोरतम शीत, वर्षा की झड़ी अथवा उत्तप्त ताप कुछ भी हो, सूर्य के समान वे अपने नियम के पाबन्द थे। उनकी जेब घड़ी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मानो उनकी चिरसंगिनी थी। वे प्रतिदिन डायरी लिखते थे और यम-नियम के चार्ट को मानस नेत्रों के सामने रखकर आत्म-निरीक्षण उनकी दैनिन्दनी का आवश्यक अंग था।

यह मेरा महान्तम सौभाग्य ही है कि वे मुझे अपने अन्तरंग मित्रों में मानते थे और सच तो यह है कि उनका सम्पर्की जन ऐसा कौन है जो उन्हें अपना सर्वाधिक अन्तरंग न मानता हो। मानो वे अजातशत्रु थे। उनके सरल सधे हुए और अनुभवगम्य उपदेश मर्म को छू लेते थे। उस अनुभूति को मैं शब्दों का रूप कैसे दूं? मिलते समय तो वे प्रेम की गंगा ही बहा देते थे। ऐसे गहक कर मिलते, मानो वर्षों का बिछुड़ा कोई अति आत्मीय स्वजन मिला हो। खुशी के मारे तालियाँ बजाने लगते। उनसे मिलने पर जो आनन्द मिलता उसे व्यक्त कर सकना लेखनी की शक्ति के बाहर है।

—मुन्नालाल, ज्वालापुर

सत्यमूर्ति स्वामी श्री सत्यानन्दजी !!

हमारे अभिन्न साथी परम सुहृद, श्री सत्यप्रियजी जिनका माता-प्रदत्त नाम श्री 'हरिहेतलाल' था, वे यथा नाम तथा गुण एक आदर्श पुरुष थे। उनकी ईश्वर के प्रति चरम आस्था जन्मसिद्ध थी। बचपन से ही उनकी वृत्ति ईश्वराराधन एवं परोपकार के कार्यों में निरन्तर लगी रही जबकि वे एक दुकानदार का कार्य, जोकि उनका पैतृक कार्य था, करते थे। मैंने उन्हें शिक्षा काल से ही देखा, जबकि वे कक्षा ६ ठी में अध्ययन कर रहे थे और मैं अभी द्वितीय कक्षा में जो उस समय सैक्शन २ के नाम से पुकारा जाता था, पढ़ रहा था। वे हमारे 'मौनीटर' रहते थे और हमारा अध्यायक वर्ग पूर्णतया उन पर विश्वास कर हमारी छोटी कक्षा वालों की देख-भाल का कार्यभार उन्हीं पर छोड़ देता था। तब से लेकर आजीवन, मैंने उनके कार्य-कलापों, गति-विधि, रहन-सहन, आचार-विचार का सूक्ष्म

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रीति से अध्ययन किया है, जिसका उल्लेख इस स्थान पर करना सर्वथा असम्भव है। वह, ईश्वर कृपा हुई तो पुनः समय पर ही किया जा सकेगा।

श्रीसत्यप्रियजी की जैसी ईश्वरके प्रति अटूट श्रद्धा एवं विश्वास था वैसा ही उनका 'सत्य' के प्रति था। दूसरे शब्दों में कहा जाय तो उनके लिए 'सत्य' ही ईश्वर था, तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। वे परम दयालु, सौम्य स्वभावी निःस्पृह और अनाथ-प्रतिपालक थे। उनके जीवन में ईश्वरीय विशिष्ट गुणों का अद्भुत् समन्वय जन्मसिद्ध ही था। वे वास्तव में 'सत्यप्रिय' थे। जब हम सब साथियों ने ऋषिवर दयानन्द के भावों से भावित आर्यसमाज में प्रवेश किया और जब न केवल हम लोगों का प्रत्युत् हमारे भाई-पुत्र स्त्री आदि के सभी नामों का परिवर्तन (संस्कार) किया गया तो आपने 'सत्यप्रियता' को ही चुनकर 'सत्य प्रिय' नाम अपनाया।

पुनः आप 'सत्यप्रिय' से 'सत्यानन्द' बने और हम लोगों ने यह प्रत्यक्ष देखा कि आप पर भयंकर आपत्ति आ पड़ने पर भी फिर चाहे वह मानसिक हो चाहे शारीरिक आप सदैव प्रसन्नचित्त, हंसमुख, सहिष्णु, परोपकार-रत वस्तुस्थिति में 'सत्यानन्द' रहे। सत्य भाव आपके प्रत्येक कार्य में प्रतिक्षण उदित होता रहा।

—स्व० विश्वप्रिय शास्त्री

दिव्य मूर्ति स्वामी सत्यानन्द जी

(लेखक -शिवदयालु वानप्रस्थी, सर्वानन्द वैदिक आश्रम, सिरसा)
[भूतपूर्व प्रधान आर्यसमाज श्रीगंगानगर]

दिव्य मूर्ति, कर्मठ आर्य संन्यासी, श्रद्धेय स्वामीजी महाराज के दर्शन मुझे प्रथम हिन्दी आन्दोलन के समय पटियाला जेल में सत्याग्रही के रूप में हुए। उसके पश्चात् आर्यवानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(हरिद्वार) में २-३ बार दर्शन हुए। अब काफी समय से वह विरजानन्द ट्रस्ट, सत्य प्रकाशन और वैदिक साधना आश्रम मथुरा के अध्यक्ष के रूप में वैदिक धर्म की महान् सेवा कर रहे थे। सत्य प्रकाशन विभाग कितनी प्रगति कर रहा है और समय आने पर यह गीता प्रेस गोरखपुर की भाँति विशाल रूप धारण करने जा रहा है। यह सब उन्हीं की कृपा और भाई 'प्रेम' जी के उद्योग और उत्साह का ही फल है। श्री 'प्रेम' जी के हृदय में जो ठेस स्वामीजी के बिछुड़ने से लगी है, उसको वह ही जानते हैं।

स्वामीजी महाराज एक सन्तोषी, गम्भीर-हृदय, कर्मठ कार्य-कर्त्ता और सच्चे आर्य संन्यासी थे।

वे सरिता का वह प्रवाह थे…

[श्री विजयसिंह 'विजय' सि० शास्त्री]

निश्चित सन् तो मुझे याद नहीं, हाँ, इतना याद है कि उन दिनों अपने अभिन्न हृदय श्री भाई 'प्रेम' जी के साथ मैं मथुरा मण्डल में प्रचार कार्य करता था। उन्हीं दिनों भुसावर महिला विद्यापीठ के उत्सव पर जब मैं गया तो सर्वप्रथम वहीं पर स्वामीजी के दर्शन करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ था और सम्भवतः उसी अवसर पर स्वामीजी ने संन्यास आश्रम में प्रवेश किया था।

स्वामीजी का जीवन उन समस्त विशेषताओं से परिपूर्ण था, जिनकी एक मानव तन धारी से अपेक्षा की जा सकती है। विद्यापीठ के कुँये का वह दृश्य आज भी मेरे नेत्रों के सामने एक ज्योति-स्तम्भ की भाँति खड़ा है, जब प्रातःकाल की कड़ाके की सर्दी में स्वामीजी अपने हाथों से कूप से पानी खींचकर आने वाले सज्जनों के हाथ पैर धुला रहे थे। सेवा भाव और निरभिमानता का इससे सुन्दर नमूना और क्या हो सकता है ? जैसे सेवा और शील ने साकार रूप धारण कर लिया हो, उनके रूप में। आज भाषणों का युग है, पर स्वामीजी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ने सदैव कथनी की अपेक्षा करनी को महत्व दिया। महिला विद्यापीठ भुसावर की स्थापना के बाद संन्यास ग्रहण कर 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' के नारे को मूर्त रूप दिया। छोटे गाँव के लोगों में श्रम का महत्व स्थापित हो, नगर के पठितजनों में उसके प्रति अनुराग बढ़े इसके लिये स्वामीजी ने स्वयं झाड़ू उठाई। मैंने जब भी पूज्य स्वामीजी का दर्शन किया, सदैव अन्यों के लिये ही सोचते पाया। स्वयं की सुख सुविधा का ध्यान कभी नहीं किया। संन्यास ग्रहण करने के पश्चात् अपने को विश्वगुरु मान कर सबसे सेवा कराने की इच्छा रखने वाले महानुभावों को पूज्य स्वामीजी के जीवन से बहुत कुछ सीखने को मिल सकता है, जिन्होंने सेवा कराने में नहीं, करने में ही सदा आनन्द का अनुभव किया। मथुरा आश्रम की स्थापना के बाद जब भी मिले "विजय, कुछ त्याग करो," ये शब्द आज भी वेद वाक्य की भाँति कानों में गूँज रहे हैं। प्रभु बल दे जिससे मैं इसे अपने जीवन में पूर्ण कर सकूँ। सत्य के लिये अडिग-अविचल निष्ठा, हँसते हुये कष्ट सहन करने की भावना, ऋषि दयानन्द और वेद प्रचार के लिये सदैव जगमगाने वाली ज्योति स्वामीजी में मैंने देखी। शरीर से कमजोर पर विचारों से बलवान, वे माया, ममता, मोह, मान, को सदैव अपने से अलग ही रखते रहे। पुत्रैषणा, वित्तैषणा, लोकैषणा के जाल में कभी न आने वाली महान् विभूति का आज जब भी स्मरण आता है तो रोमाञ्च हो आता है। आदर्श गृहस्थी, आदर्श वानप्रस्थी, और एक आदर्श सन्यासी का कहीं दर्शन करना हो तो वह थे हमारे स्वामी सत्यानन्द जी महाराज—प्रेम, दया, सहिष्णुता, सेवा, सदाचार, संयम, सौम्यता आदि समस्त सद्गुणों के आगार। स्वामीजी का जीवन हमारे लिये मननीय और अनुकरणीय है। श्रद्धेय के आदर्श जीवन के लिये जो भी कल्पना करें वे सब अधूरी हैं, अपूर्ण हैं। जो भी शब्द हम स्वामीजी के लिये प्रयुक्त करें वह उनके आदर्श जीवन को उद्घाटित करने में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हीन जान पड़ता है। श्रद्धेय स्वामीजीके जीवन की गहराइयों की थाह लेने की शक्ति शब्दों में नहीं।

वे सरिता का वह सुन्दर प्रवाह थे जिसमें समस्त सद्गुणों का शीतल जल भरा था और जो सदैव अबाध गति से अपने प्रियतम समुद्र (ओ३म्) से मिलने के लिये गतिमान रहा।

❀ ❀

सच्ची श्रद्धांजलि अर्पण करें !❀

स्वामीजी का जीवन समाज सेवा में ही बीता। जिन संस्थाओं को उन्होंने निर्माण दिया और सतत साधना द्वारा पल्लवित किया, आज उनके द्वारा कितनी ही आत्माओं को प्रेरणा मिल रही है और इस भौतिक युग में आध्यात्मिक मूल्यों का प्रचार हो रहा है। इनके द्वारा मानव-मात्र की जो सेवा हो रही है उससे उनका जीवन अमर रहेगा।

शायद १७-१८ वर्ष हो गए। तब वे स्वामीजी नहीं बने थे। मंत्रीजी थे। माताजी (पूज्या लीलावती जी) राजगढ़ (अलवर) में राजकीय कन्या स्कूल में मुख्याध्यापिका थीं। विद्यापीठ की सफलता के लिए उसी के सिद्धान्तों के अनुरूप सेवक व सेविकाओं की आवश्यकता थी। स्वामीजी से प्रेरणा पाकर माताजी ने राजकीय सेवा छोड़कर अपना जीवन विद्यापीठ की सेवा में लगाया। अभी विद्यापीठ बाल्यावस्था में ही था, मुझे माताजी से मिलने हेतु भुसावर जाने का अवसर मिला। वहीं स्वामीजी का सत्संग दो तीन बार पाने का सौभाग्य मिला। तब तक यह बाहर का भवन निर्मित नहीं हुआ था। एक कुटिया थी, कच्ची। बाहर पत्थर की पटियाएँ डालकर बैठने आदि का प्रबन्ध था। बहुत पवित्र वातावरण था। उसको देख महात्मा गांधी के आश्रम व कुटिया का चित्र साकार हो उठा।

❀ इन सभी संस्मरणों के लेखक, मात्र कुछेक को छोड़कर अधिकांश अब जीवित नहीं हैं। ये संस्मरण 'तपोभूमि' जनवरी' ६४ के स्मृति अंक से लिये गये हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

माताजी ने मथुरा आश्रम में वानप्रस्थ ग्रहण किया था। देहली में आर्य सम्मेलन पर स्वामीजी से पुनः भेट हुई। स्वामीजी ने सबसे पहिले मुझे साधुवाद व धन्यवाद भी दिया कि तुम लोगों ने माताजी को अपना जीवन समाज के लिए अर्पण करने और वानप्रस्थ ग्रहण करने में सहयोग देकर बहुत उपकार किया है। हालांकि इसमें हमारी कोई प्रशंसा अपेक्षित नहीं थी, परन्तु यह स्वामीजीकी महानता थी, जिससे जीवन को प्रेरणा मिलती है। इसके बाद स्वामीजी के दर्शन वृन्दावन गुरुकुल में सत्य प्रकाशन समिति की बैठक में किये थे। तब देखा कि स्वामीजी इस संस्था की उन्नति के लिये कितने दत्तचित्त और दृढ़ संकल्पी थे। —त्रिलोकीनाथ गुप्त, दिल्ली

स्वामीजी सत्य के पुजारी थे !

[स्व० रतनलाल जी मंहगावे वाले, भरतपुर]

यों तो इस संसार में अनन्त प्राणी अपना जीवन यापन करते हैं। परन्तु जीवन उनका ही धन्य है, जो दूसरों के लिये जीते हैं। अपने त्याग तपस्या द्वारा परोपकार में रत रह कर जनता जनार्दन की सेवा करने वाले महापुरुष जन-जन के स्मरणीय रहते हैं। स्वामी सत्यानन्दजी इसी प्रकार के महापुरुषों में थे। मुझे उनसे मिलने का सौभाग्य सर्व प्रथम आज से २४ वर्ष पूर्व आर्यसमाज भरतपुर में हुआ। उनकी त्यागमय सेवा भावना देखकर उनकी ओर मेरा आकर्षण बढ़ता गया। स्वामीजी ने अनेक धार्मिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय सत्याग्रहों में भाग लिया था और एक वीर सेनानी की भाँति दृढ़ रहकर जीवन भर अनेक संकटों से हँसते-हँसते युद्ध किया।

राजस्थान में करौली राज्य में देवी के नाम पर होने वाली पशु-हिंसा को मिटाने के लिये आपने भरसक प्रयत्न किया।

नारी शिक्षा का इस प्रदेश में उनको एक अभाव खटका। अतः आपने महिला विद्यापीठ भुसावर की संस्थापना की। सत्य तो उनका जीवन सर्वस्व ही था। एक समय की बात है कि जब महिला

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२८ वें निर्वाण पर भाव-भीनी श्रद्धाञ्जलि—

मेरे गुरुदेव—स्वामी सत्यानन्द जी !

बिलकुल सीधा-सादा व्यक्तित्व । एक सामान्य-सा शरीर पर उसमें एक असामान्य महान् आत्मा । ऐसे थे मेरे गुरुदेव—स्वामी सत्यानन्द जी !

फरवरी' ५३ में हम माण्डलिक (जिला) आर्य प्रतिनिधि सभा, मथुरा की ओर से 'प्रथम आर्य महा-सम्मेलन' मना कर चुके थे। उसके कुछ दिनों बाद ही भाई जसवन्त जी पूज्य स्वामीजी को मुझसे मिलाने लाये। पहली भेंट में ही, पता नहीं कैसा जादू था उस सुपावन व्यक्तित्व में, मैं सदैव के लिये उनका हो गया। उन दिनों मैं माण्डलिक आ० प्र० सभा का मन्त्री था। कई गाँवों में पूज्य स्वामीजी के साथ जाने और पदयात्रा करने का सुयोग मिला। स्वामीजी के प्रचार की अपनी ही एक शैली थी। प्रचार सभा के स्थान पर वे संगोष्ठी लेते थे। गुरुमन्त्र गायत्री का पाठ, 'प्राण प्रदाता संकट त्राता॰' इस गीतिका का गान, आर्य जीवन निर्माण विषयक् सरल शब्दों में प्रेरणा और तत्पश्चात् सत्सङ्गी जनों से चर्चा के माध्यम से उनके अन्तरंग जीवन और पारिवारिक जीवन में प्रवेश करते हुए उन्हें एक न्यूनतम कार्यक्रम देकर व्रती बनाना। आने वालों में से कोई धूम्रपान आदि नशीली वस्तुओं को छोड़ने का व्रत लेता, कोई प्रातः जागरण का,

---

(शेष पृष्ठ ८६ का)

विद्यापीठ भुसावर के भवन निर्माण का कार्य चल रहा था। कन्ट्रोल से कुछ सामान मिलने का प्रार्थना-पत्र लेकर वे आये थे। मेरे पास बैठे किसी व्यक्ति ने उनको सम्मति दी कि जब आप दुगुनी चीज लिखेंगे तब आधी चीज मिलेगी, संख्या बढ़ा लो। स्वामीजी ने कड़क कर कहा कि, 'मैं सत्य के विरुद्ध कुछ भी करने को तैयार नहीं हूँ। मैं झूँठ नहीं लिखूँगा।' इस कथन का मुझ पर बड़ा प्रभाव पड़ा। निस्सन्देह स्वामीजी सत्य के पुजारी थे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कोई गुरुजनों को अभिवादन करने का तो कोई गायत्री जप, स्वाध्याय-सन्ध्या एवं यज्ञ आदि का।

मैंने प्रत्यक्षतः अनुभव किया कि जो काम हजारों रुपये व्यय करके बड़े-बड़े उत्सवों से नहीं हो पाता था, वह इस सीधी-सादी आत्म-निर्माण मूलक चर्चा से हो रहा था। श्रीमहाराज जी का स्वयं डायरी रखने और दूसरों से रखवाने का क्रम देखा। प्रतिज्ञा करने वालों से श्रीस्वामी जी उनकी प्रतिज्ञा के सामने—हस्ताक्षर करा लेते थे। मुझे तो वैदिक धर्म की सेवा और वेद प्रचार की एक नई 'दशा ही मिल गई। और आगे चलकर प्रचार की यह शैली मेरे कार्य-क्रम का एक विशिष्ट अंग बन गई।

इस संगोष्ठी पद्धति में से शिविर योजना का जन्म हुआ। १७ जून से २९ जून' ५४ तक जैत (मथुरा) में प्रथम शिविर आचार्य वाचस्पति जी के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। पूज्य स्वामीजी अपने प्रिय शिष्य ब्र० ओम्दत्त जी सहित उसमें उपस्थित थे। इसी में पूज्यपाद महात्मा 'शुभैषी' जी ने पू० स्वामीजी से वानप्रस्थ दीक्षा ली थी। 'व्यक्ति २ के आर्यकरण और परिवारों के वैदिकीकरण' के दिव्यादर्श का यह शिविर मानो सूत्रपात था।

मथुरा मण्डल से 'विदेशी पादरियों को हटाने के अभियान में भी वन्दनीय महाराज अग्रगण्य रहे। विसावर (मथुरा) में मेरे साथ ही वे भी अनशन पर बैठे। और उसके पश्चात् तो निठार आश्रम की स्थापना, बयाना शिविर, हिण्डौन (साधु) शिविर आदि के क्रम में वे निकट से निकटतर होते गये। और अन्त में वह समय भी आया जब २८ दि०' ५९ को महर्षि दयानन्द दीक्षा शताब्दी के पण्डाल में श्री महाराज की अध्यक्षता में आयोजित संगोष्ठी में 'श्री विरजानन्द वैदिक साधनाश्रम' की स्थापना उनके तत्वावधान में करने का निश्चय हुआ, जिसकी रूपरेखा हम 'तपोभूमि' के दिसम्बर' ५९ के अंक में 'शंखनाद' शीर्षक से दे चुके थे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२९ जून' ६० को आश्रम का उद्‌घाटन स्व० आनन्दस्वामीजी ने किया। स्व० आनन्दभिक्षु जी महाराज ने संरक्षण दिया और वन्दनीय महाराज जी ने ज्वालापुर आश्रम के स्वर्ग सुख को छोड़कर आश्रम को अपना केन्द्र बना लिया। कुटियों का निर्माण, यज्ञशाला का निर्माण, सत्य प्रकाशन की स्थापना यह सब उनके कर्मठ और सुपावन व्यक्तित्व से ही सम्भव हो सका। सच में मेरे साथ तो वे एक-रस हो गये थे। उनके महान् व्यक्तित्व के अनेक प्रेरक पहलू और प्रसंग हैं, जिनका यहाँ देना सम्भव नहीं है। हां, कैसे मैंने उन्हें अपने गुरुदेव के रूप में वरण किया, इस सम्बन्ध में संस्मरण प्रस्तुत है—

तीन सन्तानों के पश्चात् मैंने संयमित जीवन का विचार बना लिया था, पर असावधानी हुई। चौथा बच्चा जब गर्भ में आ गया और श्रीस्वामीजी को इसका ज्ञान हुआ तो एक दिन मार्ग चलते सहज मुस्कान के साथ वे बोले—"प्रेमजी ! आपको पता है, आपका जीवन एक विशेष उद्देश्य, एक महान कार्य के लिए है। आपको बहुत कार्य करना है। ऊँचाई चढ़ने वाले को कम से कम बोझा साथ रखना उचित है. आपके साथ कम से कम दायित्व रहना चाहिए। अब आपको संयम का विशेष ध्यान रखना है।"

मैंने निवेदन किया—"स्वामीजी ! मैं स्वयं भी पहले से सोचता था। पर आज तो आपने दीक्षित ही कर दिया। अब मैं ईश कृपा से इस विषय में सजग रहूँगा। आपका आशीर्वाद मेरा सम्बल रहेगा। और उस क्षण से ही मेरे अन्तर्मन ने उन्हें अपने सद्‌गुरु के रूप में वरण कर लिया।* फिर तो उन्होंने मेरे आन्तरिक जीवनके एक एक प्रकोष्ठ को देखा, परखा और अन्त में एक दिन उनकी भावनायें

---

*पू० स्वामी सत्यानन्दजी से व्रत-दीक्षा ली, पू० महात्मा दयानन्द जी (तपोवन) से वानप्रस्थ-दीक्षा और आचार्य प्रवर महर्षि दयानन्द से जीवन-दीक्षा। विश्वास है इन सभी पूज्य गुरुओं की कृपा से उस परमगुरु के पावन वेद-पथ पर ये चरण बढ़ते रहेंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुखरित हो उठीं जब उन्होंने मुझे एकान्त में कहा—"तुम मेरे चौथे पुत्र हो। मेरे तीन पुत्र शरीरज हैं, तुम मेरे आत्मपुत्र हो।" मेरे नेत्र हर्षाश्रुओं से जैसे छलछला उठे थे। और तब इतना ही कह सका था—'आपका निश्छल प्यार और ईश कृपा मुझे पात्रता प्रदान करे।'

× × ×

२८ वर्ष हो रहे हैं उस स्नेहिल छाया से वंचित हुए, न जाने कितने अवसरों पर इस प्रेरक वाणी ने मुझे नूतन सम्बल और नवोत्साह दिया है, कर्त्तव्य पथ पर आगे बढ़ने के लिए। मुझे इतना ही सन्तोष है कि गुरुदेव की आशाओं और अपेक्षाओं की पूर्ति की दिशा में मैंने कुछ भी उठा नहीं रखा है और कि अनेक २ विघ्न-बाधाओं, विरोधों और दैवी आपत्तियों के बीच भी लक्ष्य की ओर चरण बढ़ते रहे हैं।

अपने जीवन के अन्तिम चरण में पूज्य गुरुदेव ने मथुरा भरतपुर, बयाना, हिण्डौन, भुसावर, बल्लभगढ़, निठार आदि के वैदिक परिवारों को एक सूत्र में ग्रथित किया था।

प्रभु कृपा से आज उस परिवार के स्नेह सूत्र दृढ़ से दृढ़तर हो रहे हैं। उसी का विकसित रूप है—आज का हमारा वृहद् "सार्वभौम वैदिक परिवार'। कभी २ विचारों का टकराव भी हो जाता है, हम परिजनों में जो कि अस्वाभाविक नहीं है। पर एक केन्द्र है—हम सबके ज्योतिष्केन्द्र पूज्य स्वामी सत्यानन्द जी—जिससे पहिये के अरों की भांति हम सभी सलग्न हैं, संलग्न रहेंगे। 'व्यक्ति २ के आर्यकरण और परिवारों के वैदिकीकरण' का जो सूत्र गुरुदेव ने दिया आज वह 'आर्यसमाजोदय' का सूत्र बन रहा है। देश विदेश में गुरुदेव का यह सूत्र आर्यसमाज का 'उद्धार-मन्त्र' बन कर भारत और बिश्व के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करेगा, इस आशा और विश्वास के साथ अपने सार्वभौम वैदिक परिवार की ओर से गुरुदेव के २८ वें निर्वाण पर्व पर मैं भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा हूँ।

—'प्रेमभिक्षुः'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

॥ ओ३म् ॥

स्वामी सत्यानन्द जन्म शताब्दी समारोह

दि० ७ से ६ फरवरी (माघ शु० ३ से ५ बसन्त पञ्चमी)

स्थान—वेद मन्दिर, वृन्दावन मार्ग, मथुरा

स्वामी सत्यानन्द जन्म शताब्दी पर—

आर्यसमाजोदय चिन्तन संगोष्ठी क्यों ?

'आर्यसमाज' एक शाश्वत पुण्य प्रवाह है। बीच-बीच में इसमें अनेक प्रकारके अवरोध आते रहे और समय-समय पर कोई न कोई देव पुरुष उन्हें हटाते रहे। वर्त्तमान में महर्षि दयानन्द ने इस सुदिव्य प्रवाह में सदियों से जमा हो रही विकृतियों की काई को दूर कर 'आर्यसमाज' को उसका वर्त्तमान रूप दिया। आरम्भ में इसकी तेजस्विता से वेदोद्धार, धर्मोद्धार, देश की स्वाधीनता, नारी-गौरव-रक्षा या नारी जागरण, दलितोद्धार, शिक्षा-संस्कार, समाज सुधार सत्साहित्य निर्माण, कर्मकाण्ड परिष्कार, संस्कार-परिष्कार, राष्ट्रीय एकता और समता के स्वर सर्वत्र गुंजायमान हो उठे। पर लगता है समय के साथ आर्यसमाज का वह तेज कम हो रहा है।

आयें, हम देव दयानन्द की दीक्षा-भूमि मथुरा में, स्वामी सत्यानन्द जी जैसे सन्त की जन्म शताब्दी मनाते हुए आग के इस दीप्तिमान शोले पर समय प्रभाव से आई हुई राख की इस झीनी परत को झकझोरने का संकल्प लें, जिससे जीवन के हर क्षेत्र में पुनः 'आर्यसमाज' का बोलबाला होकर भारत राष्ट्र और विश्व के हर नागरिक की सुख-शान्ति का पथ प्रशस्त हो सके।

राष्ट्रीय एकता सम्मेलन ?

'राष्ट्रीय एकता' का स्वर तो आज सभी अलापते हैं, पर हम उतने ही खण्डित-विखण्डित और एकताके राजमार्ग से दूर होते जारहे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हैं, क्यों ? लगता है, कहीं मूल में ही भूल हो रही है। आयें, हम मिलकर विचारें – राष्ट्रीय एकता का स्वरूप क्या है, उसका आधार क्या है, और उसके साधनोपाय क्या हैं ? स्वामी सत्यानन्द जन्म शताब्दी, इस महत्वपूर्ण प्रश्न के समाधान की दिशा में एक नई दृष्टि दे सके तो यह एक बड़ी उपलब्धि होगी।

संस्कृति रक्षा सम्मेलन ?

तीन शब्द हैं—संस्कृति, प्रकृति, विकृति। स्वयं कष्ट उठाकर दूसरों को सुख पहुँचाना 'संस्कृति' है। दूसरों को कष्ट न देकर स्वयं सुख पाने का प्रयास 'प्रकृति' है और दूसरों को कष्ट देकर सुख पाना 'विकृति' है। संस्कृति हमें 'देव' बनाती है, प्रकृति 'मनुष्य' और विकृति 'असुर'। सृष्टि के आदि से हम सदैव संस्कृति के पुजारी रहे हैं पर लगता है आज विकृति ने ही संस्कृति का रूप ले लिया है। हमारे सांस्कृतिक आदर्श एक-एक करके ध्वस्त हो रहे हैं। आसुरी सभ्यता दैवी संस्कृति की छाती पर आसन जमाकर अट्टहास कर रही है। दैवी संस्कृति के उपासको ! आओ, वैदिक संस्कृति के स्वरूप को पहिचानो, उसकी गरिमा को समझो और पाश्चात्य आसुरी सभ्यता की नुकीली दाढ़ों से उसकी रक्षा का संकल्प लो।

आइये, आर्यसमाजोदय द्वारा राष्ट्रीय एकता और संस्कृति-रक्षा के सत्संकल्प धारण के लिये आप स्वामी सत्यानन्द जन्म शताब्दी के विशद समारोह में सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

राष्ट्रीय कवि सम्मेलन एवं **महिला जागरण सम्मेलन** भी बड़े उपादेय कार्यक्रम रहेंगे। इस अवसर पर आयोजित **'यजुर्वेद पारायण यज्ञ'** एवं प्रतिदिन प्रातःकाल **साधना एवं योगासन प्रशिक्षण** के दैवी कार्यक्रमों से भी लाभान्वित हो जीवन को धन्य बनाइये। इस अवसर पर—

विराट शोभा यात्रा में भाग लेने के लिये अपने-अपने आर्य-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समाजों और संस्थाओं के सुन्दर बैनर, 'ओ३म् ध्वज' तथा कुछ आदर्श वाक्यों के बैनर भी साथ लायें।

समारोह की तैयारियाँ आरम्भ हो गई हैं!

१—आरम्भिक विज्ञप्ति छप गई है, रसीद बुकें छप गई हैं।

२—विस्तृत कार्यक्रम शीघ्र ही छपेगा तदर्थ शीर्ष संन्यासियों विद्वानों और नेताओं से पत्र-व्यवहार चल रहा है। पोस्टर भी छपवाने का यत्न है।

३—आवास-भोजन की उत्तम व्यवस्था का यत्न है, आवश्यकतानुसार कुछ टैण्ट भी लगेंगे, पाण्डाल-मञ्च के लिये प्रांगण तथा यज्ञवेदी के लिये स्थान चयन कर लिया गया है।

४—पुस्तकों की दुकानों तथा जीप-कार, स्कूटर-साइकिल आदि के खड़े होने का स्थान भी निश्चित कर लिया गया है अन्य आवश्यक तैयारियाँ सोत्साह की जा रही हैं।

आपको क्या करना है?

१—अपने-अपने क्षेत्रों में उत्सवों और पद यात्राओं द्वारा कार्यालय से विज्ञप्तियाँ मँगाकर या प्राप्त करके समारोह में भाग लेने की प्रेरणा करें। दीवालों पर समारोह की तिथियाँ माघ शु० ३ से ५ (७ से ९ फरवरी लिखकर वातावरण बनायें।

२—आप सपरिवार आने का कार्यक्रम बनायें, पर अधिक वृद्ध और अधिक छोटे बच्चे नहीं लायें। शीत ऋतु में आवश्यक वस्त्र और बिस्तर अवश्य लायें। बिस्तरों की यहाँ कोई व्यवस्था नहीं मिलेगी। अपने आने की संख्या सहित पूर्व सूचना दें।

३—अपने साथ साधना के लिये मोटा आसन, योगासनों के लिये दरी या कम्बल, डायरी (कापी) पैंसिल, नित्यकर्म विधि या संस्कार विधि अवश्य लायें। भोजन-पात्र भी साथ लायें तो उत्तम है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

४—समारोह की सफलता के लिये तथा स्वामी सत्यानन्द स्मारक निधि के लिये आपको अधिकाधिक आर्थिक सहयोग करना और कराना है। तदर्थ कार्यालय से रसीद बुकें प्राप्त करें। रसीद बुकों की सुरक्षा आवश्यक है।

५—मनीआर्डर या ड्राफ्ट-चैक श्री विरजानन्द ट्रस्ट के नाम वेद मन्दिर, वृन्दावन मार्ग, मथुरा के पते पर भेजें।

कृपया ध्यान रखें—

१—समारोह में आते समय नये बस अड्डा या मथुरा जंकशन से नगर के बाहर कृष्ण जन्म भूमि के मार्ग से होकर **भवानी चौराहे** पर आयें। चौराहे से दाँई ओर की सड़क (कच्ची सड़क) पर मात्र एक फलाँग पर **वेद मन्दिर** का मुख्य फाटक है, उसमें आना है।

२—पुराने बस अड्डे या छावनी स्टेशन से यदि नगर में अन्दर से चौक बाजार होकर आयें तो **चमेलीदेवी गर्ल्स कालेज** के सामने **डी० ए० वी० हा० स्कूल** (समारोह-स्थल) के साथ ही वेद मन्दिर है, जहाँ आपको आना है।

३—**सावधानी रखें कि**—वृन्दावन मार्ग पर ही वेद मन्दिरसे थोड़ा आगे 'गायत्री तपोभूमि' (पं० श्रीराम शर्मा वाला) स्थान है। हमारी पत्रिका का नाम 'तपोभूमि' है। बाहर से आने वाले जो भाई-बहिन रिक्शा वालों से 'तपोभूमि' जाना है, ऐसा कहते हैं, वे उसे 'गायत्री तपोभूमि' पहुँचा देते हैं। उन्हें फिर वापिस आना पड़ता है। इस कष्ट से बचने के लिये आप 'तपोभूमि' जाना है, ऐसा नहीं कहें। ऊपर बताये प्रकार से आयें।

सस्नेह निमन्त्रण !

आइये, योगेश्वर श्री कृष्ण की जन्मस्थली एवं महर्षि देव दयानन्द की दीक्षा-स्थली यह मथुरा नगरी एक बार फिर आपको बुला रही है। नव युग निर्माण के नये संकल्पों को लेकर आइये, आपका सपरिवार स्वागत है। —आचार्य स्वदेश: (संयोजक)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

❀ ओ३म् ❀

स्वामी सत्यानन्द जी का अमर स्मारक—

सत्य प्रकाशन, वेद मन्दिर मथुरा.

स० प्र० द्वारा प्रकाशित अनमोल प्रकाशन

शुद्ध साहित्य सीरीज :

१-२. शुद्ध रामायण भाग १, २ (वाल्मीकि के आधार पर) ४०)
३. शुद्ध महाभारत भाग १ (भाग २ छप रहा है) २५)
४. शुद्ध तुलसी रामायण मानस पीयूष २०)
५. शुद्ध कृष्णायन १२)५०
६. शुद्ध हनुमच्चरित ८)
७. शुद्ध सत्य नारायण कथा ३)
८. शुद्ध इतिहास भाग १ २४)
९. शुद्ध मनुस्मृति❀ ४०)
१०. शुद्ध गीता❀ १५)

पारिवारिक साहित्य :

११. वैदिक स्वर्ग की झाँकियाँ ८)
१२. सखी की सीख❀ ५)
१३. सन्तति निर्माण कला २)५०
१४. महिला गीतांजलि २)
१५. गृहस्थ जीवन रहस्य ३)
१६-१७. नारी सर्वस्व १, २ ३६)
१८. शान्ता❀ ६)
१९. पारिवारिक कहानियाँ ४)५०

कर्मकाण्ड सम्बन्धी साहित्य :

२०. नित्य कर्म विधि प्रचारार्थ ७)
२१. पर्व चन्द्रिका भाग १+ १५)
२२. सुमंगली ५)
२३. शान्ति कथा ७)५०

सैद्धान्तिक साहित्य :

२४. भा० संस्कृति के तीन प्रतीक ३)
२५. दयानन्द : विवेकानन्द २)५०
२६. यज्ञमय जीवन ६)
२७. ईश्वर दर्शन ४)५०
२८. गायत्री गौरव १)२५
२९. दादी पोती की बातें २)
३०. विषपान-अमृतदान १)
३१. दादा पोते की बातें ६)

❀ यह पुस्तकें अप्राप्य है, शीघ्र छपेंगी।

+संस्कार चन्द्रिका [भाग १] प्रेस में है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

३२. चार मित्रों की बातें २)५०
३३. दो मित्रों की बातें
पं० सिद्धगोपालजी ६)००
३४. दो बहिनों की बातें ६)००
३५. उपाध्याय लेखावली २)
[पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय]
३६. वैदिक उपासना विज्ञान २)५०
३७. उपासना रहस्य ५)
[डा० सत्यदेव आर्य]
३८. भारत और मूर्ति पूजा ४)५०
३९. आर्यसमाज व श्रीराम १)२५
४०. वैदिक ईश्वरवाद व विज्ञान
[पं० धर्मदेव जी] १)५०
४१. आर्यों का आदि देश २)
[स्वामी विद्यानन्द सरस्वती]
४२. मानव धर्म विवेक ६)
[पं० सुरेशचन्द्र वेदालंकार]
४३. श्रीराम शर्मा : एक चिन्तन २)
४४. ओंकार उपासना २)
४५. बोध कथायें ४)
४६. क्या भूत होते हैं ? 'सुमन' २)
४७. सन्ध्या-रहस्य ४)
[पं० चमूपतिजी एम० ए०]
४८. भूत-प्रेत अन्ध विश्वास २)
४९. पुराणों के कृष्ण १)५०
५०. महाभारत के कृष्ण २)
५१. श्रद्धानन्द ग्रन्थ संग्रह १५)
५२. कल्याण मार्गका पथिक ४)५०
५३-५४. धर्मोपदेश [१, २] ७)
५५-५७. मुक्ति सोपान ४)५०
५८ भारत माँ की बेड़ियाँ १)
५९ नवग्रह समीक्षा २)
६०. शंकराचार्य और मूर्तिपूजा १)

ऋषि जीवनसे सम्बन्धित

६१ दयानन्द स्मृति ग्रन्थ १२)
६२. ऋषि के पुण्य संस्मरण ४)५०
६३. दयानन्द वचनामृत ३)
६४ अमर बलिदान २)
६५. दयानन्दायन [१] १)५०

बाल साहित्य

—लेखक, सम्पादक वेद प्रकाश 'सुमन'

६६. बाल सत्यार्थ प्रकाश ४)५०
६७. बाल धर्मशास्त्र ४)५०
६८. बाल मनुस्मृति २)
६९. बाल गीतांजलि १)
७०. छत्रपति शिवाजी ३)
७१. मोल के पत्थर ३)
७२ सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ १)
७३. प्रेरक प्रसंग १)
७४. इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ २)
७५. सफल व्यक्तित्व १)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रचारोपयोगी कतिपय महत्वपूर्ण ट्रैक्ट

७६—मानव तू मानव बन १)
[महात्मा आनन्द स्वामीजी]
७७—मन्दिर प्रवेश १)५०
[यम-नियम विवेचन]
७८—मृतक श्राद्ध समीक्षा)३०
७९—धूम्रपान या सर्वनाश)५०
८०—यज्ञ और यज्ञोपवीत)३०
८१—नवीन वेदान्त खण्डन)३०
८२—श्रीकृष्ण सन्देश)६०
८३—ऋषि दयानन्दः मूर्तिपूजा १)
८४—उपासना के लाभ)८०
८५—ब्रह्मचर्य विवेक)८०
८६—नमस्ते ही क्यों ? १)
८७—चूहे की कहानी)६०
८८—ब्रह्मकुमारी दर्पण)७०
८९—मानव निर्माण:आर्यसमाज१)
९०—मुक्तायन:कठोपनिषद् १)२५
९१—हम आर्य हैं १)
९२—ओंकार महिमा १)
९३—शिवलिंग पूजा····)५०
९४ सत्यार्थ मणिमाला १)५०
९५—शंकराचार्य व मूर्तिपूजा १)
९६—भगत की दुर्गत)५०
९७—वर्ण व्यवस्था विवेचन)५०
९८—ऋषि की मान्यतायें १)५०
९९—
१००—
१०१—

सत्य पकाशन द्वारा प्रसारित साहित्य

१—सत्यार्थ प्रकाश १२), १५)
२—सत्यार्थ प्रकाश स्थूलाक्षर४०)
३—ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका२०)
४—संस्कार विधिः ८)
५—श्रीमद्दयानन्द प्रकाश ३५)
६—सत्य धर्म प्रकाश ७)५०
७—घर का वैद्य ४)५०
८—चाणक्य नीति ६)
९—दृष्टान्त सागर ५)
१०—सहेलियों की वार्त्ता ६)

'सुमन' जी का अन्य बाल साहित्य

११—बालक जो महान् बने ३)
१२—शिक्षाप्रद कहानियाँ ३)
१३—हितोपदेशकी कहानियाँ२)५०
१४—कहानियाँ जो अमर हैं ३)
१५—अमर भारत ३)
१६—वेद माँ की लोरियाँ ३)
१८—आदर्श देवियाँ २)
१९-२३-नैतिक शिक्षा माला १६)
[भाग १ से ५ तक]

★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक
कल्याण की साधिका

तपोभूमि

(वैदिक परिवारों का
लोकप्रिय मासिक)

शरीर, मन-बुद्धि, आत्मा की उन्नति करने वाली, महिलाओं और बालोपयोगी सामग्री से सुसज्जित, कविता-कहानी, एकांकी लघु कथा और विवेचनात्मक लेखों से युक्त—

इस सात्विक प्रकाश को अपने परिवारों में प्रवेश करायें।

वार्षिक मूल्य २०) मात्र।

४०० पृष्ठों के वृहद् विशेषांक सहित होता शुल्क ३०) रु० मात्र।

द्रष्टव्य—आजीवन होता शुल्क ३००) रु०। होता सदस्य को जो ३०) रु० वार्षिक या ३००) रु० आजीवन शुल्क—एक बार में देने पर बन सकते हैं, विशेषांक सहित तपोभूमि के अतिरिक्त सत्य प्रकाशन के प्रकाशनों पर २५ प्रतिशत कमीशन मिलेगा तथा वे प्रकाशन समिति के सदस्य माने जायेंगे। तपोभूमि के वृहद् विशेषांक—'शुद्ध रामायण' 'शुद्ध महाभारत' 'शुद्ध मनुस्मृति' 'शुद्ध कृष्णायन' 'शुद्ध गीता' शुद्ध हनुमच्चरित, शुद्ध सत्यनारायण कथा' शुद्ध तुलसी रामा० 'मानस-पीयूष' 'भारतवर्ष का शुद्ध इतिहास' संस्कार चन्द्रिका (१-२) 'पर्व चन्द्रिका' (१-२), 'नारी सर्वस्व' (१-२) आदि की भूरि-भूरि प्रशंसा हुई है। आप भी 'तपोभूमि' के सदस्य बनें। शुद्ध महाभारत भाग-२ [महाभारत सीरियल समीक्षा सहित] छप रहा है, जो शीघ्र ही प्राप्त होगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सत्य प्रकाशन : एक सम्मति

मुझे यह पत्र लिखते हुए अपार प्रसन्नता हो रही है कि आपने वैदिक साहित्य के प्रचारार्थ यह प्रकाशन संचालित किया है। आपका 'शुद्ध हनुमच्चरित' पढ़कर तबियत मस्त हो गई। वास्तव में बिगड़े हुए सामाजिक परिवेश में वैदिक साहित्य, संजीवनी बूटी ही सिद्ध होगा। यही साहित्य भारत की सामाजिक, आर्थिक, वैज्ञानिक राजनैतिक व बहुमुखी उन्नति का वास्तव में दर्शन कराता है।

—सुरेशकुमार आर्य, झांसी

हमारे वे, जो अब नहीं रहे !

हा ! समाज सेवा के आदर्श बा० रमेशचन्द्र जी अग्रवाल !!

महर्षि दयानन्द दीक्षा शताब्दी के स्वागत मन्त्री, आर्यसमाज तिलकद्वार के प्राण, गुरुधाम की व्यवस्था एवं निर्माण में अग्रणी आर्य-केन्द्रिय सभा, मथुरा के प्रधान श्री अग्रवाल जी मथुरा जनपद की एक अन्यतम विभूति थे। अग्रवाल शिक्षा मण्डल की विविध शैक्षणिक प्रवृत्तियों, वृज चिकित्सा संस्थान तथा अन्य अनेक सामाजिक-साहित्यिक एवं सेवात्मक संस्थानों में आपका महत्वपूर्ण योगदान था, घागला कॉलेज हाथरस के वर्षों प्रबन्धक रहे। प्रसिद्ध समाजसेवी अपने पूज्य पिता श्री बा० लक्ष्मणप्रसाद जी की यश-पूंजी को आपने [और] भी आगे बढ़ाया। अब ८ नवम्बर ९१ में आपकी चिर विदाई से [जो] रिक्तता आई है उसे प्रिय अशोक जी (पुत्र) एवं श्री महेशजी, [...]ग जी, हरिश्चन्द्रजी (भ्रातृगण) पूरा करेंगे।

आर्यरत्न स्व० गणपतराय जी बम्बई

श्री गणपतराय आर्य, महर्षि द्वारा स्थापित प्रथम आर्यसमाज [का]ड़वाड़ी के प्रधान के साथ ही व्यक्तिशः ऋषि दयानन्द और [आर्य]समाज के अनन्य भक्त थे। 'तपोभूमि' एवं 'सत्य प्रकाशन' के [सा]हित्य के विशेष प्रेमी एवं प्रचारक थे। प्रतिवर्ष दीपावली तथा अन्य अवसरों पर बड़ी ही सुन्दर आकर्षक और प्रेरक विज्ञप्तियाँ प्रकाशित कराते थे। श्री प्रेमप्रकाशजी, विनोदजी तथा अन्य परिजन इस दिव्यात्मा की भव्य भावनाओं के अनुरूप परिवार में वैदिक चिन्तन-का पुण्य प्रवाह निरन्तर प्रवहमान रखेंगे। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वामी सत्यानन्द जन्म शती और तपोभूमि-परिवार

आप हमारे अपने हैं। आपके सहयोग के बल पर ही हम इतने बड़े-बड़े कार्य हाथ में ले लेते हैं। आप इस शिविरात्मक समारोह में आकर प्रसन्न होंगे। रचनात्मक कार्य विधि से परिचय करेंगे। अवश्य ही सपरिवार आयें, आत्मिक लाभ भी लें। अपना आर्थिक सहयोग भी अधिकाधिक करें। आपकी सूचना पर रसीद बुक भेज दगे।

विशेष स्थिति में जो नहीं आ सकें वे भी समारोह और स्मारक निधि के लिये अपनी आहुति इस महायज्ञ में द, आर्य समाज के इतिहास में एक नया युग लाने के प्रयासों में सहयोग करें। हमें बड़ा सम्बल मिलेगा। आशाविश्वास के साथ, आपका ही—प्रेमभिक्षु आचार्य

स्वामी सत्यानन्द जन्म शताब्दी अंक—

जनवरी' ९२ के इस अंक में, '**आर्य समाजो**
चिन्तन' 'प्रश्न राष्ट्रिय एकता का ?' तथा 'प्रश्न संस
यह तीन विशिष्ट सामाजिक लेख आचार्य श्री प्रेम
लिखित रहेंगे। इन्हीं विषयों से सम्बन्धित अन्य पठन
और होगा भविष्य के लिये एक स्पष्ट मार्ग दर्शन
इस शुभ्र आयोजन में भाग लेकर हम व्यक्ति, परिवार
और विश्व-प्रत्येक स्तर पर कुछ करने की साध लेकर

शुद्ध महाभारत अंक (२) फरवरी-मार्च के अंक के रूप में प्राप्त होगा। प्रथम भाग की भाँति ही यह चिर प्रतीक्षित विशेषांक अति उपयोगी होगा। 'महा- ...सीरियल की समीक्षा भी इसमें ... इसे पाने के लिये सन् ९१ तक का ...क सन् ९२ के शुल्क सहित अवि- ...जें—व्यवस्थापक

...प्रसाद 'प्रेम' स्वामी एवं मुद्रक - वैदिक प्रेस ...त्य प्रकाशन मथुरा के लिए प्रकाशित।

१५७३३ श्री राजकुमार अग्रवाल
E-46 न्यू कृष्ण नगर, दिल्ली-56

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi